अंक-78
दिसंबर-2015

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

सहयोग-₹40/-

'लोक' आ लोक-संस्कृति पर विशेष

एह अंक में,

भाषा आ शब्द–संसार पर (स्व0) आचार्य विश्वनाथ सिंह, डा0 जयकान्त सिंह 'जय' आ मिथिलेश कुमार सिंह। 'लोक' के आधुनिकता प, डा0 प्रमोद कुमार तिवारी। 'सामयिकी' में कृष्ण कुमार, भगवती प्रसाद द्विवेदी, अशोक कुमार तिवारी। डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव, कन्हैया सिंह 'सदय', प्रेमशीला शुक्ल, शारदा पाण्डेय, राजगुप्त आदि के कहानी। डा0 अल्पना मिश्र, डा0 बलभद्र, जौहर शफियाबादी, आसिफ रोहतासवी, शशि प्रेमदेव, हीरालाल हीरा आदि के कविता। अनुशीलन आ 'मूल्यांकन' में अनिरूद्ध त्रिपाठी अशेष, डा0 रामदेव शुक्ल का साथ डा0 अमरनाथ के नुक्कड नाटक आ अन्य कुल्हि स्तम्भ।

''पाती -आजीवन सदस्य/संरक्षक''

तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), डा० शत्रुध्न पाण्डेय (तीखमपुर, बलिया), जे.जे. राजपूत (भड़ूच, गुजरात), राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (बलिया), डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), देवेन्द्र यादव (सुखपुरा, बलिया) विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ), श्री कन्हैया पाण्डेय (बलिया), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), सरदार बलजीत सिंह (सी० ए०), बलिया, जयन्त कुमार सिंह (खरौनी कोठी) बलिया, डा० (श्रीमती) प्रेमशीला शुक्ल (देवरिया), डा० जयकान्त सिंह 'जय' (मुजफ्फरपुर) एवं डा० कमलेश राय (मऊ)।

भोजपुरी-साहित्य के
पठनीय सृजन/प्रकाशन

कुछ आग, कुछ राग

(कविता-संकलन)
अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-350/- पेपर बैक-200/-

भोजपुरी के नया
पठनीय उपन्यास

बनचरी

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-300/- पेपर बैक-220/-

मोती बी०ए०

(जीवन-संघर्ष आ कविता-संसार)
अशोक द्विवेदी

₹ पेपर बैक-50/-

मुखौटा

(भोजपुरी नाटक)
कन्हैया पाण्डेय

पाती प्रकाशन, टेगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया

'पाती' कार्यालय- डा0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277 001 या एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-110019 पर किताब उपलब्ध बा!
Mobile: +91-8373955162, 9919426249, Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com

Home About पत्रिका आ किताब पुरनका अँजोरिया भोजपुरी लिंक सभकर राय

भोजपुरिका (www.bhojpurika.com)

मनोरंजन फिल्म सरोकार देश आ समाज खबर साहित्य भाषा स्तम्भ ब्लॉग

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

अंक: 78 | www.bhojpuripaati.com | (तिमाही) दिसंबर 2015

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

उप-संपादक
विष्णुदेव तिवारी

सह-संपादक
हीरा लाल 'हीरा', सान्त्वना,
सुशील कुमार तिवारी

कंपोजिग/ग्राफिक्स
शैलेश कुमार, अरूण निखंजन

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह

आवरण चित्र
(ललित कला अकादमी के सौजन्य से)

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

संपादन-कार्यालय:-
टेगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया–277001 एवं
एफ–1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली–19
मो0– 08004375093, 91–9919426249, 91–8373955162
e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com

एक अंक पर सहयोग-40/-
सालाना सहयोग-200/-
(डाक व्यय सहित)

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में....

हमार पन्ना - • **लोकजीवन के 'बढ़नी' आ 'बढ़ावन'**/3–4

भाषा-विचार - • **भोजपुरी वर्तनी के आधार**/(स्व0) आचार्य विश्वनाथ सिंह/5–7

• **मातृभाषा के महत्व**/डा0 जयकान्त सिंह/8–10

पुनरावलोकन - • **लोक के आधुनिकता**/डा0 प्रमोद कुमार तिवारी/12–14

ललित-व्यंग्य - • **भोजपुरी साहित्य में मित्र मंडली**/बरमेश्वर सिंह/17–19

सामयिकी - • **आवारा आतंक**/कृष्ण कुमार/20–23

हस्तक्षेप - • **अश्लील गायकी आ भोजपुरी अस्मिता**/भगवती प्रसाद द्विवेदी/16

शब्द-संसार - **भुलाइल शब्द, गायब होत भावार्थ**/मिथिलेश कुमार सिंह/41

कविता/गीत/गजल- • **अल्पना मिश्र**/11 • **बलभद्र**/15 • **रामयश अविकल**/10

• **जौहर शफियाबादी**/19 • **शशि प्रेमदेव**/23

• **हीरालाल 'हीरा'**/24 • **संजय कुमार 'सागर'**/39

• **आसिफ रोहतासवी**/40 • **रामरक्षा मिश्र विमल**/34

कहानी • **मुवावजा**/डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव/25–28

• **दलदल**/कन्हैया सिंह 'सदय'/35–38 • **अनगराहित**/शारदा पांडेय/42–47

• **बाइचानस**/विजयशंकर पांडेय/39 • **तपेसर**/प्रेमशीला शुक्ल/48–49

लघुकथा - • **कन्हैया पाण्डेय**/24, 28 • **राजगुप्त**/38

समाज - • **अपराध आ भ्रष्टाचार**/अशोक कुमार तिवारी/33–34

नुक्कड़ नाटक - • **जनतंत्र**/डा0 अमरनाथ चतुर्वेदी/50–52

अनुशीलन- • **काव्य के दार्शनिक अवधारणा**/अनिरूद्ध त्रिपाठी अशेष/53–56

मूल्यांकन - • **सहज साँच अनुभूति करावत धरती–राग**/डा0 रामदेव शुक्ल/57–60

गतिविधि/साहित्यिक-समाचार- • डा0 सागर (मुंबई)/29 • पंकज कुमार (भोपाल)/30–32

कुछ हट हटा के - • प्रगत द्विवेदी/कवर पेज/3

लोकजीवन के ''बढ़नी'' आ ''बढ़ावन''

'लोक' के बतिये निराली बा, आदर–निरादर, उपेक्षा–तिरस्कार सब के व्यक्त करे क 'टोन' आ तरीका अलगा बा हम काल्हु अपना एगो मित्र किहाँ गइल रहलीं, उहाँ दुइये दिन पहिले उनकर माई उनका गाँव आरा (बिहार) से आइल रहुवी। पलग्गी आ हाल चाल का बाद अनासो हमरा मुँह से निकल गउवे कि बिहार में चुनाव बा, उहाँ के का हाल बा? बस ऊ चटाक से बोलुवी, ''अरे बढनी बहारऽ ए चुनाव के। कूल्ह गोडा एक्के थइली क चट्टा बट्टा बाड़े सऽ! एकदम रंगल सियार।''

'एगो कहऽता कि इहवाँ सड़क बनवाइब तले दोसरका आके बोलत बा कि 'झूठ बोलत बा ऊ।' अरे बबुआ पूछऽ जनि, किसिम–किसिम के बेंग बटुराइल बाडे सऽ, दिन–रात बकर–बकर क के पागल कर देले बाड़न सऽ।'

घर आवते मन उनका ''बढनी बहरला'' पर अँटकल रहे। सोचे लगुवीं बहुत पहिले एगो लोकप्रिय रेडियो नाटक में लोहा सिंह क मेहरारू बात–बात में दिकिया के कहसु ''मार बढनी रे।'' त उनका टोन में कबो उपहास कबो उपेक्षा त कबो तिरस्कार लउके। ई 'बढनी' ह का? झारे–बहारे वाला झाड़ुवे नु हऽ। ना दरसल कूडा कचरा, अहँकार–इरिखा, खराब नजर, रोग–बलाय आ अन्हार पोसेवालन के बहारे–बहरियावे वाला काम 'बढनिये' करेला। बुझला एही से धनतेरस का दिने सब समान किनला का बाद बढ़नियो (झाडुओ) किनाला। जम द्वितीया का अन्हार रात में जम दीया दुआरी का बहरी बरला का बादे दीवाली भा दीया–दियारी आवेला। ई परब अँजोर का अगवानी क परब हऽ। मय कूड़ा–कचरा आ गंदगी साफ कइला का बाद साफ सुथरा घर–दलान में लोग ''दीपोत्सव'' मनावेला आ एह में 'बढनी' अगुवा नियर मुख्य भूमिका निभावेला।

लोक का सँगे शास्त्रो खड़ा हो जाला, ई कहत कि, 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'! माने तूँ अन्हार से अँजोर का ओर पयान करऽ बाकि एकरा पहिले घर का भीतर (आ मनवों का भीतर) के अलाय–बलाय, बुराई, मइल आ अन्हार बहरिया द! लोकजीवन में त ई 'बढ़नी' रोजे आपन काम करेला। ई हर घरनी (गृहिणी) के नित प्रति के सँघाती हऽ; घर का आब आ आबरू के रखवार हऽ आ बुराई से लड़े खातिर ओकर खास हथियारो हऽ। हर घर में होत फजीर, झलफलाहे सुरूज नरायन का अँजोर देबे वाली किरिन आवे का पहिले घरनी का हाथ में ई बढ़निये आवेला। घरनी एकरे बले घर झार–बोहार के चिक्कन क देले। ओने

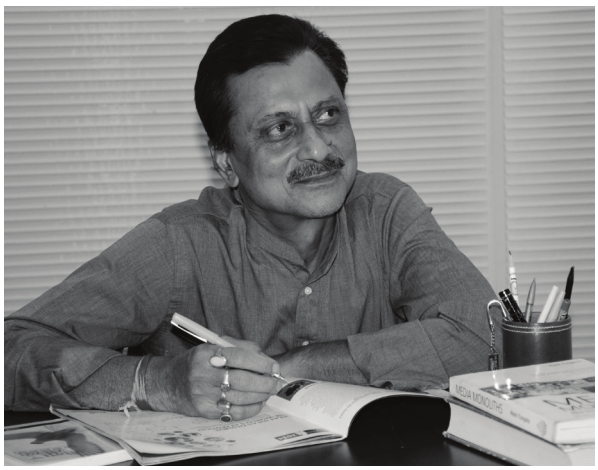

घर के मलिकार भा अगुवा घर का बहरा क सहन आ दुआर झारे–बहारे लागेला। तब ई बढ़नी 'खरहर' बन जाला। खर (कूड़ा कचरा) के हरे वाला 'खरहरा'! गाँव में ई नित्य क किया हऽ। खर माने कड़ा (अवरोध) भा 'अहं' के हटावलो जरूरी हऽ। बढनी आ खरहर दूनों प्रतीक रूप में सहज मुनष्य के विनयी मित्र हउवें स। ऊ लोक के जगावे आ क्रियाशील करे वाला उपकरण हवें सऽ। लोक का क्रियाशीलता के दिशा देवे खातिर शास्त्र लगले अगिलो लाइन दोहरावेला, ''असतो मा सद् गमय!''। झूठ से साँच का ओर पयान करऽ। साँच ऊ जथारथ ह, जवना के सामना आ साक्षात्कार जीवन के सुगम आ अरथवान बनाई।

लोकाचार में मामूली समझल जाए वाला हर चीजन के आपन महता बा। साइत एही से गृह प्रवेश में घर वालन का पइसे का पहिलहीं 'बढ़नी' (झाड़ू) के पइसार हो जाला, ईहे ना नवका घर में पुरनका घर के झडुइया गइल शुभ मानल जाला। लोक आ शास्त्र दूनों के जवन भावभूमि बनत बा ओमें भौतिक घर आ भौतिक देह दूनो का भीतर क गंदगी आ मइल बिकार निस दिन बहरियावे क अभ्यास आ साधना बा। एही से एकरा प्रतीक बढ़नी भा झाड़ू के प्रासंगिकता आजुओ बनल बा। भोजपुरी लोक के गृहस्थ–संस्कृति, सँवारे वाली कृषि–संस्कृति हऽ, जेमे च्यूँटी, चिरई, फेड़–रूख सबके न्याय आ सम्मान बा। देबे वाला का प्रति कृतज्ञता बा। कुआँ, पोखरा, नदी, बन, पहाड़ सबका प्रति सरधा आ विनय एह लोक का संस्कार में समाइल बा। ई संस्कारे हमनी का परिवार के प्रेरना–सोत हऽ आ 'परिवार' हमनी का समाज के सबल इकाई।

गंगा, सरजू, सोन का पाट में फइलल खेतिहर–संस्कृति दरसल ''परिवार'' का नेइं पर बनल गृहस्थ संस्कृति

हऽ। परिवार बना के रहे खातिर पुरूष स्त्री क गँठजोरा क के बिवाह संस्कार से बान्हल आ मर्यादित कइला का पाछा सृष्टिकारी कर्म के गति देबे क भावना रहे। घर के कल्पना बे घरनी संभवो ना रहे, एही से जेकर बियाह ना होय भा जे अकेल रहे ओके बाँड़ (वांण) आ बंड कहल जाव, सिरजन आ मानवी विकास खातिर पोथी पुराण आ रामायण–महाभारत जुग के लोकजीवन में एह परिवार–संस्कृति का दिसाई आस्था आ विश्वासे लउकेला, हमन का भोजपुरी क्षेत्र में अब तऽ कृषि–संस्कृति क मय पाया धीरे धीरे थसके–भिहिलाए लागल बा। नया जुग के नया बयार आ मशीनी प्रभाव संवेदना आ आस्था प टिकल तंत्रे के ढाहे में लागल बा। खेत जोते, बिदहे, दँवरी करे, रहट–मोट वाला सिंचाई करे भा तेल आ रस निकाले खातिर पेराई करे वाला बैलन के जगहा टेक्टर, थ्रेसर, क्राशर ले लिहले सऽ। साँच पूछीं त बैल त हमन के संग साथ देबे आ गाड़ी घींचे वाला हमने के भाई रहले स। ऊ महादेव के नन्दी गृहस्थ जीवन क धुरी बन के परिवार क गाड़ी घींचे खातिर बैल बन के सँगे रहसु, महादेव हमन का धारना आ विश्वास में भोला आ औढरदानी रहलन बाकि ऊ अपना परिवार का कारने लोकदेव बनलन।

गनेश आ गउरी शुभ, शान्ति आ सुख समृद्धि के वाहक बन के हमन का गृहस्थ–लोक में समाइल रहे लोग। एही से नन्दियो महराज बैल रूप में हमन क सहायक आ संरक्षक बन गइलन। उनहीं का चलते उनकर गऊ माता गृहस्थ क माता हो गइली। लडिकन के अपना दूध से युवा बनावसु त बृद्धन के पोसन क के अरदुवाइ बनवले राखसु। पहिले बैल गृहस्थ का पुरूषारथ, शक्ति आ सामरथ क पहिचान रहले सऽ आ गाय ओकरा धन में गिनल जासु। गऊ रूप में ऊ धरती का ऊपर दूसर माता रहली। एहीसे उनकर गोबर होखे भा मूत, कुल्हि पवित्र मनात रहे, एतना पवित्र कि बरिजल जगहो प उनकर गोबर मूत छिरिक के पवित्र क लियाव। घर दुआर त लिपइबे करे, गृहस्थ का हर पहिल क्रिया आ अनुष्ठान में गाइ क गोबरे कामे आवे आ सुखाइयो गइला पर पवित्र ईंधन बने खातिर गोइंठा आ चिपरी बन जाय।

खेत से फसल कटाइ के खरिहाना आवे ओकरा पहिलहीं गोबर से धरती लिपाव, दँवरी हो गइला प अन्न का राशि पर इहे गोबर ''बढ़ावन'' बन के रखाव। 'बढ़ावन' राखे का बेरा ना कवनो पंडित के ना पोथिये पतरा के जरूरत पड़े। बढ़ावन (वृद्धिकर्ता) खाली एगो टोटका ना रहले, सरधा विश्वास से बनल बिघिनहर्ता गनेसजी रहले। महादेव पारबती पुत्र गनेसजी ''बढ़ावन'' बनके जहाँ बइठि जायँ, विघिन बाधा आ उपदरो के का मजाल, जे गृहस्थ का उपराजन के कवनो क्षति पहुँचे? लरिकाई में आ फेर बड़ो भइला पर हमहन के ना बुझाव, दरसल लोक व्यवहार आ ओकरा आचार बिचार क रहस्य समुझले पर बुझाला।

गोबर क गनेस आ गोबरे के गउरी। अच्छत–जल दूबि चढ़ते मूर्तिमान हो जाला लोग, लोक विश्वास के ई दृढ़ता आजु ले काहें बनल बा? कारन बा कि गृहस्थ लोक के अधिष्ठात्री गौरी 'परिवार' का पालन खातिर अनपुरना (अन्नपूर्णा) बन गइली आ पहरा देबे खातिर गणेश जी बढ़ावन बन गइले। कृषि समाज आ खेतिहर संस्कृति उनके अनपुरना माई मनलस त बनवासी आ आश्रमन के रिसि–मुनी लोग उनके शाक पात फल फूल कंद मूल तरकारी क देवी ''शाकम्भरी'' मान के सरधा देखवलस। हमनी किहाँ चइत का नवरात में मइया हमहन का गृहस्थी के कुशल क्षेम जाने आ मंगल करे आवेली। लोक उनकर अगवानी धधाइ के करेला। कुवार का नवरात में इनका पूजन के अउरियो निहितार्थ बा। अनपुरना रूप हरियर साड़ी वाला उनकर गृहस्थ रूप ह, लाल साड़ी में उनकर पूजा दुर्गा रूप में होला, गौरी पारबती रूप गृहिणी वाला पारिवारिक रूप हऽ। केश बिखेरले करिया कलूठ, जीभि कढ़ले उनकर काली रूप, प्रकृति रूप हऽ। जवन अनेत आ अत्याचार के कुद्ध दंड देबे में ना हिचकिचाय। लोक उनका प्रकृति रूप का निरंकुश आ क्रोधी सुभावों क ओइसहीं मनलस। उनके गृहस्थ जीवन में ले आवे वाली इहे गौरा करिया प्रकृति रूप छोड के गोर सुन्दर घरनी बन गइली, उनका बिना जइसे कैलाश सून रहे ओइसहीं काशी। 'बे धरनी घर भूत क डेरा' वाला कहाउत बुझला एही से बनल।

खेतिहर संस्कृति के आदिदेव महादेव आ गृहस्थ संस्कृति के आदिदेवी गउरा बन गइली! ई लोग भलहीं शास्त्र आ पोथी पुराण में 'पुरूष' आ 'प्रकृति' भा शिव आ शक्ति रहे लोग, बाकि 'लोक' उनके अपने ढंग से अपना गृहस्थी आ पारिवारिक जीवन में अपनवलस, दूनों का संयोग आ मिलन के अपना गिरहस्ती क अधार मनलस। अजुओ कवनो विशेष अनुष्ठान, पूजा–संस्कार में पहिले गउरी, गनेश आ महादेवे के सुमिरन–कीर्तन होला। ••

अशोक द्विवेदी

भाषा-विचार

भोजपुरी-वर्तनी के आधार

(स्व0) आचार्य विश्वनाथ सिंह

(ई दस्तावेजी आलेख एह खातिर दिहल जाता कि भोजपुरी लिखे-पढ़े में लोगन के सहायक-होखे)

भोजपुरी भाषा में उच्च कोटि के साहित्य–रचने करे खातिर ना, ओकर सामान्य रूप से पठन–पाठन करे खातिर आ ओकराके कलम के भाषा बनावे खातिर भी ओकरा मानक वर्तनी के निर्धारण आवश्यक बा। अगर लेखक लोग शब्दन के अपना–अपना ढंग से, आ कबो–कबो बिना ढंगो के, लिखत रही त भाषा का क्षेत्र में भारी अराजकता होई। मानक वर्तनी का अभाव में ईहे होत रही कि 'लोढ़ा' लिख दिआई आ 'पत्थर' पढ़ लिआई। भाषा का विकास खातिर अइसन स्थिति बहुते अवांछनीय बा।

भोजपुरी बहुत विशाल क्षेत्र में बोलल जाला। बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश आ नेपाल का तराई के बहुत बड़ भूभाग में एकर विस्तार बा। भोजपुरीभाषी क्षेत्र का बाहरो बिहार का राजधानी पटना में, राँची, जमशेदपुर, बोकारो अइसन औद्योगिक नगरन में, आ कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई अइसन महानगरन में भोजपुरीभाषी लोगन के बड़ संख्या निवास करेला। भारत का अलावे मारिशस, फीजी, ट्रिनिडाड, सूरीनाम अइसन देशन में भी भोजपुरी बोलल जाला आ लोक–व्यवहार के प्रधान भाषा का रूप में ओकर प्रतिष्ठा बा। संसार में भोजपुरीभाषियन के संख्या आठ करोड़ बतावल जाला।

अइसन व्यापक भाषा में शब्द–रूप के विभिन्नता भइल स्वाभाविक बा आ एह विभिन्नता में शब्द का मानक रूप के निर्धारण आसान नइखे। वाचिक भाषा के प्रवाह नियमन में बान्हल ना जा सके। अधिका–से– अधिका ई हो सकेला कि ओकरा लिखित रूप के नियमित कइल जाव जेहसे व्याकरण आ कोश के प्रमाणिक स्वरूप बन सके। भाषा के ठीक ढंग से पठन–पाठन होय आ साहित्य–रचना अउर शास्त्र–निर्माण खातिर भाषा के एगो वैज्ञानिक, सर्वसम्मत रूप उपलब्ध हो जाय। एकरा खातिर सबसे पहिले भोजपुरी के मानक वर्तनी निर्धारित कइल जरूरी बा। एकरा बिना भाषा के विकास ना हो सके। वर्तनी के एकरूपता भाषा का वैज्ञानिक भइला के पहिला लक्षण हऽ।

भाषा में वर्णात्मक ध्वनियन के सार्थक प्रयोग होला। ओह ध्वनियन के वर्णमाला का अक्षरन में उतारल वर्तनी के काम ह। लिपि अक्षरन के पोशाक ह। वर्तनी के उपादान ह वर्णमाला। एहसे वर्णमाला का पूर्णता–अपूर्णता अथवा वैज्ञानिकता–अवैज्ञानिकता पर वर्तनी के स्वरूप निर्भर करेला। भोजपुरी भाषा में संस्कृत–वर्णमाला आ नागरी लिपि के व्यवहार कइल जाला–जइसे हिन्दी में होला। संस्कृत–वर्णमाला संसार के सबसे वैज्ञानिक वर्णमाला ह काहे कि ओहमें एक ध्वनि खातिर एकेगो वर्ण बा आ कवनो दोसरा वर्णमाला से ओमें वर्ण–संख्या जादे बा। संस्कृत में वर्तनी के विविधता कहीं–कहीं मिलेला (जइसे–अवनि–अवनी, पृथ्वी–पृथिवी, नारिकेर–नारिकेल), लेकिन ई मूलतः शब्द का मानकीकरण के समस्या ह। सन्धि का प्रसंग में जरूर वर्तनी के अनेकरूपता संस्कृत में देखल जाला, जेकर कारण ई हो सकेला कि सन्धि का वर्ण–विकार के उच्चारण लोग भिन्न–भिन्न ढंग से करेला (जइसे–वाक + हरिः = वाग्हरि : आ वाग्घरि :; तत् + हविः = तद्हवि : आ तद्धविः)। लेकिन वर्तनी का एह छूट से अर्थबोध में कवनो कठिनाई ना होखे, अउर अइसन उदाहरण भी सीमित संख्या में बाड़न स। सबसे बड़ बात ई बा कि संस्कृत में वर्णमाला के वैज्ञानिकता का कारण वर्तनी उच्चारण का अनुसार निर्धारित होला, अर्थ का अनुसार या व्युत्पत्ति का अनुसार ना। ई विशेषता हिन्दी, भोजपुरी आ ओह सब भषन में बा जेकर वर्णमाला संस्कृत से लिहल गइल बा। उर्दू आ अँगरेजी में वर्तनी के समस्या जटिल बा। उहाँ वर्णमाला के अवैज्ञानिकता का चलते शब्दन के वर्तनी रटके चाहे मन में बइठाके याद राखे के पड़ेला। उर्दू में 'स' ध्वनि खातिर एगो अक्षर बा–से, आ दोसर बा–सीन, आ तीसर बा–साद। साबित लिखे के होई त से; सबक, सरकार आ सल्तनत लिखे के होई त सीन; आ सन्दल, सब्र आ सन्दूक लिखे के होई त साद के प्रयोग होई। ताला में ते लागी, आ तलब, तरीका आ तोता में तो। एगो तबीयत लिखी त पहिलका त खातिर तो आ दोसरका खातिर से आई। ओइसहीं ज ध्वनि चार तरह से लिखल जाई। हजार लिखाई जे से; जात आ जैल लिखाई जाल से; जमानत आ हाजिर लिखाई जाद से; आ नाजिर लिखाई जो से। अँगरेजी में वर्तनी के समस्या अउर विकट बा। उहाँ एगो क ध्वनि चार तरह से लिखाला। कैट (cat) सी से, कोरस (Chorus) सी–एच से, काइट (kite) के से, आ कोरम (quorum) क्यू–यू से। ईहे ना, ओही सी (c) के प्रयोग कहीं 'स' खातिर एस (s)के प्रयोग होई। फेन, ओही सी–एच (ch) से च से मिलत–जुलत ध्वनि लिखाई–जइसे चान्स (chance) में, आ ओकरे से 'श' ध्वनि भी लिखल जाई–जइसे शोफर (chauffeur) में, जब कि श खातिर सामान्य रूप से एस–एच (sh) के प्रयोग होला। बाकी अँगरेजी–वर्तनी में सामान्य रूप से कहाँ होला कुछ! ओही श खातिर कबो सी–आइ–ओ–यू (ciou) होई–जइसे प्रेशस (precious) में, त कबो एकदम से टी–आइ–ओ हो जाई– जइसे नेशन (nation) में।

डोर (door), पुअर (poor) आ पूल (pool) में क्रमशः ओ, उअ आ ऊ ध्वनियन खातिर समान वर्तनी–विधान बा। पुट (put) का उ आ बट (but) का अ खातिर एकेगो यू (u) के प्रयोग होला। एह तरह से अँगरेजी में एक ध्वनि खातिर अनेक अक्षर अलगा–अलगा भा एके साथे, आ अनेक ध्वनियन खातिर एक अक्षर भा अक्षर–समूह– ई दूनों ढंग के विचित्रता बा। आ एह दूनों का ऊपर सबसे बड़ अद्‌भुत बात ई बा कि उहाँ अक्षर कबो–कबो मौन हो जालन स, याने उन्हनीके लिखल त जाला बाकी उच्चारण ना कइल जाय; जइसे नॉलेज (knowledge) में के, न्यूमोनिया में पी (p), थाइसिस (phthisis) में पी–एच। साइकॉलोजी (psychology) के हिज्जे पिसाइ–का–लोगी मशहूर बा। मतलब ई कि अँगरेजी में शब्दन के सुनके उन्हनीके शुद्ध–शुद्ध लिखल तबे सम्भव होला जब उन्हनीका लिखित रूप के पहिले से जानकारी होखे आ हर शब्द के वर्तनी ठीक–ठीक याद होखे।

शब्द का लिखित रूप से ओकर उच्चारण स्पष्ट ना भइला से अँगरेजी–शब्दकोश में हर शब्द के उच्चारण ध्वनिलिपि में लिखल जाला। हिन्दी–संस्कृत में, चाहे भोजपुरिओ में, अइसन अटपटाह जरूरत ना पड़े। ईहे ना, अँगरेजी के बड़–से–बड़ विद्वान आ भाषाशास्त्री एक उच्चारणवाला भिन्नार्थक शब्दन के सुनके तब ले ना लिख सके जब ले ओकरा प्रसंग आदि से अर्थ के जानकारी ना हो जाय। राइट के उच्चारण सुनके बिना अर्थ जनले कोई ई ना तय कर सके कि ऊ कइसे लिखाई– right (=सही,अधिकार) कि rite (=धार्मिक किया) कि write (=लिखे के किया) कि wright (=बनावेवाला)। अइसन सैकड़न उदाहरण मिलिहन स। अँगरेजी के विद्वान एह बात के स्वीकार करेलन कि ओकरा वर्तनी में अनियमितता आ भ्रामकता बा। ओकर विकास अनियमित ढंग से भइल बा आ ओकर कवनो सुसंगत प्रणाली नइखे स्थापित हो सकल[1]। अँगरेजी में शब्दन के वर्तनी याद करे खातिर रटे के, बार–बार लिखके अभ्यास करे के आ मन में बइठावे के तरीका बतावल जाला। तबो अइसन होला कि बड़का–बड़का भाषाशास्त्री लिखत खानी कवनो–कवनो शब्द के वर्तनी का बारे में भ्रम में पड़ जालन आ शब्दकोश देखेलन। गुड इंग्लिश (Good English), बेटर इंग्लिश (Better English) आ द बेस्ट इंग्लिश (The Best English) अइसन भाषा–विषयक पुस्तकन के विद्वान लेखक जी0एच0 वैलिन्स साफ स्वीकार कइले बा कि हमरा आज ले डेयरी (Dairy=दुग्धशाला) आ डायरी में वर्तनी के भ्रम हो जाला[2]। संस्कृत आ हिन्दी में शब्दन के वर्तनी रटे के कवनो जरूरत ना पड़े। इहाँ शब्द के उच्चारण सुनके ओकराके लिखे में आ लिखल शब्द के सही रूप में पढ़ देवे में सामान्य साक्षरता से बेसी भाषाज्ञान के जरूरत नइखे आ ओह शब्द का अर्थ–ज्ञान के त एकदमे जरूरत नइखे।

1. English spelling is irregular and confusing. It developed haphazardly and became fixed before a reasonably consistent system had established itself.

Hans P. Guth: Words and Ieas, Chapter 12, pp 281.

2. I myself always hesitate between dairy and dairy.

G.H. Vallins : Better English, Chapter VII, pp 109.

हिन्दी आ भोजपुरी में वर्तनी के समस्या प्रायः समान कारणन से पैदा होला। कुछ मुख्य कारण निम्नलिखित बाड़न स–

(i) ध्वनि–परिवर्तन का अनिवार्य ऐतिहासिक प्रक्रिया में संस्कृत का कइएगो ध्वनियन के उच्चारण अब मूल रूप में नइखे हो पावत (जइसे–ऋ,ष, ज्ञ) बाकी उन्हनीसे बनल तत्सम शब्द हिन्दी में चलऽ ताड़न स आ भोजपुरी में भी उन्हनीके ग्रहण कइल जरूरी बा; जइसे–ऋषि, ज्ञान। एहसे उच्चारण आ वर्तनी में भेद हो जाता।

(ii) ध्वनि–परिवर्तन का क्रम में हिन्दी आ भोजपुरी में कुछ अइसन ध्वनियन के प्रयोग होता जे संस्कृत में ना रही स बाकी प्राकृत आ अपभ्रंश में जेकर आविर्भाव हो गइल रहे (जइसे ह्रस्व ए, ह्रस्व ओ; म्ह, न्ह के मिश्र व्यंजन के ध्वनि), आ ओह परम्परा से अउर उन्यत्त से भी हिन्दी ओ भोजपुरी में इन्हनीके आगमन भइल (जइसे–घेराव, तेलचट्टा, ओसारा, कोइरी, सम्हाल या सम्हार, कान्हा)। वर्णमाला में वर्तमान व्यवस्था का अनुसार इन्हनीके जवन वर्तनी बा ओहसे इन्हनीके सही उच्चारण ना हो पाई (जइसे–तेलचट्टा में से के उच्चारण खेल का खे अइसन; कोइरी में को के उच्चारण कोदो का को अइसन; सम्हार आ कान्हा में म्ह आ न्ह के उच्चारण सम्भार में प्रयुक्त संयुक्त व्यंजन म्भ अइसन हो जाई)।

(iii) हिन्दी में विदेशीय भषन से आइल कुछ ध्वनियन के तत्सम रूप में भी बोले आ लिखे के आग्रह कइल जाला (जइसे–क, ख, ग, ज, फ, आ)। काबिल , खराब, गरीब, जरूरत, फेल, डॉक्टर अइसन शब्दन के मूल उच्चारण का अनुसार लिखे के व्यवस्था परिनिष्ठित उच्चारणे खातिर ना, कबो–कबो अर्थबोध खातिर भी

जरूरी हो जाला (खुदाई से ख, दाई के, गोरी से गोरी के आ बाल से अँगरेजी शब्द बॉल के अर्थ ग्रहण करे में कठिनाई हो सकेला)।

(iv) संस्कृत संयोगात्मक भाषा रहे, बाकी ऐतिहासिक आ भाषा–वैज्ञानिक कारणन से हिन्दी आ भोजपुरी तक आवत–आवत भाषा के स्वरूप वियोगात्मक हो गइल बा। एहसे वर्तनी–विधान में ई प्रश्न उठेला कि विभक्तियन के संज्ञा या सर्वनाम का साथे लिखल जाव कि ओहसे अलगा। अइसने प्रश्न संयुक्त क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया, उपसर्ग, प्रत्यय, अव्यय, समास आदि का प्रसंग में भी उठेला। हालाँकि एहमें निश्चित नियम ना रहला से भी अर्थबोध में गम्भीर गड़बडी के अवसर शायदे कहीं आवे, तबो वर्तनी के वैज्ञानिक आ मानक स्वरूप का विचार से ई प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाला।

(v) हिन्दी आ भोजपुरी के उच्चारण–प्रणाली संस्कृत से भिन्न हो गइल बा। अकारान्त शब्दन के इहाँ हलन्त उच्चारण होला (कमल के कमल्, संसार के संसार्) बाकी वर्तनी संस्कृत–उच्चारण का अनुरूप चल रहल बा। एह उच्चारण का आधार पर हलन्त शब्दन के लिखे में केहू–केहू हल् के चिन्ह ना देवे (भगवान, श्रीमान)। सन्धि का प्रसंग में एकरासे कठिनाई पैदा होला काहे कि हिन्दी में सन्धि के सब नियम संस्कृत से लिहल गइल बाड़न स। ओह नियमन का अनुसार शब्दन का वर्तमान उच्चरित रूप के छोड़के उन्हनीके परम्परागत लिखित रूप के सन्धि स्वीकार करे के पड़ेला (सम्भवतः ईहो एगो कारण ह कि तद्भव शब्दन का बीच सन्धि के कवनो नियम हिन्दी–व्याकरण में नइखे बतावल गइल)। एह तरह से वर्तनी आ उच्चारण में तालमेल के अभाव वर्तनी के अवैज्ञानिक बना देला।

संस्कृत में ऐ, औ के उच्चारण अइ, अउ नियन रहे। हिन्दी आ भोजपुरी में ऊ बदलके अए, अओ नियन हो गइल बा। अब ऐन्द्रिय, ऐश्वर्य में ऐ के उच्चारण पैर नियन आ मौर्य, लौकिक में औ के उच्चारण और नियन होला। प्रश्न उठऽता कि ऐ, औ से अए, अओ ध्वनि के काम चलावल जाव कि ना, काहे कि अइ, अउ उच्चारण वाला शब्द भोजपुरी में, आ हिन्दिओ में बहुत बाड़न स।

(vi) समान श्रुतिवाला ध्वनियन में मानक उच्चारण के निश्चय ना हो सकला से हिन्दी आ भोजपुरी में चाहिए–चाहिये, आई–आयी अइसन वैकल्पिक वर्तनी मिलेला। एकरा में एकरूपता खातिर कवनो नियम जरूरी बा।

(vii) संस्कृत में अनुस्वार का विकल्प में ओकरा बादवाला वर्ण के पंचमाक्षर का प्रयोग के विधान बा (जइसे–शङ्कर, चञ्चल, कण्टक, मन्दिर, सम्बल)। वर्तनी का सुविधा खातिर हिन्दी आ भोजपुरी में एकराके अनुस्वार करे के प्रचलन हो रहल बा। वर्तनी के वैज्ञानिकता का दृष्टि से ई विचारणीय बा कि एहमें से कवनो एगो के मानक स्वीकार कइल जाव कि विकल्प से दूनों चलत रहे।

(viii) हिन्दी आ भोजपुरी में अइसन शब्दन के संख्या काफी बा जिन्हनीके कवनो मानक रूप निश्चित नइखे भइल (गर्म–गरम, सर्दी–सरदी, बर्फ–बरफ, फुर्सत–फुरसत, वापिस–वापस, दिल्ली–देहली, केरल–केरला)। एहसे इन्हनीके मानक वर्तनी समस्या बन गइल बा।

भोजपुरी में ऊपर बतावल सामान्य कारणन का अतिरिक्त वर्तनी–समस्या के एगो विशेष कारण भी बा। ऊ ह भोजपुरी के आपन उच्चारण–पद्धति। भोजपुरी के उच्चारण–पद्धति खड़ी बोली से भिन्न त बड़ले बा, मगही, मैथिली, बँगला आदि से भी भिन्न बा। भोजपुरी में अ के उच्चारण मुँह के ईषद्वर्पुल (कुछ गोल) करके होला। बँगला आदि से भी भिन्न बा। भोजपुरी में अ के उच्चारण मुँह के ईषद्वर्तुल (कुछ गोल) करके होला। बँगला में अ प्रायः ओ नियन बोलल जाला, मैथिली में गोलाई बहुत कम रहेला, भोजपुरी में ह्रस्व ओ से भी हलुक अल्प ओ का आस–पास ओकर उच्चारण रहेला। भोजपुरी के दोसर प्रवृत्ति ह–शब्द का आदि या मध्य में आवेवाला अ, इ, उ, के विलम्बित उच्चारण कइल। एह उच्चारण–पद्धति का चलते भोजपुरी के बहुत–सा शब्दन का मानक वर्तनी खातिर हिन्दी से अलग हटके विचार करे के पड़ी। मानक भोजपुरी–वर्तनी के निम्नलिखित मुख्य सिद्धान्त होइहन स'–

(i) वर्तनी यथासम्भव उच्चारण का अनुरूप होय। नया ध्वनियन खातिर वर्णमाला आ लिपि में आवश्यकतानुसार अइसन व्यवस्था कइल जाय, जे अस्वाभाविक ना लागे।

(ii) वैकल्पिक भा अस्पष्ट उच्चारण का स्थिति में वर्तनी के निर्णय ना भइला प शब्द का व्युत्पत्ति पर भी विचार कइल जाय।

(iii) टंकण आ मुद्रण में अनावश्यक कठिनाई ना होखे, एकर यथासम्भव ध्यान राखल जाय।

(iv) जहाँ वर्तनी के एक से अधिका विकल्प उपस्थित होय उहाँ हिन्दी का वर्तनी के निकट रहल उचित होई–अगर भोजपुरी–उच्चारण से ओकर विरोध ना होखे।

(v) अगर हिन्दी के वर्तनी मानक ना होखे त ओकराके स्वीकार ना कके भोजपुरी–उच्चारण का अनुकूल वर्तनी–विधान कइल जाय। ••

मातृभाषा के महत्व

डा0 जयकान्त सिंह 'जय'

कवनो व्यक्ति, समाज देश भा राष्ट्र के बनावे–जनावे के जबरदस्त जरिया होले ओकर आपन भाषा। ओकर आपन मातृभाषा आ राज/राष्ट्रभाषा। दुनिया के आन देश ओकरा संस्कृति, शिक्षा, दर्शन, ज्ञान–विज्ञान वगैरह के ओकरे भाषा के जरिए जान–समझ के मान सम्मान देला। आज जहाँ आउर देश अपना भाषा के माध्यम से अपना संस्कृति, शिक्षा, शोध, दर्शन आ ज्ञान–विज्ञान सम्बन्धी उपलब्धियन के बता–जता के मान–सम्मान पा रहल बा, ताल ठोक–ठोक के अपना भाषाई स्वाभिमान के अस्मिताबोधक डंका पीट रहल बा, उहँवे आपन प्रभुता–सम्पन्न देश (राष्ट्र) भारत देश में भा विदेश में अपना गुलामी काल के थोपल आंग्लभाषा (अँगरेजी) में आधुनिक शिक्षा, संस्कृति आ ज्ञान–विज्ञान वगैरह अर्जित क के दुनिया से मान–सम्मान के आशा राखलजाता। नाम–रूप के बाद कर दीं त भाषा के आधार पर दुनिया के देश ना बता सके कि सामने वाला आदमी आजाद देश के नागरिक बा कि यूरोपीय गुलाम देश के?

भारत के कवनो आधुनिक शिक्षाविद्, अर्थशास्त्री, दार्शनिक, राजनायिक, राजनेता भा केहू तथाकथित बुद्धिजीवी देश भा विदेश के कवनो छोट बड़ मंच से अँगरेजी में आपन बात राखेलें त बुझाला कि आजुओ भारत भाषा के स्तर पर गुलामे बा। देश आउर भाषा के आजादी में से कवनो एक के चुने के हालत में भाषा के आजादी चुने के बात कहत शहीदे–आजम सरदार भगत सिंह के कहनाम रहे कि जदि भाषा आजाद हो गइल त देश बहुत दिन तक गुलाम ना रह सके आ जदि आपन भाषा गुलाम भा पिछडल रह गइल त बहुत दिन तक देश के आजादो नइखे राखल जा सकत। संस्कृत के एगो श्लोक बा – ''मातृभाषा परित्यज्य येऽन्यभाषामुपासते तत्र यान्ति हि ते तत्र सूर्या न भासते,'' मतलब, जे अपना मातृभाषा के त्याग के आन का भाषा के अपनावेले अथवा ओकर उपासना करेलें, ऊ घोर–अछोर अंधकार के गतलागुत (गर्त) में पहुँच जालें, ऊ ओहिजा पहुँच जालें, जहवाँ सूरज के प्रकाशो ना होखे।

पश्चिम आ भारत के भाषा–संस्कृति का फरक के खूब नजदीक से जाने महसूस करे वाला स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविंद, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, महात्मा गाँधी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस वगैरह सभे एह मरम के जानत रहे तबे त ऊ लोग बार–बार अपना भाषा–संस्कृति के अपनावे पर जोर देवे। हर वैचारिक मतभेद के बावजूद नेताजी गाँधी से भाषा के स्तर पर एकमत रहले, बाकिर दुर्भाग्य अइसन पिठिअवलस आ अस पटकनी दिहलस कि देश के संविधान बनत घरी एह में से केहू मौजूद ना रहे आ देश ओकरे हवाले हो गइल, जेकर कपड़ा पेरिस में धोआत रहे आ जे दिनभर अँगरेजिए में ओकात रहे आ सुतलो में अँगरेजिए में बिसनात रहे। मतलब, ऊ देह से त भारतीय रहे, बाकिर दिल–दिमाग से खांटी अँगरेज रहे।

एक बेर बात बात में पंडित जवाहर लाल नेहरू लार्ड माउंटवेटेन से कहले रहस कि भारत के हम अंतिम अँगरेज शासक सिद्ध होखब। उनकरे खुटचाली रहे कि संविधान के धारा–343(1) में त जनता के खुश करेला हिन्दी के ओकर अधिकार देहल गइल, बाकिर, गवें से हिन्दी के प्रभावहीन क के अँगरेजियत लादे खातिर ओही संविधान में धारा–343(2) आ 343(3) के बेवस्था करके बरदान के अभिशाप में बदल देहल गइल आ देश के विविध मातृभाषा, प्रांतीय भाषा के विकास का संगे–संगे सब का सम्यक समन्वय से सिरजल देश के सम्पर्क भाषा हिन्दी के राजकाज के भाषा अउर राष्ट्रभाषा बनावे वाला गाँधी के सपना सपने रह गइल। देश तब से ओही गुलामपन के ढोवत अपना भाषिक स्वाभिमान के ताखा पर राख के अँगरेजिए में अलबला रहल बा आ अमेरिका–यूरोप भारत का एह भाषिक–सांस्कृतिक–बौद्धिक–आर्थिक गुलामी के देखके मनेमन मुस्का रहल रहल, कबो–कबो त ऊ देश भारतीय लोग का अँगरेजी ज्ञान के सराह के फुलावतो रहेला। एकरे खातिर भोजपुरी में एगो कहाउत चलेला– ''बुरबक सरहले आ कोदो बिदहले''।

भारत बहुभाषी देश ह। हर क्षेत्र आ प्रांत के आपन मातृभाषा होले जवन अपना भाषा–भाषी का संस्कार–विचार आ ज्ञान–विज्ञान सबके पोषण करेले, अपना मातृभाषा के सीखे–बोले खातिर केहू का व्याकरण पढ़े के जरूरत ना पड़े। ऊ अपना अबोधावस्था से लेके सबोध होखे तक अपना माई–बाप, परिवार–पटिदार आ पडोस–परिवेश के बीच पलात–पोसात अर्जित करत जाला। ओकरा जरिए ऊ परम्परागत ज्ञान आ सांस्कृतिक सम्पदा के संगिरहा करत जाला फेर ओकर मातृभाषा ओकरा वेदना–संवेदना के जनावे–जतावे के स्वाभाविक माध्यम बन जाले।

अपना–अपना प्रभाव के सदुपयोग–दुरूपयोग करत सुविधा के हिसाब से बिना कवनो मानदंड तय कइले ओकरा में चउदह मातृभाषा/भाषा के भारतीय संविधान का आठवी अनुसूची में ई कहके डाल दिहले जे

एकनी के विकासात्मक सहयोग से देश के सम्पर्क भाषा भा राजभाषा हिन्दी समृद्ध होई। अबहीं तक तीन–तीन संविधान–संशोधन के जरिए आउर आठ गो क्षेत्रीय भा प्रांतीय भाषा के एह अनुसूची में डाल के ओकनी का विकास खातिर अनेक तरह के सरकारी सहयोग दिहल जा रहल बा। सरकार के तर्क पुरनके बा कि एह भाषा सब का विकास से हिन्दी आउर समृद्ध होत जाई। ई सोच गाँधी जी के रहे कि देश के तमाम बोली–भाषा के शब्द, कहाउत, मुहावरा वगैरह के सम्यक् समन्वय आ संयोजन से देश के सम्पर्क भा राष्ट्रभाषा हिन्दी समृद्ध होत जाई। बाकिर, गाँधीजी के मृत्यु के बाद उनका विचार के दरकिनार करत 14 सितम्बर, 1949 के देश के संविधान सभा पूर्वी दिल्ली आ पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बोली मतलब खड़ी बोली के हिन्दी बतावत भारत के राजभाषा घोषित कर दिहलस तब से हिन्दी देश के सम्पर्क भाषा के रूप विकसित ना हो सकल आ फेर सीमित क्षेत्र के बोली खड़ी बोली के राजभाषा भा राष्ट्रभाषा घोषित भइला के देश के दक्षिण आ पूर्वी भाग में हिन्दी का एह स्वरूप के लेके विरोध शुरू हो गइल। कुछ–कुछ विरोध त उत्तर आ मध्यो भारत में तब शुरू हो गइल जब उत्तर आ मध्य भारत का तमाम मातृभाषा सबके स्वाभाविक अधिकार के छीन के हिन्दी के उत्तर भारत के मातृभाषा आ सउँसे उत्तर भारत के हिन्दी पट्टी घोषित कर दिहल गइल।

मातृभाषा आ भाषा के मामला बहुत संवेदनशील होला। पथ आ मजहबो ले अधिका संवेदनशील होला मातृभाषा के मुद्दा। एक इस्लाम मजहब के माने वाली जनता अपना मातृभाषा के मुद्दा पर अपने देश के दू टुकडा कर दिहलस। एगो के नाम ह पाकिस्तान आ दूसरा के जवन अपना मातृभाषा बंगला खातिर ओह पाकिस्तान से अस्तित्व में आइल, बंगलादेश, देश के केन्द्रीय आ प्रांतीय सरकार के सम्यक भाषा–नीति बना के हर छोट बड़ मातृभाषा के विकास खातिर ईमानदार पहल करेके चाहीं, काहे कि अपना बहुभाषिकता के बावजूद भारत सांस्कृतिक–धार्मिक रूप से काल्हूँ एक रहे, आजो बा आ आगहूँ रही। हर छोट–बड भारतीय मातृभाषा आ बिकसित भाषा में एके सांस्कृतिक–धार्मिक आ आध्यात्मिक तथ्य अउर कथ्य के अलग–अलग ढंग से बरनन कइल गइल बा आ आगहूँ कइल जात रही, एह तरह से बहुभाषिकता एह देश के कमजोरी ना, बल्कि एकर मजबूती आ खूबी बनत रहल बिआ।

अपना–अपना मातृभाषा आ बोली के विकास खातिर विकसित देश भाषा–नीति बनाके काम करत रहेला, जइसे अमेरिका स्पेनिश, फ्रेंच, जर्मन, टैगोलोक, कैटोनीज वगैरह भाषा आ बोली के माध्यम से विद्यालय–विश्वविद्यालय स्तर के पढ़ाई होले आ ओह सबके विकास खातिर सरकार के ओर से समुचित बेवस्था कइल जाले, अँगरेजी शिक्षा आ शासन के भाषा बिआ, ई बेवस्था भारतो में संभव बा देश के तमाम बोली आ भाषा के समन्वय से अर्जित भाषा हिन्दी भारत के राष्ट्र–भाषा के रूप में सम्मान पावे आ सउँसे देश के एकमात्रा प्रथम राज–भाषा बने अभिव्यक्ति क्षमता से सम्पन्न विश्वविद्यालय स्तर तक अध्ययन–अनुसंधान जुगुत हर प्रांतीय भाषा हिन्दी के अलावे ओह प्रांत के सह राजभाषा भा दुसरकी राजभाषा बने।

अँगरेजी के भारत के सह राजभाषा (बेवहारिक रूप में प्रमुख राजभाषा) के आसन से जतना जल्दी उतार दिआई, ओतने जल्दी भारत विश्वशक्ति बन पाई, हमरा कहे के अभिप्राय ई नइखे कि अँगरेजी के विद्यालय–विश्वविद्यालय में पढ़ावल ना जाव, भाषा–साहित्य आ विदेशी ज्ञान–विज्ञान अउर अनुसंधान के सम्यक् ज्ञान के साथ–साथ विदेश–सेवा खातिर ओकर पढ़ाई जरूर होखे बाकिर, देश के शासन–प्रशासन न्यायालय विधि–बेवस्था वगैरह खातिर हिन्दी आ देशी प्रांतीय बोली–भाषा के बेवहार होखे के प्रोत्साहन दिहल जाव एही उद्धेश्य ला गाँधी जी तबे कहले रहस कि ''दुनिया से कह द लोग कि गाँधी अँगरेजी भूल गइल''।

एही सम्यक् विचारन, बेवहारन आ चिंतन के कारन गाँधी जी महान आ अनुकरणीय–बंदनीय बन गइलन आ उनकर तथाकथित अनुयायी रहनुमा अउर राजनेता लोग क्षेत्रीय/प्रांतीय आ दलीय नेता बनके जनता का घृणा के पात्र बन जाता लोग। कुर्सी से उतरते जनता घासो नइखे डालत। भारत सरकार गाँधी के भाषा नीति, शिक्षा–नीति, हिन्द स्वराज वगैरह के भारतोपयोगी राज्य–बेवस्था आ आधुनिक राजकाज आ विधि–बेवस्था के बीच संतुलन बनाके ईमानदारीपूर्वक काम करे लागी, ओही छन से भारत के छवि विश्वपटल पर अपने आप निखरे लागी। गाँव में अनुभवी लोग कहेला 'एके साधे सब सधे सब जाए' जदि गाँधी के मातृभाषा महिमा, ग्राम स्वराज, हिन्द स्वराज के साध लिआय त भारत के इंडिया कबो पछाड़ ना पाई, बल्कि दूनो एक दोसरा के परस्पर सहयोग करत आगे बढ़ पाई। बाकिर, बिना मातृभाषा आ देशी भाषा सब के समुचित सम्मान–अधिकार देले ई सब गूलर के फूल जइसन बा।

केहू आर्थिक रूप से केतनो सम्पन्न–समृद्ध हो जाव, जदि ओकर मातृभाषा आ राष्ट्रभाषा विपन्न बिआ त दुनिया ओकरा के कबो हिरदय से सम्मान ना दी। भारत के नामचीन इतिहास के विद्वान डॉ0 रघुवीर के विदेशी प्रवास के अनुभव जान ली, रउरो मातृभाषा आ देश के अपना राष्ट्रभाषा का महत्व के बोध हो जाई। डॉ0

रघुवीर हर बेर अइसन फ्रांस पहुँच के अपना आत्मीय राजवंश के परिवार में ठहरल रहस। ओह परिवार के एगो छोट बच्ची उनका से घुलमिल गइल रहे। अंकल अंकल कहे आ उनकर खूब सेवा करे। ऊ बच्ची उनका सेवा–टहल में लागल रहे, ओही बीच उनका भारत से भेजल एगो चिट्ठी मिलल। बाल सोभाव बस ओह बच्ची के मन भइल कि देखीं त भारत अतहक देश के भाषा आ लिपि कवना तरह के डॉ0 रघुवीर टाले के चहलें, बाकिर ओह बच्ची का हठ के सामने उनका झुके के पडल।

ओह चिट्ठी के बाँचते ओह बच्ची के मुँह लटक गइल, ओकरा मुँह से हठात निकलल– 'अरे ई त इंग्लिश में लिखल बा, रउरा देश के कवनो आपन भाषा/मातृभाषा नइखे का? डॉ0 साहेब के कुछ कहते ना बनत रहे, ऊ लड़की उदास होके भीतर चल गइल। अपना मतारी के ई बात बतवलस। दूपहर में सभे एके संगे भोजन कइल बाकिर डॉ0 रघुवीर का पहिले जइसन उत्साह आ चहल पहल ना बुझाइल भोजन के बाद ओह परिवार के मलकिनी डॉ0 रघुवीर से बहुते उदास मन से कहली 'डॉ0 साहेब! अगिला बेर से रउरा कहीं आउर जगह ठहरे के बेवस्था कर ली' जेकर कवनो आपन भाषा भा मातृभाषा ना होला, ओकरा के हम फ्रेंच, असभ्य, बर्बर आ तुच्छ कहीले। अइसन लोग से हमनी कवनो तरह के सम्बन्ध ना राखी जा।'

डॉ0 रघुवीर अवाक् होके सब सुने खतिर मजबूर रहस। परिवार के मलकिनी आगे बलवलस कि हमार मतारी लॉरेन प्रदेश का ड्यूक के बेटी रहली। जर्मन के सम्राट उहँवा जबरन फ्रेंच भाषा के माध्यम से शिक्षण बंद कराके सभका ऊपर जर्मन भाषा थोप देले रहस। तब हमार माई एगारह साल के रहे आ उहॉ के कान्वेन्ट इस्कूल में पढ़त रहे। एक बेर जर्मन के महरानी ओह इस्कूल के निरीक्षण करे अइली ऊ कवनो एक विद्यार्थी से जर्मन के राष्ट्रगान सुनावे के कहली। हमारा माई के छोड़के केहू का जर्मन के राष्ट्रगान इयाद ना रहे। हमार मतारी खूब सुन्दर ढंग से शुद्ध जर्मन राष्ट्रगान सुना दिहलस। महारानी हमरा मतारी पर खूब खुश होके ईनाम माँगे के जिद्द करे लगली। अंत में हमार मतारी उनका से पुछलस कि जवन हम माँगेब, ऊ रउआ देहब? एतना सुनते महारानी खीसे कॉपत कहली – ''रे लइकी। तोरा ए तना जानकारी नइखे कि हम देश के महारानी हई। हमार कहल झूठ ना होखे, तूँ माँग के त देख एतना सुनते हमार मतारी कहलस –'' हे महारानी जी, जदि रउआ सचमुच अपना बचन के पक्का बानी त हमार एगो प्रार्थना बा कि अब आगे से हमरा एह प्रदेश के सब काम–काज, शिक्षा–दीक्षा खाली फ्रेंच में होखे जर्मन में ना।'

एतना सुनके महारानी अचम्भा में पड़ गइली खीसे काँपे लगली। उनकर आँख लाल हो गइल बाकिर ऊ करस त का करस, बचन हार चुकल रहली। उनका कहे के पडल –ऐ लइकी! नेपोलियन के सेनो जर्मनी पर कबो एतना कठोर प्रहार ना कइले रहे, जतना तें शक्तिशाली जर्मनी साम्राज्य पर कर देले बाड़े, जर्मनी के महारानी तोरा अइसन छोट बच्ची से बचन देके हार गइल। ई हम जिनगीभर ना भुला सकीं। जर्मनी जवन अपना बाहुबल से जीतलेले रहे, ओकरा के तूँ अपना बिबेक आ बानी से फेरू जीत लिहले। अब हम भलीभाँति जान गइनी कि लोरेन प्रदेश अब अधिका दिन जर्मनी के अधीन ना रह सके, एतना कहके महारानी तेजी से उल्टे पाँव लौट गइली, डॉ0 रघुवीर, एह घटना से रउआ आभास हो गइल होई कि हम कइसन मतारी के बेटी हई, हम फ्रेंच भाषा–भाषी संसार में सबसे अधिक मान–सम्मान आ गौरव अपना मातृभाषा के दिहीले, काहेकि हमनी खातिर राष्ट्र प्रेम आ मातृभाषा प्रेम में कवनो अंतर नइखे। हमार आपन भाषा मिल गइल त आगे चलके हमनी के जर्मनी से आजादियो मिल गइल डॉ0 रघुवीर! रउआ अब जरूर समुझ गइल होखब जे हम का कहे के चाहत बानी डॉ0 रघुबीर लमहर सांस लेत मुठ्ठी भींच लेलन जइसे कुछ मनही मन संकल्प कइले होखस। एकरा के कहल जाला भाषिक गौरवबोध आ मातृभाषिक अस्मिताबोध। ••

विभागाध्यक्ष (भोजपुरी), लंगटसिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर

गजल

रामयश अविकल

चलीं ई सबुर के बन्हल–बान्ह टूटल
कमाये बदे आज घर–गाँव छूटल।

मिलल मार गारी, मजूरी का बदला
सरेआम अब आबरू जाय लूटल।

भवन तीन–महला शहर में बा उनकर
हमन के त झाँझर पलनियो ले टूटल।

इहाँ दाल–रोटी चलल बाटे मुस्किल
दइब टेढ़ भइले करमवो बा फूटल।

दबंगन के बा हर जगह जुल्म माफी
अबरकन के भाई–भवद बाटे रूसल।

दू गो कविता

अल्पना मिश्र

[एक] प्रेम में डूबल औरत

प्रेम में डूबल औरत
एक–एक पल–छिन
सहेजत–सम्हारत रहेले।

'कइसे उठाईं ई 'छन'
कहाँ धरीं जतन से...'
इहे सोच–सोच के
कई बरिस ले मुस्कियात रहे ऊ
मने–मन कि
अइसन होई ऊ ...ओइसन होई कइसन होई...
तऽ ऊहे चलि आइल
एकदिन दबे–पाँव।

प्रेम में पगल औरत
इहो सोचत रहे बरिसन ले
कि अचकले जागे त
ओइसहीं मिले ओकर धइल
तकिया का नीचे चाभी
डायरी...पासबुक

कहाँ समझि पवलस ऊ ओघरी
कि ओही एक दिन का मोह में
बिला जाई ओकर
बरिसन से सइँचल सारतत्व...
घर के चाभी...
डायरी के लिखल गोपन
आ पासबुक के सुरक्षा

प्रेम में पगल औरत
जागल बिया कबसे
झाड़ू–पोछा, चूल्हा–चउका
बरतन खनखनावत
लइकन का पाछा भागत
कपड़ा झारत, सइहारत
फेर उहे अनन्त इन्तजार...

ओही एक छन के
पकड़े का कोसिस में निढाल
कमर में लटकल बा...
चाभी के खोल
कहीं बहरा निकल गइला के
तड़प लेले, दुआरी ले जाके

लवटि रहल बिया
ऊ प्रेम में डूबल औरत।

सुनँऽ सन तब नऽ
ई प्रेम में डूबल औरत कि
अगर इहे प्रेम हऽ
त, नीक रहित ऊ बलुक
दूर रहि के एह प्रेम से।

[दू] हम

समय बहुत कम रहे
भारियो रहे ऊ हमरा से
ओइसे अपना काम का बोझा से
हमहूँ कम भारी ना रहनी
कतने गठरियन का बोझ से
दबाइल रहे हमार पोर–पोर।

शोक, मोह, चिन्ता आ खुसी से
बनल ईश्वर, एह कूल्हि से होके
बेखबर, बइठल रहे
हमरा पाछा – स्कूटी पर।

पता ना कवना शोक में डूबल
कवना मोह में हिम्मत बान्हत
कवना चिन्ता में काँपत
पता ना कवना खुसी खातिर
बिकल हम
हाथन में मन भर अनाज लदले
भीड़ का बीच
स्कूटी चलावत रहनी।

एसोसियेट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–7

पुनरावलोकन

'लोक' के आधुनिकता बनाम यांत्रिक आधुनिकीकरण

डा0 प्रमोद कुमार तिवारी

लोक के नाँव लेहला पऽमन में ओकर दू गो छवि बनेला। एगो छवि में कलकल नदी बहेले, फल से गदराइल पेड़ लउकेला, गीत आ उत्सव से भरल खुशहाल लोग नजर आवेले आ हरियाली भरल खेत के बीच से कच्चा पगडंडी पऽ पोंछ उठा के भागत सुंदर बाछा–बाछी लउकेली स। दुसरका छवि में गांव एगो पुरान, जर्जर, पिछड़ा आ ठहरल समाज के रूप में लउकेला, जवना में लाचारी आ बेबसी भरल बा, जवन घनघोर जातिवाद आ राजनीति से ऊभचूभ हो रहल बा, जहां रह के कवनो नीमन काम ना कइल जा सके, एह से ओकरा के छोड़ के परदेस निकल जाए में लोग लागल रहेले। संभव होखे तऽ कलकत्ता, दिल्ली, बंगलौर आ ना जुरे त बनारस, पटना, आरा भा छपरा में कुछ रस्ता पकड़ल जाव। रस्ता पकड़े भा रास्ता ध ारावे के बात जवना ढंग से भोजपुरी लोक में सुने के मिलेला ओकरा से बुझाला कि गांव में रहे के मतलब बा कि बेरस्ता आ कुराह पऽ बानीं। जिनगी बेमतलब कट रहल बिया। ई खाली भोजपुरिये समाज के कहानी नइखे लगभग पूरा देश में लोक से जुडल समाज के कमोबेस सच्चाई इहे बा। कहे के जरूरत नइखे कि लोक के ई दूनो छवि गड़बड़ बा। पहिलका छवि के जादेतर ऊ लोग याद करेले जे कई बरिस पहिले गांव छोड़ के बड़ शहर भा विदेश निकल गइल रहले, एकर संबंध यथार्थ से कम कल्पना आ नास्ट्रेल्जिया से बेसी हऽ, एह से एकरा के छोड़ देत बानीं। दुसरका छवि के संबंध पिछिला कुछ दशक के राजनीति आ जीवनशैली से जुड़ल बा, एह से एकरा पऽ गहिराह ढंग से सोचे के जरूरत बा।

नया आ आधुनिकता ई दूनो शब्द दू गो अर्थ देला। खाली भारते में ना पूरा दुनिया में जवना शब्दन के आधार पऽ सबसे जादे भ्रम रचल गइल बा ओहनी में से एगो 'आधुनिकता' हऽ। अइसनकुछ अउर शब्दन के उदाहरण के रूप में 'विकास' अउर 'ज्ञान' के लीहल जा सकता बा, जवना के एह आधुनिकता से सीधा संबंध जुडेला। 'नया' शब्द समय से जुड़ल ह जवन कुछ समय बाद बदलत रहेला जइसे बेटा के समय बाप के तुलना में आधुनिक होखी, बाकिर 'आधुनिकता' के संबंध एगो खास प्रवृत्ति, सोच आ जीवन दर्शन से जुड़ेला। आधुनिकता एगो मूल्य हऽ जवना के स्थापना पच्छिम के लोग ज्ञान, विज्ञान आ राजनीतिक क्रांति से कइले रहे। पूरा संभव बा कि बाप में आधुनिकता के तत्व होखे, बाकिर बेटा ओकरा से वंचित रह जाए। पच्छिम में आधुनिकता के आंदोलन चलल रहे जवन मनुष्यता के पक्ष में बौद्धिक लोग के एकजुट कइले रहे। आधुनिकता कवनो देवी–देवता–धरम–कर्मकांड भा राजा रानी के जगह पऽ मनुष्य के केन्द्रीय महत्व देबे के बात करेला। संक्षेप में कहीं तऽ

1. आधुनिकता के मतलब ई हऽ कि रउआ केतना कम कूड़ा फइलावेलीं, केतना कम ऊर्जा खरच में आपन जीवन यापन करेलीं।
2. आधुनिकता प्रकृति के साथ सहयोग आ सहजीवन में यकीन करे के मूल्य से जुड़ेला।
3. आधुनिकता के मतलब ई हऽ कि विविधता खातिर, असहमति खातिर रउआ समाज में केतना जगह बा। अपना विरोधी विचार के सुने आ सहे के रउवा भीतर केतना ताकत बा।
4. आधुनिकता के मतलब ई हऽ कि वंचित आ कमजोर तबका खातिर समाज विशेष में केतना जगह बा। यानी बच्चा, स्त्री, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक आदि के समाज के मजबूत आ बहुसंख्यक तबका केतना जगह दे रहल बा। जवना समाज में आधुनिकता होला ऊ बहुसंख्यक के तानाशाही रवैया के विरोध करेला।

बाकिर पच्छिम खुदे एह कसौटी पऽ खरा ना उतर पावल। जवन आधुनिकता पच्छिम में धरम के विरोध में उठल रहे, ऊ बाहर सबसे जादे धरम के इस्तेमाल कइलस। जवन आधुनिकता बराबरी आ मनुष्यता के बात करत रहे ऊ सबसे जादे उपनिवेश बनवलस आ मनुष्यता के बर्बर ढंग से हत्या कहलस। अफ्रीका, अमेरिका, भारत सब आज तक ओह दंश के भोग रहल बा। एह से एगो बात साफ बा कि पच्छिम में आध ुनिकता शुरूए में खतम हो गइल ओकरा स्थान पऽ आधुनिकीकरण आ गइल जवना में विवके के बजाय विज्ञान के राज रहे, जवना में मनुष्यता के तुलना में पूंजी के महत्व रहे अउर जवन प्रकृति के दुश्मन मान के ओकरा पऽ एकाधिकार जमावे के आपन हक समझत रहे।

पिछिला दू सौ साल में भारते ना पूरा दुनिया में पच्छिम, आधुनिकता के नाम पऽ आधुनिकीकरण थोपले बा आ जे भी ओकरा के रोके के कोशिश कइले बा ओकरा से सीधा मुठभेड़ कइले बा। चूंकि ओकरा लगे एकांगी विज्ञान आ यंत्र के साथ–साथ तमाम देश सब के शोषण आ लूट से इकट्ठा कइल पूंजी के ताकत ब एह से ऊ लगातार विजयी होत आ रहल बा। आध ुनिकीकरण के एह ज्यादती सबसे मूल्य अइसन समाज सब के चुकावे के पड़ल बा, जेकर लमहर परंपरा रहल बिया आ जवन समाज प्रकृति से जीवन दर्शन के स्तर प कई सदियन से जुडल रहल बा।

सवाल खाली आधुनिकता से जुड़े भा कटल रहे

के नइखे, मूल सवाल तऽओह भाव, संस्कृति अउर जीवन शैली के रक्षा के बा जवन उकतरफा ढंग से आधुनिकीकरण के भेंट चढ़ रहल बा। ओह ज्ञान परंपरा के खतम भइला के बा जवना के लोकसंस्कृति हजारन साल के अनुभव के बाद अर्जित कइले रहे।

पच्छिम के ई व्यवस्था 'व्यक्ति' के बहुत जादे महत्व देबेले, जबकि पुरान संस्कृतियन में 'व्यक्ति' आत्म के जगह पऽ 'समूह' अउर 'पर' केन्द्र में रहे। ई लड़ाई व्यक्ति बनाम समाज, ब्यक्ति बनाम परिवार आदि के रूप लेत रहल बा। अपना वर्चस्व के बचावे खातिर ऊ नाम बदल बदल के नया रूप लेत रहेला। 1990 के बाद भारतो में इतिहास से लेके विचार तक के अंत के बात गूंजेलागल। उत्तर आधुनिकता अउर ओकरो से आगे के समय के बात होखे लागल बाकि सवाल उठत बा केकरा खातिर। इतिहास के अंत सबका खातिर नइखे भइल, एगो बड़ वर्ग खातिर ई इतिहास के निर्माण के काल हऽ, स्मृतियन के स्थापित करे के काल हऽ। सत्ता में बइठल प्रभु वर्ग हमनी के इतिहास के कबो महत्वे ना दिहल अउर जब एतना जागरूकता आइल कि हमनी के अपना बारे में पूछींजा तऽ खट से कह दिहल गइल कि इतिहास जइसन कवनो चीज ना होखे, कि इतिहास जादूगर के टोपी हऽ, जवनामेंसे कुछुओ निकालल जा सकतबा। कहे के मतलब कि लोक के इतिहास के, लोक के दर्शन के कुछ मतलब ना रह जाए आ ऊ निरर्थक हो जाए।

पिछिला 25 बरिस के समय स्मृति भा याद के मिटावे अउर ओकरा के बचावेवाला लोग के बीच के संघर्ष के समय रहल बा। रउआ आपन कथा, कहानी, गीत, परंपरा (रूढि ना) दर्शन, जीवन शैली सब भुला जाई। राउर दिमाग कोरा इ स्लेट हो जाए ताकि ऊ लोग अपना मन के बात ओकरा पऽ लिख सके। एह पूरा प्रक्रिया के सबसे जादे कीमत लोक अउर आदिवासी संस्कृति से जुड़ल लोग के चुकावे के पड़ल बा। काहे कि ई दूनो व्यक्ति से ना सामूहिकता से संचालित होखे वाला संस्कृति हई स। असल में कुछ सौ साल के उमिर वाली अमेरिका जइसन सभ्यता के, लोक के पुरान संस्कृति सबपरेशान करेली सऽ। अपना जीवन शैली आ जीवन दर्शन के कारण ऊ पूंजीवादी संस्कृति के लाभ आ शोषण के रथ रोके लागेली सऽ। एही से अमेरिका, अफ्रीका से लिहले आस्ट्रेलिया तक ऊ लोग सामूहिक नरसंहार के सहारा लेत रहेले। अमेरिका के रेडमैन आदिवासी राजा अमेरिकी राष्ट्रपति के नाम 1854 में जवन चिट्ठी लिखले रहले ओकरा के याद करीं जवना में ऊ अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा धरती बेचे खातिर दबाव डलला के जबाब में कहले रहले कि 'ई हमनी के कल्पनो के बाहर के बात बा, भला धरती अउर आकाश के केहू कइसे कीन सकत बा, केहू पानी के कइसे खरीद सकत बा, एगो क्षेत्र के धूप अउर रोशनी केकेहूकइसे बेच सकत बा। हमनी के पता बा कि रउआ ताकतवर बानीं, ना देब जा तऽ रउआ छीन लेबबाकिर एगो बात याद रखीं जब भी रउआ हमनी के धरती माई के रौंदब त याद राखब कि एह नदियन में खाली पानी ना हमनी के पुरखा लोग के खून बहेला। कहे खातिर ई संघर्ष 100 साल भा साठ साल पहिले खत्म हो गइल, बाकिर ई लगातार चल रहल बा, पहिले से कहीं तेज गति से चल रहल बा। लोक आ लोक के दर्शन में यकीन राखेवाला लोग एह युद्ध के एके साथे कई गो स्तर प लड़ रहल बा– आजीविका के स्तर पऽ, भाषा के स्तर पऽ, खान–पान पहिनावा के स्तर पऽ, संस्कृति के स्तर पऽ। साम्राज्यवादी ताकत सब तकनीक के सहयोग से एह लड़ाई के एकतरफा बनावे में लागल बाड़ी सऽ। बलुक ई कहल सही होखी कि एह वैश्विक लड़ाई में ऊ बढ़त ले चुकल बाड़ी सऽ। असल में ई लड़ाई खाली लोक आ आधुनिकीकरण के गुलामे लोग के बीच नइखे, ई आत्ममुग्ध लालची लोग अउर आवेवाली पीढ़ियन खातिर पृथ्वी के बचावेवाला प्रकृति प्रेमी लोग के बीच बा, जवना के संकेत महात्मा गांधी बहुत पहिले कइले रहले कि 'ई धरती हमनी के जरूरत खातिर बहुत बड़ बिया बाकिर एगो आदमी के लालच के पूरा करे खातिर बहुत छोट बिया।' आज अइसन हजारन–लाखन लालचीयन के जुनून से ई धरती कराह रहल बिया। लोक के ई लड़ाई बाजार के पक्षधर अइसन सत्तासे बा जवन दुनिया के एकांगी, एकरूप अउर एकध्रुवीय बनावल चाहतबाड़ी स।

असल में आज के समय में लोकसाहित्य आ संस्कुति पऽ बात कइलओह संस्कृति अउर जीवन पद्धति के पक्ष में खड़ा होखल बा, जवन एह धरती के ह्रदय से जुड़ के, ओकरा धड़कन के सदियन से सुनत आ रहलबिया। लोक, एकरा रग–रग से वाकिफ बा अउर प्रकृति के रहस्य के जाने आ खोले के तमाम तरह के वैज्ञानिक दावा करेवाला आधुनिक लोगन से कहीं बेहतर ढंग से प्रकृति के जाने आ समझेला।

पचासन हजार साल से समृद्धि के साथ जीयेवाला आदिवासी समुदाय सब के ई नया सभ्यता बेचारा बना देलस। आज ऊ लोग रचे के बजाय बचे में लागल बा। 50000 साल से प्रकृति के रहे लायक अउर सुंदर बनवले रहे के श्रेय अगर केहू के दिहल जा सकत बा तऽ ऊ आदिवासी समाज आ लोक संस्कृति से जुड़ल लोग के दीहल जाई। एह लोग के अविकसित और नासमझ कहे वाला लोग के खुद अपना गिरेबान में झांक के देखे के चाही, आस्ट्रेलिया में एह लोग के असभ्य कहेवाला लोग असल में इंग्लैंड के गुंडा अउर

देशनिकाला के सजा पा के उहां पहुंचल लोग रहे।

आज 'लोक' उपेक्षित बा। आजकाल अक्सरहां केन्द्र अउर हाशिया के बात सुने के मिल रहल बा, दिल्ली केन्द्र हऽ अउर लोक हाशिया लोग आंदोलन कर रहल बा कि हमनियों के केन्द्र बना दऽ ना तऽ केंन्द्र के तोड़ देब जा। माने हाशिया के प्रतिकेन्द्र बना देब जा। ई जवन प्रति के भाव हऽ, प्रतिरोध, प्रतिकार, प्रतिघात, प्रतिसंस्कृति ई बहुत दूर तक साथ ना देबेला। ई सत्ता के आंख से, ओही के भाषा में दुनिया के देखेला। केन्द्र के तोड़ के एगो अउर केन्द्र बना देला से का हो जाई। जोक दर्शन हमनी के सिखावेला कि प्रकृति के साथ चलीं अउर अर्जन ना विसर्जन सीखीं। प्रवृति ना निवृति के ओर कदम बढ़ाई काहें कि प्रवृति के कवनो अंत नइखे। कूड़ा मत फैलाईजेतना पृथ्वी माई से ले रहल बानीं ओतना ओकरा के लवटइबो करीं, ना लवटा सकेली त कम से कम जइसन बा ओइसन रहे दीं (ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया) ताकि संतुलन बनल रहो। ई सही बा कि लोक में बहुत रूढि आ गइल बाड़ी सऽ बाकिर असल में ई सामूहिकता के दर्शन पर चलेले आ लोक–परंपरा, लोभ के छोड़ के साझापन अंउर सहअस्तित्व के बात करेले। व्यक्ति ना समूह, टकराव ना सौहार्द। एक के फायदा माने दूसरका के नुकसान बा, ई सोच तथाकथित विकसित लोग बनावले बा। इंसान अउर प्रकृति एक दूसरा के दुश्मन ना दोस्त हऽ।

आ मान लेहीं रउआ कार, बंगला, जहाज सब पा लेहनी, का हो जाई एह से? बहुत जादा आधुनिक आ विकसित बन के रउआ का कर लेब? बड़का महान बनके रउआ का कऽलेब? रउआ पेड़ के बिना रह जाइब? मधुमक्खी के बिना रह जाइब? दूब अउर च्यूंटी के बिना रह पाइब? आदमी के बिना ई सब लोग रह जाई। कई लाख साल ई लोग बिना इंसान के रह चुकल बा। रउआ 10 मंजिला महल के आखिरी मंजिल गिरा दीं, भवन बांचल रह जाई बाकिर विकास के नाम पऽहमनीं के लगातार नींव गिराके महल बचावे के सपना देख रहल बानीं जा ओकरा के पूरा करे में लागल बानीं जा। एगो कवि लिखले बाड़े–

जवन सरकार सब बाघ बचावे का दावा करत बाड़ी स
ऊ झूठ बोलत बाड़ी स
काहें कि ऊ घास के बारे में चुप बाड़ी स
घास बची तब बाघ बचिहें स।

लोक के सीधा–सादा जीवन बा आ ओतने सहज दर्शन बा, कि समूह के साथे रहीं, प्रकृति के साथे रहीं, खूब मेहनत करीं, नीमन नींद लीं आ गायीं, बजायीं, उत्सव मनायीं, जन्म के उत्सव, मृत्यु के उत्सव, पेड के उत्सव, नदी के उत्सव यानी जीवन के उत्सव।

'उतनी दूर मत व्याहना बाबा' कविता में एगो आदिवासी कवयित्री निर्मला पुतुल लिखले बाड़ी–

ओइसन हाथ में मत दीहऽ हमार हाथ/जवन हाथ
कबो कवनो पेड़ ना लगवले होखे।

त आईं सभे, तनी आपन–आपन हाथ देखल जाव। हमनी के हाथ साफ बा आ कि आधुनिकीकरण आ विकास के चक्कर में मामला गड़बड़ गइल बा। हम व्यक्तिगत रूप से महसूस कर रहल बानीं कि हमार हाथ बहुत गंदा बा, बुझाला जइसे कि खून से लिथड़ल बा, तबो जादातर लोग के लागेला कि हम विकसित अउर आधुनिक हंई। ••

हिन्दी विभाग, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
गाँधीनगर–382030

फोटो ग्राफर, लेखक, कवि भाई लोगन से निहोरा.....

(1) फुल स्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा कृतीदेव 10 फॉन्ट में टाइप कराके रचना–सामग्री आ फोटो ग्राफ रजि0 ड़ाक से भेजी अथवा **ashok.dvivedipaati@gmail.com** पर मेल करीं।
(2) पत्रिका में रिपोर्ताज रपट, फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ऊहे चित्र/फोटो भेजल जाव, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे।
(3) पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नंबर भेजीं। पता पत्रिका में छपल बा।
(4) संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साफ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं। संपादक का नाँवें ईमेल पर फोटोग्राफ भेजल जा सकेला बाकि लिखित रचना के प्रिन्ट डाक/कुरियर से भेजल जरूरी बा।
(5) निजी खर्चा पर निकलेवाली आ बिना लाभ के छपेवाली अव्यावसायिक पत्रिकन के सबसे ज्यादा सहयोग ओकरा लेखक कवियन आ पाठकन से मिलेला। ई समझ के एह पत्रिका के पहिले खुद ग्राहक बनी अउरी दुसरो के बनाईं।

सात पुहुत के उखड़ गइल खूँटा

बलभद्र

सात पुहुत के उखड़ गइल खूँटा
बेंचा गइलें स बैल

दुआर कुछ दिन रहल उदास
बाकिर सन्तोष्गो ई कम ना रहल
कि अतना जोतइला के बादो
निकल गइल दाम

गहँकी अइलें स
तय भइल दाम
धरा देल गइल पगहा
पगहा धरावत
दाम धरत
माथ पर गमछा धइल ना परल भोर

रिटायर होत समय चाचा
सोचलें आ सोचल आपन
सगरो गवलें
कि रहब गाँवे
खेत–बधार धूमब

रिटायर भइला के
साले–दू साल बाद
बँटा गइल घर
चूल्हा–चउका फरिया गइल
गुमसुम रहे लगलें चाचा
एह गुमसुमी के लागल
कतने माने–मतलब

कबो अन्हारें
कबो दुपहरिये
निकल जास टहरे
धीरे शुरू करें चले
आ ना जाने कब
चाल उनकर हो जाए तेज
दस मिनट के दूरी
तै हो जाए पाँचे मिनट में

चाह चाहीं
बाकिर ना मिले ओह में सवाद
माई से बतियावें
बाकिर बात ना कवनो बात जइसन

ना बइठ पावें कतो असथिर
ना टिक पावें कवनो बात पर
दुआर पर खटिया पर परल रहें खरहरे
बल देके कहल चाहें कवनो बात
आ पूरा ना कहि पावें

बँटवारा के लेके
कबो कवनो गंभीर बात ना कहलें चाचा

गहँकी जब हँकले स बैलन के
बैल हुमचले स एक बेर नाद देने भरजोर
एह दुआर पर
बैलन के ई आखिरी जोड़ी रहल
ई आखिरी हुमाच

बेमारी के हालत में
फोन पर चाचा कहलें अपना भइया से
कि आवल चाहत बानी तहरा भीरी
आ रोवे ऊ लगलें

ई उनकर आखिरी रोआई रहल
उनकर आखिरी हुमास

सात पुहुत के उखड़ गइल खूँटा
बेंचा गइलें स बैल। ••

हिन्दी विभाग, गिरीडीह कालेज,
गिरिडीह–815302 झारखंड

हस्तक्षेप

अश्लील गायकी आ भोजपुरी के अस्मिता

भगवती प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरी में लोकगायकी के एगो लमहर, निठाह आ बड़ा सुघर परम्परा रहल बा। खाली पचीस–तीस करोड़ भोजपुरी बोले वाला लोगने में ना, बलुक देश–विदेश के अउर दीगर भाषा बोलनिहारनों के बीच में भोजपुरी गीत गवनई के धूम शुरूए से मचत रहल बा। अब त एकर शोहरत रोज नया–नया ऊँचाई छू रहल बा। भोजपुरी फिलिम आ लोकगीत के सीड़ी, कैसेटन के बाढ़ एकर जीयत–जागत आ तरोताजा गवाह बा। ना खाली उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ के सीमा आ कोलकाता, मुंबई, दिल्ली जइसन महानगरन में, बलुक मारीशस, फीजी, सूरीनाम, ट्रिनीडाड, ब्रिटिश गियाना, हालैण्ड, नीदरलैंड, नेपाल वगैरह देशनों में भोजपुरी गीतन के सरसता आ सुर–ताल नित नया रिकार्ड बना रहल बा। कोठा से क्रांति ले आ घर–अंगना, खेत–खलिहान से लड़ाई के मैदान ले– सभ जगहा समान रूप से एकर संदर्भ आ शोहरत बा। चाहे आजादी के लड़ाई में क्रांतिकारी लोगन का बीचे रघुवीर नारायन के 'बटोहिया' गीत होखे, तमाम कोठन पर गूंजन महेन्दर मिसिर के पूरबी के मनमोहक धुन होखे भा नाच–मंडली आ मंचन प भिखारी ठाकुर के 'बिदेसिया' के मरमभेदी सुरलहरी– भोजपुरी माटी के सोन्ह–सोन्ह गमक से रचल–बसल ई गीत जन–जन के कंठहार बनि गइल बाड़न स।

ई त भइल सिक्का के एगो पहलू। दोसर पच्छ ई बा कि आजकाल्ह भोजपुरी गायकी अश्लीलता आ भोंडापन के पर्याय बनि के रहि गइल बा। एह से भोजपुरी के इज्जत आ अस्मिता दांव प लागल बा। पइसा बनावे के होड़ में भोजपुरी फिलिम आ कैसेट कंपनी एह फूहड़पन के हवा दे रहल बाड़ी स। भोजपुरी भाषा–भाषियन के भावना का संगे खेलवाड़ करेवाला आज कई गो अइसन गायक–गायिका बाड़न, जे फूहड़, अश्लील आ दुअर्थी गीत गा–बजा के माहौल के लगातार प्रदूषित क रहल बाड़न।

सबसे पहिले गीतकार मोती बी–ए. फिलिम 'नदिया के पार' (पुरनकी) में सात गो भोजपुरी गीत 1944 में लिखलीं आ भोजपुरी गीतन के फिलिम में दाखिला दियवलीं। ओह गीतन के लोकप्रियता भोजपुरी फिलिम के निरमान के दिसाईं फिलिमकारन के धियान खिंचलस। फेरु त 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबों','लागी नाहीं छूटे राम' फिलिमन के गीत जनमानस प छा गइल। भोजपुरी गीतन के शोहरत के भुनावे खातिर कैसेट कंपनी आगा अइली स आ पारम्परिक अउर पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलत आइल लोकगीतन के आपन मधुर आ मनमोहक आवाज देके लोकगायक लोग सुननिहार के झूमे खातिर अलचार क दिहल। मोहम्मद खलील जइसन गायक 'सुमीरिले सारदा भवानी, पत राखीं महरानी' (भोलानाथ गहमरी) नियर गीतन के गाके अमर क दिहलन।

बाकिर चंद गायकन के छोड़िके अधिकतर लोग पइसा कमाये खातिर अश्लीलता आ फूहड़ता के मए सीमा लांघि गइल बा। आज स्थिति ई बा कि भोजपुरी में दूगो माने राखेवाला गीतन के भरमार बा अइसने गीत होटल, बस, ट्रक, चाह–पान के गुमटी आ दोकानन में धड़ल्ले से बाजत बाड़न स। कैसेट–सीडी कंपनी के मालिक अइसने करेलन आ उहो लोग सस्ती लोकप्रियाता पावे खातिर अइसने फूहर आ दूगो अरथ वाला गीत चुनेला।

भोजपुरी गीत के सीडी–कैसेट में आजकाल्ह कई तरह के घपलो हो रहल बा। एह लोकभाषा के बढ़त लोकप्रियता के लखि के दोसरो भाषा के गीत भोजपुरी गीत के नांव प जारी क दिहल जाता। नतीजतन मगही, मैथिली, अंगिका, बज्जिका के गीतो भोजपुरिए गीत कहा रहल बा। सदियन से गवात आइल कुछ लोक प्रचलित पारम्परिक गीतो के भाई लोग आपन मौलिक गीत घोषित क देले बाड़न। स्थिति ई बा कि कवनो दिवंगत गीतकार के गीत कवनो नया गीतकार के नाँव से कैसेट में डालि दिहल जाता।

अधिकतर कैसेट कंपनी गायक–गायिका से अनुबंध करेली स आ एकमुश्त रकम गायके के दे देली स, जवना में साजिन्दा आ गीतकारो के हिस्सा होला, गायक साज–बाज वालन के हिस्सा त दे देलन, बाकिर गीतकार के हिस्सा खुदे हजम क जालन। हं, चंद गायक एकर अपवाद जरूर बाड़न। पहिले कैसेट का ऊपर गीत के मुखड़ा आ गीतकार के नांव छपत रहे, बाकिर अब अधिकतर कंपनी गीतकार के नांवों ऊपर छापल बंद क देले बाड़ी स। फेरु त ओह लोग ना त नांवे मिलता, ना पइसे।

आज जरूरत बात के बा कि अश्लील गायन करे वाला गायकन के सामाजिक बहिष्कार कइल जाउ आ पत्र–पत्रिकन, मीडिया आ गोष्ठी–सम्मेलन में अइसना लोग का प्रति निंदा–प्रस्ताव पारित कइल जाउ। अश्लील, फूहर–पातर गायकी का खिलाफ आन्दोलन चलावे के सख्त जरूरत बा। समाज में गायकी के नांव पर अइसन जहर घोरि के प्रदूषन फइलावे वाला गायक, गीतकार आ कैसेट कंपनी का खिलाफ जब ले कमर कसि के कानूनी आ आन्दोलनात्मक कड़ा रुख ना अपनावल जाई आ जब ले स्वस्थ–स्तरीय गीत–गायकी के पुरस्कृत–सम्मानित ना कइल जाई, तब ले भोजपुरी साहित्य–संस्कृति के अस्मिता दांव प लागले रही। ••

पो0 बा0–115, पटना–800001 (बिहार)

ललित–व्यंग

भोजपुरी साहित्य में 'मित्र मंडली' के योगदान

बरमेश्वर सिंह

भोजपुरी साहित्य में साहित्यकारन के आपन–आपन मित्र–मंडली बा। जेकरा नइखे ऊ भकोल बा, करमजरू बा। बाकिर, हमरा सँगे अइसन दर्दनाक स्थिति नइखे। हमरा एगो मजिगर मित्र–मंडली बा।

अइसन कुल्हि मित्र–मंडलियन के एगो खास विशेषता होला। बलुक आचार–संहिता कहल जादे ठीक रही। जवना के अनुसार मित्र–मंडलियन के सदस्यगण के एक–दोसरा खातिर सुकर्म ना, बलुक कुकर्म करे के पड़ेला। दरअसल, जब कवनो सम्मानित सदस्य के आत्मा में अपना खातिर कुकर्म करवावे के सुविचार जागृत होला, तब ऊ सबसे पहिले अपने मित्र–मंडली के कुकर्माचार्य किसिम के सदस्य से सम्पर्क करेला। फिर ऊ ओह महामानव के खुशामद करेला, जै–जैकार करेला, चापलूसी के हद तक गुणगान करेला। तब जा के ओह कुकर्माचार्य महोदय के आसन डोलेला, उनुकर मन पसीजेला। फिर त ऊ महानुभाव अगिला खातिर कुकर्म– क्रिया करे खातिर खुशी–खुशी तइयार हो जालें। चूँकी अइसन कुल्हि कुकर्म–क्रिया लिखित रूप में सुसम्पन्न होला, एह से कुकर्माचार्य लोगिन के कलम अगिला खातिर ओह बाछी के समान होला, जवना के पोंछ पकड़ि के कलि–काल के प्रेतात्मा सहजे भवसागर पार करि जाले। सचहूँ, अजबे मनोरंजन दृश्य रहेला ओह घड़ी। ना अगिला के कवनो लाज–शरम ना पछिला के कवनो पछतावा। सब कुछ भूल–चूक, लेनी–देनी लेखा सहजे सुसम्पन्न।

साँच पूछीं त मित्र–मंडलीयन के ई विधान ना खाली ठीक बा, बलुक समसामयिको बा। काहेंकि, एही विधान का चलते आज के व्यक्तिवादी समाज में ऊ आपन समाजवादी स्वरूप के जिन्दा राखे में समर्थ भइल बा। समाज–शास्त्रियन के कहनाम त इहवाँ तक बा कि आवे वाला समय में समाजवादी स्वरूप के दर्शन खाली पियक्कड़न, लम्पटन, तस्करन, अपरराधियन आ भोजपुरी साहित्य के मित्र–मंडलियन का बीच देखे के मिली। एह से, आज जब, घर–समाज टूटि रहल बा, तब भोजपुरी–साहित्य के मित्र–मंडलियन के समाजवादी स्वरूप के जोगा के राखल ऐतिहासिक आवश्यकता हो गइल बा। अब जे भोजपुरी–साहित्य के मित्र–मंडलीयन के समाजवादी स्वरूप के धराऊँ चीज ना मानी, ऊ उफर पड़ी, एह में दू मत नइखे।

बकिर, एह बात बा। चुगलन से जब सीता जी बचल ना रहि सकली, तब भोजपुरी–साहित्य के मित्र–मंडलीयन के निरीह सदस्यन के कवन बिसात? बेचारन के एह घड़ी कतना फूँकि–फूँकि के आपन डेग बढ़ावे के पड़त बा कि का कहल जाव? तइयो, लुत्ती लगावे वाला कवनो ना कवनो बेंवत से लुत्ती त लगाइये नू देत बाड़ें? असल में हमनी का देश के जनसंख्या में जे बृद्धि भइल बा, ओह में जवना अनुपात में राम के बंशज बढ़ल बाड़ें, ओह से बेसी अनुपात में रावण के वंशज त बढ़ले नू बाड़ें?

खैर, अब तनी डॉ0 शंभूशरण जी जइसन विद्वान आ सुधी समीक्षक के जरनियहपन देखल जाव। उहाँ के एगो चिट्ठी भोजपुरी–साहित्य पत्रिका के जुलाई–अगस्त 1998 के अंक में छपल बा। जवना के अंश बा–'एने स्वयं आचार्यत्व आ अपना पर समीक्षात्मक अइसन बढ़ रहल बा कि सीमा पार करके कइएक मेरुहीन लेखन बंधु लोग अपना तथाकथित समीक्षक मित्रन से अपना ऊपर कुछ जम के लिखवावे खातिर निरंतर दबाव बनवले चल आ रहल बा। चाहे जे होय, जियते जी आपन साहित्यिक श्राद्ध कर जाय वाली ई प्रवृति ठीक नइखे आ एह से समीक्षात्मक भ्रष्टाचार के प्रोत्साहन मिली।'

अब भला कहीं त ? ठीक कहल गइल बा कि आज के युग में केहू के फरल–फुलाइल, केहू ना देखि सके। का डॉ0 शंभूशरण जी जइसन भद्र मनई के सोच अइसन 'थड किलासी' होखे के चाहत रहे? सदस्यगण डॉ0 साहेब के उक्त के गम्भीरता का संगे लिहले बाड़ें। साँच कहीं त, ओह लोगिन के डॉ0 साहेब के उक्त चिट्ठी ओइसहीं अनकुसावन लागल बा, जइसे –जय हनुमान' टी0वी0 सीरियल का बीच 'माला डी' भा 'कंडोम' के विज्ञापन अइला पर आस्तिक दर्शकन के लागेला।

अचरज बा, का डॉ0 शंभूशरण जी के अतना पता नइखे कि जियते जी श्राद्ध त ओकर होखे के प्रावधान बा, जेकरा कुल में 'रहा ना कोई रोवन हारा।' मित्र–मंडलीयन के सदस्यगण के अइसन दयनीय स्थिति कतई नइखे। इहवाँ त हरदम 'तीतर के दो आगे तीतर, तीतर के दो पीछे तीतर' के ना खाली चमत्कारिक, बलुक गौरवशाली स्थिति बा। एह से, इहवाँ त जीयते जी श्राद्ध होखे के सवाले नइखे उठत!

हँ, इइवों श्राद्ध होई आ होई त जम के होई, विधिवत होई। जवना का अनुसार पहिले 'काल–कव लित' भइल जाई। फिर 'श्मशाने च' होई। तब जा के श्राद्ध होई। हम पूछत बानी कि जब डॉ0 साहेब में मित्र–मंडलीयन के सदस्यन के काल–कवलित होखे तक धैर्य राखे के कूबत नइखे, 'श्मशाने च' में शामिल होखे भर शिष्टाचार नइखे तब एकेबार श्राद्ध के पूड़ी

तूड़े के अनाधिकार चेष्टा कइल, का उहाँ के शोभा देत बा? का उहाँ का अतना नइखीं जानत कि 'उत्सवः व्यसने चैव, दुर्भिक्षे राजसंकटे। राज द्वारे, श्मशाने च, यः तिष्ठति स बान्धवाः।।'

खैर, सभे के आपन स्वतंत्रता बा। डाक्टरो साहेब के अपना मन के मुताबिक करे के स्वतंत्रता बा। बाकिर, हम त भाई 'उदार चरितानाम' बानी। हमरा से दुःख कातरता ना देखल जाय। लगे आके खखने वाला कवनो साहित्यिक जीव के निरास कइल हमरा से ना सपरे। ओह घड़ी हम इहो ना देखीं कि हमरा आगू में खाड़–खखनत याचक मेरुहीन बा कि सुमेरू बा। असल में डॉ0 शंभू शरण जी आ हमरा में बुनियादी फर्क बा। उहाँ का समीक्षक बानी आ हम शुभ चिन्तक बानी। जाहिर बा, कवनो शुभ चिन्तक 'तथाकथित' कहइला के गम ना करे।

बात 'भोजपुरी–साहित्य में 'मित्र–मंडली' के योगदान से शुरू भइल आ बत बँवरी अइसन बढल कि ऊ श्राद्ध तक पहुँचि गइल। अब जब बात श्राद्ध तक पहुँचिये गइल बा, तब एगो अउरी श्राद्ध प्रसंग पर बतिया लिहल अप्रासंगिक ना होई।

भोजपुरी पत्रिका 'परास' के जुलाई–सितम्बर 2014 अंक हिन्दी–भोजपुरी के यशस्वी साहित्यकार स्व0 मधुकर सिंह विशेषांक रहे। जवना पर डॉ0 तैयब हुसैन 'पीड़ित' जी के पाठकीय प्रतिक्रिया 'परास' के जनवरी–मार्च 2015 के अंक में छपल बा। पीड़ित जी मधुकर सिंह पर डॉ0 बलभद्र, जितेन्द्र कुमार, राम निहाल गुंजन, आ सुमन कुमार सिंह के आलेख छाप के त उनका के भोजपुरी में अमर करे के कोसिस कइले बानी, बाकिर भगवती प्र0 द्विवेदी आ बरमेश्वर सिंह के आलेख से उनकर दोबारा सराध करा देले बानीं।'

भाई 'पीड़ित' जी! बस दोबारा श्राद्ध करावल देखि के रउवा चक चिहाइल बानी। रउवा खातिर ई अटपटाह बड़लो बा। बाकिर खातिर हमनी किहाँ हर साल 'पितृ पक्ष' होला। श्राद्ध के ममिला में हमनी का कतना उदार बानी, तनी रउवो समझि लिहीं– ये बान्धवा अबान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।

ते सर्वे तृप्तिमायान्तु यश्चास्मत्तोऽ भिवाञ्छति।।
ये मे कुले लुप्तपिण्डा पुत्रदारविवर्जिता।
तेषां हि दुत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम्।।
अतीत कुल कोटीनां सप्तद्वीपनिवा सिनाम्।
ये चास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते तृप्युन्तु मया दत्तैर्वस्य निष्पीऽनोदकैः।।

एह से श्राद्ध के ममिला में हमार उदारता संस्कारगत बा। भाई! हमार सोच दरअसल, ई बा कि जब हमरे दू हरफ लिखि दिहला से केहू के गंगा लाभ हो जा रहल बा त, हम कोताही काहें के करे जाई? इहवाँ हमरा जेहन में एगो अउरी बात बा। ऊ ई कि जब केहू 'प्रदूषण के मोटरी' के 'प्रशस्ति क पिटारा माने खातिर तइयार बा, तब हमरा खामख्वाह चिन्हइला के कवन काम बा? कवनों रचना तब तक कुवांरी रहेली, जब तक ओकरा में प्रेस के सियाही ना लागे। प्रेस के सियाही लगते कवनो रचना ओही तरी एहवाती हो जाली, जइसे सेनुर लागते कवनों लइकी। बाकिर पहचान कुछ दिन बीतला के बादे होला। एह ममिला में तत्कालिक फतवा प्रायः गलत होला। एह से कवनों नवोढ़ा (रचना भा लइकी) के केहू झट से पतिब्रता के सर्टिफिकेट दे रहल बा, त ऊ या त मूर्ख बा, या मूर्ख बने के नाटक करि रहल बा। अब झूठ का कहीं, 'मूर्ख बने के नाटक करे भर उदारता हमरो में बा। बाकिर, हमार इहे उदारता हमरा के फेरो में डालि दिहले बा। हम एगो निमन भँवरजाल में फँसि गइल बानी। असल में,'तनी हमरो पर दू लाइन' कहे वाला याचक–साहित्यकार एह घड़ी हमरा लगे भेड़िया–धसान जुटे लागल बाड़ें। बाकिर, हमहूँ कम मँजल खेलाड़ी थोड़े हईं? हर समस्या के काट हम जानीला। एहू समस्या के काट खातिर हम एगो 'हिप' जारी करि दिहले बानी कि याचक–साहित्यकार भाई लोग अपना ऊपर खुद अपने लिखि के हमरा लगे ले आवसु। हम नीचे आपन दस्खत बना दिहल करबि।

बाकिर, एने आके हमरा आगू दू गो नया समस्या खाड़ हो गइल बा। पहिल समस्या त ई बा कि मित्र–मंडली खातिर प्रतिबंधित सीमा में एह घड़ी कुछ घँघरिया आ चिरकुट टाइप कुल्हि जीव अपना आप के अब कविता के वस्तु माने लागल बाड़ें। ई लोग अपना पर कविता लिखवावे खातिर हमरा आगू आके हथजोड़ी तक करे लागल बाड़ें। भला कहीं त! गद्य रहे त गद्य! अब ई पद्य के पचड़ा? ना–ना, एह छन्द के छलछन्द में पड़े खातिर हमार आत्मा हमरा के गवाही नइखे देत। एही से, एह घड़ी हम बड़ा पेशोपेश में बानी। बाकिर, आशा के एगो किरण ई दिखाई दे रहल बा कि अब घँघरिया–चिरकुट टाइप के ई लोग अलबला के खुद एक–दोसरा पर कविता लिखे शुरू करि दिहले बाड़े। नतीजा ई भइल बा कि भोजपुरी–साहित्य फेने–फेन हो गइल बा। दूध निम्न पड़ि गइल बा आ 'फेन' नीमन हो गइल बा। अब ई ममिला तबे फरियाई जब दूध अउँटाय खातिर आगि पर चढ़ी।

हमार दोसर समस्या अपेक्षाकृत तनी गम्भीर बा। असल में, भोजपुरी–साहित्य के 'बुढ़ऊ' लोग हमरा से

एह घड़ी एकदम फिरंट हो गइल बाड़ें। उहाँ सभनी के हमरा ऊपर ई इल्जाम बा कि हम असंवैधानिक रूप से उहाँ सभनी वाला काम उठा लिहले बानी। जवना के चलते उहाँ सभनी के सामने बेरोजगारी के समस्या खाड़ हो गइल बा। एकरा अलावा, उहाँ सभनी के जे घर–बइठल पूछ–आदर होत रहत रहे, प्रचार–प्रसार होते रहल रहे, ओहू पर यानी फिरि गइल बा।

हम अपना 'बुढ़ऊ' लोगिन के दरद बूझि रहल बानी। ठीक से त ना, बाकिर मोटा–मोटी अब हमहूँ बुढ़ाइये चलल बानी। एकरा अलावा हम संस्कारी जीव बानी। एह से, 'बुढ़ऊ' लोगिन में पुनर्प्राण प्रतिष्ठा करे खातिर गम्भीरता पूर्वक विचार कइल हमार धर्म हो गइल बा। एह से, हम गंगाजी का ओर आपन हाथ उठा के ई घोषणा करि रहल बानी कि 'बुढ़ऊ' लोगिन के फिर से 'बुढ़ऊ देवो भवः' बनावे खातिर हम उठा ना राखबि। हालांकि, हमरा इलाका में एह घड़ी हल्ला त ई बा कि 'बाबार जूलुम चोलबे ना।' तइयो, हम 'बुढ़ऊ' लोगिन के विश्वास दिलावल चाहत बानी कि हम तवन उपाय करबि कि 'बाबार जूलुम खूब भालो कोरे चोलते थाकबे।'

खैर, भगवान भोजपुरी–साहित्य के मित्र–मंडलियन के सलामत राखसु आ हमरा के अइसन बनावसु कि हमरा 'जिह्वा में मधुमत्तता' बनल रहे। ••

ग्रा0+पो0– धनडीहा, जिला–भोजपुर
(बिहार)– 802160, 9430605856

जौहर शफियाबादी के दू गो गजल

जौहर शफियाबादी

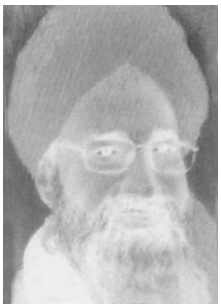

[एक]

सुनलीं हाँ जबसे हम सजी, ओ अजनबी के बात।
सोचे के बाटे पड़ गइल, अब जिन्दगी के बात।

किरिया कउल करार के देखत कहाँ बा लोग
केतना बदल गइल बा अब आदमी के बात।

अचके में बान लागल, जिया कसमसा गइल
रहनी हाँ सुनत आँख में जादूगरी के बात।

अब आदमी के भाग बा 'ऐटम' का माथ पर
राउर भइल पुरान सजी फुलझरी के बात।

अब का उमिर, जे पूस के, दिन फूस के भइल
पूछत बा लोग हमरा से अब आशिकी के बात।

[दू]

सब फूल हमरा गाँव के काहे उदास बा।
जब राम आ रहीम के इहवाँ निवास बा।

सब कुछ हेरा गइल बा, जिनिगी के भीड में
के हाल चाल पूछी अब, केकरा सँवास बा।

विश्वासघात हमरा से, के ना भला कइल
ई भाग बा हमार कि फूटल गिलास बा।

मन ना रँगा के गाँव के चोला रँगा गइल
मिथिया के चारू ओर अब जीयत पियास बा।

गतरे–गतर छलाव बा, घाती जवन नजर
ओकरो बचन में देखलीं कतना मिठास बा।

••

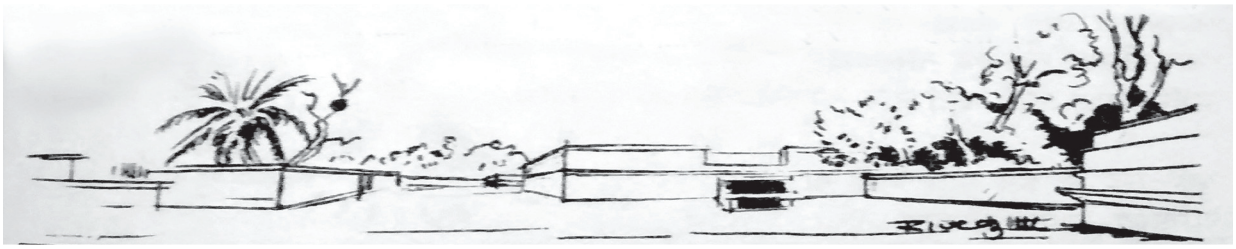

आवारा आतंक

वर्ल्ड ऐन्टी रैबीज डे (28 सितम्बर) पर एगो विशेष पड़ताल

कृष्ण कुमार

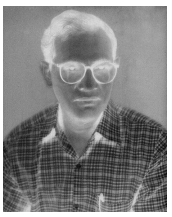

कहाब हऽ – 'कातिक अइलें, तीन बउरइलें– तीतीर, कुकुर, धान....।' बाकिर जब से आदमी कुसकाइल छोड़ देलस, पत्थर गावल छोड़ देल, फेंड़–रूख कटाये लागल, पहाड़ ढहाये, लागल, नदी बन्हाये लागल, महीनवन धरती डोले लागल, बादल फाटे लागल, प्रकृति के एड्स हो गइल तब से ई कहाउत फेल हो गइल। आदमी के साथे तीतर, कुकुर आ धान सालो भर थोड़–ढ़ेर बउराये लगलें। जवन कुत्ता कातिक में तमाशा देखावत रहन सऽ, अब ऊ नाटक कुआरे से शुरू हो जाता। तब मद से मातल कुत्ता आ कुत्तिया आदमी भा जानवर के भँभोरे में तनिको देरी ना करेलें सऽ। कुत्तन के काटे के सूचना सुनात रहेला। कुआर आ कातिक में त एह घटनन के अधिकाई हो जाला। शायद एही से हर साल चढ़ते कुवार 28 सितम्बर के 'विश्व एंटी रैबीज डे' मनावल जाला....।

जिनिगी सुख–दुख के दूनों किनार धइले मनमानी चाल से चलत रहेला। सुख के दिन त पुअरा के तपला लेखा होला, बुझइबे ना करे। बाकिर दुख के दिन कटले ना कटे। कुछ दरद त लगलाहे उड़िया जाला। बाकिर कुछ ओइसन दरद होला जवन ताजिनिगी मन के सालत रहेला।

हम रावा के भोजपुर जिला के गउरा बाजार ले चलऽ तानी जहंवा सारंगपुर निवासी नथुनी साह सड़क के किनारा जिलेबी बेच के आपन घर चलावऽ तारें। उनका ई जखम आज से पनरह बरिस पहिले मिलल रहे। बाकिर आजुओ नथुनी ओह वाकया के सोच के फफकि जालें। बेरा के मउअत माई के भी बहुत अखड़ल। बेटा के फोटो के साथे ओकर इयाद दिआवे वाला सभ सामान घर से हटा दिहल गइल। बाकिर जवन इयाद सीना में पैबस्त हो गइल रहे, ओकरा के कहवां हटावल जाउ.....?

ओह लोग के एगारह बरिस के लइका रहे प्रदीप। बाप–मतारी से बेइंतहा प्यार करत रहे। एक दिन बाबू के ढूंढ़त सड़क पर गइल। आ 'आवारा आतंक' के शिकार हो गइल। एगो आवारा कुत्ता ओकरा के तड़िया लेलस। प्रदीप जान लेके परइलें। बाकिर कुत्ता ना मानल। तनिका दूर जात–जात पीछा से ओकर फीली धके कुत्ता लटकि गइल। कसहूं गीरत–महरात घरे आइल प्रदीप। रिस्तेदारन के सलाह प नथुनी बेटा के झोलाछाप चिकित्सक से एंटी रैबीज वैक्सीन (एआरवी) आ टिटबैक लगवा देलें। ऊ झोलाछाप चिकित्सक प्रदीप के एगो एआरवी लगवला के बाद शेष चार डोज के दवा घरे ले जाये खातिर दे देलस। चारों इंजेक्शन लगवला के करीब एक महीना बाद अचानक प्रदीप के जबड़ा आ रीढ़ के हड्डी में दरद भइल। चिकित्सक के राय से ततलबजे उनकर माई बाबू प्रदीप के साथ लेले संक्रामक रोग अस्पताल पहुँचले। छतीस घंटा तक अन्हार ठंढ़ा कमरा में जिनिगी आ मउअत से संघर्ष में प्रदीप हार गइलें। चिकित्सक बांचल पंचवा एआरवी वाइल देखते कहलें, ''सही तापमान में ना राखे से दवा बेकार हो चुकल बा.....।''

बारह बरिस के अरविन्द के कहानियो कुछ ओइसने बा। दुपहरिया में कोचिंग से पढ़ि के ऊ साइकिल से घरे लवटत रहे। तीन गो आवारा कुत्ता ओकरा के पीछा कइलें सऽ। बांहि में दांत धंसा देलें सऽ। पंजा से ओकर पेट जखमी हो गइल। हमला अतना तगड़ा रहे कि आजुओ अरविन्द दहशत में बाड़ें। आगे के ओकरा जीवन खातिर भगवान मालिक बाड़ें काहे कि ऊ एआरवी के एको डोज नइखे लेले।

आईं, अब प्रतिष्ठित घर के एगो लइका के कहानी से वाकिफ होईं जा, जेवना के जान भ्रम मे चल गइल। ओइसे त आवारा कुत्ता गरीब बच्चन के ही आपन शिकार बनावेलें सऽ। बाकिर प्रतिष्ठित आ वीआईपी भी रैबीज के लेके फैलल भ्रम में फंस के जान से हाथ धो देलें। प्रोफेसर साहब के अठारह बरिस के बेटा के पांच साल पहिले एगो पालतु कुत्ता काट लेलस। घर वाला लोग ओह कुत्ता के आतना पीटाई कइल कि तीन दिनन में ओकर मउअत हो गइल। परिजन लोग बेटा के कवनो उपचार ई सोच के ना करावल कि पालतु कुत्ता कटले बा, ओकरा से कवनो खतरा नइखे। मात्र एको महीना ना बीत पावल कि ओकरा गला में जोर से दरद भइल। अन्न के त बात दूर छोड़ दीं, ओकरा से पानी घोंटाइल मुश्किल होखे लागल। कार पड लादि–लूदि के सदर अस्पताल पहुँचल लोग। एआरवी के साथ इम्युनोग्लोबिन लगावल गइल। बाकिर अफसोस कि सभ सुविधा होखला के बावजूद ओह लइका के ना बचावल जा सकल.....।

एइजा अपनो लइकाईं के एगो घटना के इयाद हमरा जेहन में बहुते आवऽ ता। एह से ओकर चरचा कइल हमरा वाजिब बुझाता–तब हम अंदाजन नव–दस बरिस के रहीं। हमरे गांव के आ हमरे टोला के बात हऽ। मोहन सिंह के एगो करिआ रंग के कुत्ता रहे। बड़ा कटाहा। हम बचपन से ही कुत्ता– प्रेमी रहीं। हमरा घरे देसीला कुत्ता हमेशा पोसात रहे। एगो मरे तले दोसरा आ जात रहे। जाजाति के अगोरिया खातिर रात में खेते–खरीहानी बाबूजी ओहनिन के लेके साथे

जात रहीं। दिन में ओहनिन के साथ अक्सर हां हम खूबे खेलत रहीं। ओहनिन के मुँह खोलीं आ ओकर दांत गिनी। कवनो आवारा कुत्ता भेंटा जा सऽ तऽ ओहनिन के बिना सुहुरवले हमरा चैन ना मिलत रहे। घरे के नियरे एगो बदगद के फेंड़ रहे। ओह फेंड़ के नियरा– पासे पूरा फैलांव रहे। जाड़ा के दिनन में सुरूज निकलते घाम खाये खातिर संउसे टोल–पड़ोस के लोग ओइजा जूमत रहन। तब हमनिन के मदारी के खेल, बाइसकोप सभ ओइजे देखत रहीं जा। आजु त ना ऊ बरगद के फेंड़ बा आ ना फैलांव जगहा। सभ अतिक्रमण के शिकार हो गइल बा। ओह दिन संजोग अइसन भइल कि एगो फेरी वाला ओहि बरगद लगे कपड़ा बेचत आइल। हमार फुआ आ दादी फेरी वाला से लुग्गा–झुग्गा मोलावत रही। हमहुं ओह लोग के साथ ओइजा पहुंचत रहीं। हमार मन ना मानल। आदत से लाचार रहीं। हम ओह कुत्ता के सुहुरावे के काम लगवनी। ऊ जागल आ गुरनाइल। तबो हमार काम जारी रहे। तब ऊ कुत्ता तनिको देरी ना कइलस। पहिला वार हमरा दाहिना गोड़ के चापा प कइलस। ऊ अतना बरिआर दांत गड़वलस कि चावा में आर–पार छेद हो गइल। ओह घाव के दाग आजुओ हमार चावा प मौजूद बा। हम अपना बचाव में दरद से तड़पत हाथ–गोड़ चलावत चिचिआये लगनी। कुत्ता बरिआर रहे। हमरा के पटकि के पेट, पीठ, गाल सहित संउसे देहि खूने–खून क देलसि। अलगा से 'हां..... हां....' कहि के ओहिजा मौजूद सभ लोग चिचिआइल। बाकिर ओकरा पंजरा आवे के केहु के हिआव ना परल। मिनटों में ऊ काम सपरा के पुरूब ओरे डीह में पराइल। हमहूं रकाटना के बेटा जनमल रहीं। चार बहीनिन के बाद घर में रोवन–पीटन लागि गइल। अब हमार ओझाई–दवाई शुरू भइल। सबसे पहिले सात गो इनार–कुंआ झकवावल गइला फेरू जयानन्द मिसिर आ नन्हकु मिसिर अइलें। ऊ लोग हमार पुरोहित रहलें। ओह कुत्ता के देहि के सात गो बार नोचि के उपरावल गइल। मोती लाल कोहांर के घर से चाक प के माटी आइल। मिसिर जी लोग ओह माटी में कुत्ता के बार डालि के दू गो गोला बनवलें। ओह गोला से हमरा के झरलें–फूंकलें। शिवानन्द पाठक के होमियोपैथिक दवाई भइल। अंदाजन डेढ़ महीना में सभ घाव सुखि–साखि के भुसा हो गइल। ठीक हो गइनी आ आजु पैंसठ के उमिर तक ठीके बानी। बाकिर आजुओ जब कबो ओह घटना के इयाद हमरा आवेला, त रोईंआ खाड़ हो जाला। बाकिर ई भइल कि ऊ घटना हमरा के कुत्ता–द्रोही बना देलस। आजुओ हमरा आवारा कुत्तन से ओतना डर लागेला, जतना हाथी से ना लागे। ई आजु से बावन बरिस पहिले के बात हऽ। तब गदहा जिलेबी खात रहे। दू रूपये–डेढ़ रूपये सेर (लगभग एक किलोग्राम) के भावे सरसों तेल आ ओहि भाव में मांस–मछरी भेंटा जात रहे। एक सईं रूपये के भावे बिगहा टोपरा। उहो रेहन ना बई। गदहपूरना, कुकुरौंधा आ भेंगरिआ के पतईन के रस से कइसनो घाव छू मन्तर आ तुलसी के पतई के काढ़ा से कइसनो बोखार नव–दू–एगारह। ओह घरी सूई–दवाई के चलावा कम रहे। बाकिर आजु तऽ जतने दवाई बढ़त गइल, ओह अनुपात में रोग दोगिनिआत गइल....।

आजु आवारा कुत्तन के संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ल जा रहल बा। हरेक कुत्तिया हर साल पांच से सात बच्चन के जनम देले। एह बिरादरी में बांझ बहुते कम होली। बारह–तेरह साल के जीवन काल में ई कम से कम दस बार बच्चा जरूर देली। लिहाजा उनकर तादाद दूगुना, दू से चार ना, वरन दू पर चार, माने चौबीस के हिसाब से बढ़ रहल बा...।

ओइसे कुत्ता बहुते सुकवार जीव होलें। गरमी बरदास्त करेके क्षमता ओकनी में कम होला। एह से दिन में गनीमत रहेला। काहे कि सुरूज के ताप आ अंजोर से ऊ भकुआइल आ सुतल रहेलें सऽ। जीभ निकाल के हांफत नाली–गड़हा के गंदा पानी में लेवाड़ मारेलें सऽ। बाकिर सांझि ढ़लते आफत गुजरे लागेला। गांवन से लेले शहरन तक ओइसन कवनो गली–कूचा, चौमोहान, तीन मोहान खाली ना रहेला जहंवाँ आवारा कुत्तन के जमात मुस्तैद ना होखे। चार पहिया प चले वाला के त एह जमात से कवनो दिक्कत–परेशानी ना होला। बाकिर दूपहिया वाहनन के गति तेज करे खातिर मजबूर करे में एहनिन के तनिको देरी ना लागे। ओइसन में पैदल जातरियन के का हाल होला। ऊ बतावे के जरूरत नइखे। कुत्तन से बच के भागे में लोग हाथ–गोड़ तुरवाइ लेलें भा नाक–भुभुन फोरवा लेलें....।

कुत्तन के काटे के अलग–अलग परिस्थिति होला। सामान्यतः आवारा कुत्ता दौड़ के भा दौड़ा के, अचानक ओहनिन के देह प गोड़ पड़ला प भा बाइक–साइकिल चढ़ला प, भा जानबूझ के छेड़खानी कइला पऽ ऊ काटेलें सऽ। ओइजे पालतु कुत्ता नचवला, खेलावला, खाना देबे में देरी भइला प भा खाना खिआवे में काट लेले सऽ।

कुत्तन के संख्या जइसे–जइसे बढ़ रहल बा, ओहि अनुपात में पीड़ितन के संख्या भी बढ़त जा रहल बा। बिहार राज्य के कुत्तन से पीड़ित लोगन के संख्या वर्ष 2009 में कुत्ता कटला से पीड़ित के संख्या 38, 912 रहे, जवन 2013 तक बढ़ि के 4,19,508 हो गइल।

रावा ई सोच के आश्चर्य होई कि वर्ष 2014 में जनवरी से अगस्त तक सिर्फ पटना में कुछ 4933 कुत्ता काटे के मामला दर्ज भइल। एह आंकड़ा से तज़बीज कइल जा सकता कि पूरा बिहार में आ तब पूरा भारतवर्ष में कुत्ता से पीड़ित लोगन के संख्या कतना होई....? आदमी के अलावे हाथ में खेल हऽ। इतिहास गवाह बा, आ एह में एको पाई शक करेके बात नइखे कि कुत्ता ही आदमी के पहिला पालतु पशु हवें सऽ। बाकिर आज ई दिक्कदारी आ तबाही के सबब बन गइल बाड़ें सऽ। अबहिं हाल में नेशनल पार्क के आस–पास रहे वाला आवारा कुत्ता चार गो चीतन के जान लेलेलें सऽ।

हालात के थप्पर जब इन्सान के शिकार बनावेला त मुअला अइसन ऊ निढ़ाल हो जाला। आ फेरू अज्ञात शव। बाकिर जब इंसानियत मरेला तब....! एह हकीकत के बानगी देखावे खातिर आखिर में हम रावा के बिहार के सदर अस्पताल समस्तीपुर के पोस्टमार्टम हाउस में ले चलऽ तानी, जहंवा 15 सितम्बर 2015 के सांझि में एगो अजीबो गरीब घटना घटि गइल। चिकित्सक से पिहले आवारा कुत्तन के जमात एगो अज्ञात शव के पोस्टमार्टम कऽ देलें सऽ....।

बात अइसन भइल कि हसनपुर के पुलिस एगो अज्ञात शव के पोस्टमार्टम खातिर सदर अस्पताल, समस्तीपुर में ले आइल। लाश पोस्टमार्टम हाउस के खुला बरामदा में रख के पुलिस अस्पताल के कागजी काम में लागल। बस अतने में अस्पताल परिसर में मंडरात कुत्तन के फौज ओह शव प हमला बोल देलें सऽ। असमसान घाट आ पोस्टमार्टम हाउस के चसकल आवारा कुत्तन के आवारगर्दी जगजाहिर बा। ऊ एक नम्बर के गुंडा होलें सऽ। नजर बिचलल कि माल सफाचट। रास्ता से गुजरत स्वास्थ्यकर्मी आ राही लोग के एह दृश्य पर जब नजर परल तब ऊ लोग ओह कुत्तन के ईंटा–पत्थर से मार के भगवलें। बाकिर तले ले कुत्तन के झुंड ओह शव के कुछ हिस्सा के निवाला बना लेले रहन सऽ। शोर सुन के पुलिस शव के ओरे दउरल आइल आ उघरल इज्जत के बढ़िया से तोप–ताप के नियरे तैनात हो गइल.....।

कबीर के बानी, 'कहां तक कहै युगों की बात....' लेखा कुत्तन के हमला के लमहर दस्तान बा, जवन लिखला के मान में नइखे। कागज ओरा जाईं, कलम थाक जाई बाकिर तबो ओहनिन के कथा ना ओराई। एह से अब ओहनिन के जहर से बांचे के उपाई के चरचा कइल हमरा एइजा वाजिब बुझाता....।

कुत्ता जसहीं काटे ओहि घरी पीड़ित के प्राथमिक उपचार घरहीं में कऽ देबे के चाहीं। जतना जलदी हो सके घाव के जगह के साबुन से धो के पानी के धार ओह जगह प गिरावला में संक्रमण से बहुत बचाव हो जाला। तब अस्पताल ले जा के तुरंत एंटी रैबीज वैक्सीन लगवा देबे के चाहीं। काहे कि वैक्सीन के इम्यून पावर सात दिनन में विकसित होला। एगो पीड़ित के एआरवी के पांच डोज दिहल जाला। एगो एआरवी वाइल करीब 450 रूपया पर मिलेला। छाती के ऊपर कुत्ता के काटला पऽ हूमन इम्युनोग्लोबिन के वाइल लगावल जरूरी होला। एकर एक वाइल करीब तीन हजार रूपया में मिलेला। कुत्ता के काटल आ चाटल दूनों बाउर हऽ। कुत्ता के काटला के बाद जान जाये वाली बतकहीं हो जाला। एह से एह में देरी आ कंजूसी तनिको ना करे के चाहीं....।

कवनो पीड़ित के जवन कुत्ता कटले बा, ओकरा में रैबीज बा कि ना, ई कहल मुश्किल बा। जवन कुत्ता काट के मर जालें सऽ, ओकरा से पीड़ित आदमी के इम्यूनोग्लोबिन दिहल जरूरी होला। एक बे वायरस दिमाग तक पहुँच गइल तऽ दू–तीन दिन में पीड़ित के मउअत निश्चित बा। जवना कुत्ता प नजर ना रखल जा सके, ओकरा के पागल कुत्ता मानल जाला। एह से सरकारी अस्पताल में पीड़ित के जान बचावे खातिर टैक बैक आ एआरवी के साथे कैनिन इम्युनोग्लोबिन दिहल जाला। जबकि निजी अस्पताल में सिर्फ एआरवी देके इतिश्री कर दिहल जाला।

सरकार के तरफ से बड़का अस्पताल से लेले पीएचसी, एडिसनल पीएचसी तक एआरवी के पूरा व्यवस्था कइल गइल बा। कमोबेश सालों भर अस्पताल में दवो रहेला। बाकिर एगो सरकारी नियम ई बना दिहल गइल बा कि जे जवना क्षेत्र के निवासी बा ओहि क्षेत्र के अस्पताल में एआरवी लिहि। एह से कईंअक बार 'एड्रेसप्रूफ' ना होखला प पीड़ित के वापस घरे भा देसरा अस्पताल में जाये के परेला।

एहनिन के बेतहाशा बदल संख्या से सरकार के भी कान खड़ा हो गइल बा। हर साल एआरवी, हुमन इन्यूनोग्लोबिन आ कुत्तन के टीका पऽ पचार करोड़ रूपया खर्च हो रहल बा। सोचिं, एह से देश के कतना बर्बादी बा। अगर रावा कुत्तन से अपना के बचा ले तानीं, त देश के ई खर्चा साफ बांच जाईं....।

गाँवन में कुत्तन से बंचावे खातिर त अबटिं कवनो ओइसन पोखता इंतजाम सरकार के तरफ से नइखे भइल। बाकिर शहरन–नगरन में एह बचाव खातिर नगर निगम आ पशुपालन विभाग के जिम्मे जिम्मेदारी सौंपल गइल बा, जे कुत्तन के बंध्याकरण आ आबादी वाला इलाका के ओहनिन से मुक्त राखे के काम करी। बाकिर ई दूनों विभाग गैर जवाबदेह हो गइल बा। कुत्तन प अंकुश के व्यवस्था कागजी बा। एह में दू

राय नइखे। पहिले नगर निगम के पासे 'डॉग–शूटर' रहत रहन। बाकिर पेटा (पीपल फॉर एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनीमल्स) के दबाव के बाद से ऊ बेकार हो गइलें। काहे कि कुत्तन के मारला पऽ पाबंदी लगा दिहल गइल....।

हमरा कहे के लब्बोलुआब ई बा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के निर्मल गांगन के परिकल्पना, लाल किला से स्वच्छ भारत अभियान शुरू करे के घोषणा, स्मार्ट सीटी आ स्मार्ट गांव के 'ह्रदय' आ 'अमृत' जइसन महात्वाकांक्षी योजनन के लाभ के सपना तबे साकार होई, जब प्रशासनिक उदासीनता, मेडिकल अधिकारिन आ किरानिन के घोटाला आ दलालन के चंगुल से अस्पताल के मुक्त क के चिकित्सा संस्थानन के बदहाली सुधारल जाई आ समाज के अंतिम आदमी तक 'ए आर वी' आ 'इम्यूनोग्लोबिन' के 'वाइल' पहुँचावल जाई....। सरकारी इंतजाम तबे सुफल होला, जब जन–चेतना जागल रहेले। ••

महावीर स्थान, करमनटोला, आरा–802301

गजल

शशि प्रेमदेव

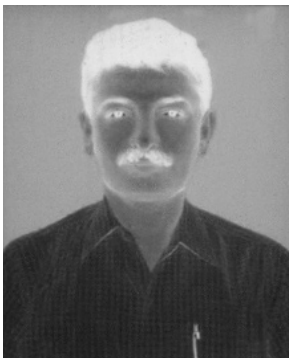

[एक]

अबले धरती का पाछा परल आदमी
अब चनरमा के नासे चलल आदमी

गोड़ आगा मुकी, चाल पाछा मुकी
एहतरे हो गइल बेकहल आदमी

नीक बाउर के कबले करी फैसला
देखि के आदमी के शकल आदमी।

मन परे त बतइहऽ हमहनो के तूँ
कवना जुग में फरिश्ता रहल आदमी।

लोग विद्वान काबिल त बहुते मिलल
ना मिलल बाकिर एगो सरल आदमी।

[दू]

चाँद छीपा के तातल सोहारी मतिन।
आँखि तरसे भुखाइल भिखारी मतिन।

मस्त फागुन के जोबन शहर के छटा
गाँव–डाँगर के धाँगल कियारी मतिन।

एगो दियना अन्हरिया से जूझत रहे
कवनो निरधन लड़ाकू बिहारी मतिन।

हम त सरधा से माथा नववले रहीं
उनका लागल इहो चाटुकारी मतिन।

आँखि कउड़ी कमइछा के जादू नियर
धार कजरा क छूरी–कटारी मतिन।

ले गइल नीन अँखियन क हमरा शशि
मारि के ऊ झपट्टा शिकारी मतिन। ••

अंग्रेजी प्रवक्ता, कुं.सि.इण्टर कॉलेज, बलिया

लघुकथा

नापसंद

कन्हैया पाण्डेय

खेलावन बाबा के लड़िका नोकरी का धइलस, लागल उड़े। खेलावनो बाबा लगले नकशा मारे। घर भर के गोड़ जमीन से छव इंची ऊपर हो गइल। पुरान हाल–बेहाल कुल्हि भुला गइल। दुआर पर जेही तिलकहरू आजाव खेलावन बाबा लगसु अपना लड़िका के गुणगान करे। सुननिहार के मन उजबुजा जाव। बाबा जवार में अइसन हवा बन्हलें, जइसे उनकर लड़िका हिण्डालको फैक्टरी के जनरल मैनेजर होखे।

तिलकहरू दउरे लगलन। एक से एक हिरोइन लेखा लड़िकी के फोटो घर में गँजा गइल। एगो आवे त एगो जाय। फोटो देखि के आंखि चुंधिया जाय बाकि कवनो फैसले ना हो पावे। अभी बड़की खोलि सिकहर पर रहे। मेहरारू दरबार के एहमें कवनो दखल ना रहे। बापे–बेटा में निर्णय भइल मुश्किल रहे। केहू के नाक लम्बा कहि के छांटि दिआउ तऽ केहू के कद छोट। केहू के दुब्बर–पातर तऽ केहू के मोट। कउड़ी में कसीदा कटात रहे।

''आखिर कहिया ले अइसन होत रही बबुआ?'' – खेलावन बड़कू के समझवले। तय भइल कि दूनो बाप–बेटा चलि के लड़िकी देखिहन आ पसन पड़ि जाई त उहंवे फैसला होई।

आखिर एक दिन इहो संयोग जुटि गइल। शहर से लइकी देखे के बोलावा आ गइल। निश्चित दिन पर दूनो बाप–बेटा अपना स्कूटर से लइकी के घरे पहुंच गइल। लइकी के बाप के नजर जब लड़िका पर पड़ल तऽ ऊ मरता क्या नहीं करता वाला रूप में चुप्पी साधि लिहलस, राम–रहीम कुछ ना बोललस।

लरिकी इंगलिश स्कूल में टीचर। फटाफट अंग्रेजी बोले वाली। गोर छरहर आ सुन्दर एतना कि ऐश्वर्या राय अइसन। ओकरा ई पता चल गइल रहे कि देखनिहार में लइको बा तऽ ऊ बड़ी खुश भइलि। ऊ ईहे तऽ चाहति रहे। ओकर विचार रहे कि शादी का पहिले लड़िका–लड़िकी दूनो के आपुस में सुभाव–बेवहार, विचार समझ लेबे के चाहीं।

लइकी देखनहरू के सामने चाय के ट्रे लेके आइलि आ पास में बइठि के चाय बनावे लागलि। लइका आ बाप दूनो के उजबुक अस फटलि चेहरा ओकरा पसन ना पड़ल। मन सइ मुट्ठी से एक मुट्ठी हो गइल। चाय दूनो जना के सामने सरका के जाए चहलस तब तक खेलावन बाबा सवाल दागि दिहलें– ''तुम जिंस–पांइन्ट क्यों पहनी हो?'' अइसन ऊटपटांग सवाल के ओकरा उम्मीद ना रहल। सुनते, जवाब दिहलस– ''हमारी इच्छा। जिंस–पांइट पहनने में कोई पाबंदी है?'' – ''और आप जो पहने हैं वह भारतीय पोशाक है?'' लइकिया लगले बबुओ से पूछि दिहलस– ''लडकों की बात कुछ और है''– ''तो लड़कियां किस बात में लड़को से कम हैं? कल–कारखानों से लेकर देश के ऊँचे–ऊँचे पदों पर लड़कियां काम कर रही हैं। लइका–लइकी में फर्क? लगता है आपलोग बड़े दकियानूसी विचार के हैं। आपकी सोच ऐसी ही थी तो लड़की देखने क्यों चले आए? मैं इस तरह के खयाल को नापसंद करती हूँ। कृपया आप दोनों हमारे घर से निकल जाँय।'' लइकी के चेहरा तमतमा गइल रहे।

काहें के बाप–बेटा के अब चाह घोटाव। चुपचाप बहरिया गइल लोग। 'गेट–आउट' भइला ले ज्यादा मलाल ओह लोग के ई रहे कि खुद लइकिये ओ लोगन के नापसन कइले रहे।••

कविता

सागर

हीरालाल 'हीरा'

काहें सागर खउलत बाटे ?

भीतर कतना दाह भरल बा
की केहू से डाह बढ़ल बा
गाज फेन ले रहि–रहि माथा
आइ किनारे पटकत बाटे।

सभ रतनन के खान समुन्दर
तबो तोख ना ओकरा भीतर
अब कवना धन–संपत्ति खातिर
छटपटात आ हहरत बाटे।

नदियन से ले मीठा पानी
खार बना, बिहँसे अभिमानी
सभकर यौवन चाट–चूसि के
निरलज अइसन लहरत बाटे।

'जड़–बुद्धी ई विनय न माने
रिसि अगस्त से झगरा ठाने
सिद्ध महतमा का अनुनय पर,
मुरूखन अइसन फउकत बाटे।••

कहानी

मुआवजा

रमाशंकर श्रीवास्तव

वकील साहेब मने मन हँसले– बड़ा फरछिन बाड़ऽ तहरा नदिया के तीन किलो दही केतनो महंगा होई त डेढ़ ना दू सौ रूपिया के होई। इ पाँच–सात सौ के काम ओही डेढ़ सौ में निबटावे के चाहत बाड़?

वकील साहेब खुल के बोलले– हम केतना दही खाएब बाबू साहेब। रउवा त अपना जवारे के आदमी बानी। रउआ से का छिपल बा। चार गो मुअकिल के भंइस बियाये–बियाये भइल बिया। सभे फेंसा–दही लेके अइबे करी। अच्छा अब काम के बात होखो। रउरा कागज में तीन फरीक के खेत बा। उ तीनू जाना के आके मजिस्ट्रेट साहेब के सामने दस्तखत करे के पड़ी।

– आ दसखवता केहू अउर से करा दीहल जाव त काम ना चली? साहेब कौनो दसखत मिलावे जात बाड़े।

वकील साहेब के मुंशी जी बगले में खड़ा रहले– ए जगधारी सिंह जी, रउआ तनी हेने आईं।

मुंशी जी कचहरी के कोनावाला गाछ के नीचे उनका के ले गइले। आजकल कचहरी में वइसहीं भीड़ बढ़ गइल रहे। भागादौड़ी लागल रहे। केन्द्रीय भू अर्जन प्राधिकरन का ओर से फोर लेन के नेशनल हाई वे बनावे खातिर आसपास के किसान लोग से जमीन लीहल जात रहे। पहिले त लोग आपन खेत के जमीन देबहीं के तइयार ना रहे मगर मुआवजा के भारी रकम के लालच में लोग के विरोध नरम पड़ गहल। जेतना रूपिया मिलत बा ओतना बीसो साल खेती के उपज से ना भेंटाई।

मुंशी जी जगधारी सिंह के धीरे–धीरे कुछ समुझवले। उ खुश होके तीन सौ रूपिया मुंशी जी के पाकिट में रख देहले आ बोललेे– अब रूउए ऊपर बा। हमार काम हो जाए के चाहीं।

मुंशी जी आके वकील साहेब के पंजरा खड़ा हो गइले। गाछ पर बइठल कौनो चिरई बिस्टा क के वकील साहेब के कुर्सी के बाँह गंदा क देहले रहे। मुंशी जी जमीन पर से अखबार के एगो टुकड़ा उठा के पोंछ देहले।

वकील साहेब मुंशी जी के कहले– ए हीरा बाबू, हउहा के ना खाएके। इ कोर्ट–कचहरी ह। कहीं कुछ पकड़–धकड़ में आ गइल त जेलो जाए के पड़ जाई। रउआ त बारह साल के एहीजा मुंशीगिरी करत बानी। स्टाम्प वेंडरी में कमाते बानी। ऊपर से गाछीतर क्लाएंट के ऊपर–नीचे समुझा के थोड़ा–बहुत खरहेरते होखब। घूसघास वाला काम में सचेत रहे के चाहीं। पिछला साल वाला साहेब नरम मिजाज के रहले। जवना नवका हाकिम आइल बाड़े उ कुछू ऊँच–नीच भइला पर सीधे गर्दनिए टीप दीहें। घिघियाहू के भी टाइम ना मिली। हमनियो के रोजी–रोटी मारल जाई।

मुंशी जी के चमड़ी मोट रहे। हंसत–मुस्कुरात सब सुन लेहले। मुआवजा के नाम पर कचहरी में लोग टूट पड़ल रहे। लोग के समुझावत आ नोट खरहेरत में एको सेंकेड के फुर्सत न रहे। मुंशी हीरा बाबू पिछला एक महीना से एही सब में लागल रहले। नश्तो–खाएके टाइम ना मिले। कौनो–कौनो क्लाएंट हाथ के दोना में चारगो रसगुल्ला सामने लिया के ध देव त मुंशी जी उहे खा लेस। एही टाइम उनकरा अपना मेहरारू के मजाक रहरह के इयाद पड़ जाव– जब ले मुआवजा के हल्ला–गुल्ला बा रसगुल्ला खूब चाभ लीं। सांझ के मुअकिल लोग मुंशी जी के दुआरो पर आके घेर लेस। हमनी के काम जल्दी करायीं मुंशी जी। जे लागी से दियाई।

मुंशी कहस– आरे त हम अपना से कुछ उठा धरत बानी। हम त चाहते बानी कि रउआ लोग के चेक मिल जाव त हमरो कुछ कल्यान होखो।

जात– जात कई जाना मुंशी जी के हाथ में सौ–पचास के नोट रख जास। नोट थमा देला से इत्मीनान हो जाव कि मुंशी जी काम करा दिहें। मुंशियो जी लोग के आश्वासन देबे में पाछे ना रहस– काल्ह आव कचहरी में, विचार कइल जाई। कवनो सीनियर वकील से पूछ दो डिसकस कइल जाई।

रात में वकील साहेब के लगे कइ आदमी चहुँपले– वकील साहेब, हमरा केस में जवन पेंच फंसल बा ओकरा के निकालल रउए बूता के बात बा। हमरा खेत पर बाइस लाख मुआवजा तय भइल बा। हमरा बूझाता कि जमीन के नापी में डिसमल के कुछ हेर–फेरी भइल बा। एगो डिसमल एने–ओने भइल त दू लाख गइल। ओमे एक हिस्सेदार बड़का भइया बाड़े। उ मद्रास में बीमार पड़ल बाड़े। उनकर से चलल–फिरल नइखे जात। अब अपने ही कवनो रास्ता निकालल जाव।

वकील साहेब कचहरी जाए खातिर जइसे रिक्शा पर बइठले शिवलाल महतो कागज के एगो पुलिन्दा लिया के उनकरा गोदी में रख देहले। इहे बा हमरा परिवार के कुर्सीनामा। रउए देख के तजबीज करीं कि हमार हक बनऽता कि ना।

दू गो पन्ना उलिट के वकील साहेब– तहरा कागज में बड़ा लफड़ा बा। जा ब्लॉक ऑफिस से कुर्सीनामा पर मुहर लगवा के मुआवजा ऑफिस ऑफिस में लेके आवऽ।

– आरे बाप रे बाप, ओहीजा त बड़ा बाबू बड़का मुँह बवले बइठल बाड़े। हजार के नीचे सुने के तइयारे नइखन। तीन दिन उनकरा के रसगुल्ला–इमीरिती के नाश्ता करा चुकनी। हर बेर कहेले – केस पुरान बा। पुरनका बस्ता

में खोजे के पड़ी। दू साल पहिले बाढ़ के पानी में दू आलमारी कागज गल–बह गइल। अब देखीं का होला। नाहीं त कमीशनरी ऑफिस से नकल मंगवाये के पड़ी। छपरा–मुजफ्फरपुर आवे–जाये में खर्चो–त बा।

मुआवजा अभी मिले के शुरू ना भइल रहे तले चपरासी से लेके साहेब लोग के पूजा करेके पड़ता।

ओने रामजी साह के मालूम भइल कि बड़का साहेब के दसखत बिना कागज आगे ना बढ़ी। उ दू हफ्ता के छुट्टी पर अपना गाँवे जा रहल बाड़े। छोट भाई के बियाह बा।

रामजी साह के छटपटी लाग गइल। मुंशी जी के पीछे लगवाले– हीरा बाबू, पतवार अब रउरे हाथ में बा। बड़का साहेब के गाड़ी पर चढ़े के पहिले केहू ते हमरा कागज पर उनकर दस्तखत करवा दीं।

मुंशी जी समुझवले– अउर ममिला होइत त कवनो गुंजाइसो निकालल जाइत। इ त मुआवजा के मामला बा। केन्द्रीय सरकार के भूअर्जन प्राधिकरण के अफसर लोग के कंट्रोल बा। कहीं गड़बड़ेशन भइल त साहबो के नौकरी जाई।

मुंशी जी साहेब लगे तीन–चार बेर दउड़ले। एक बेर एक दर्जन केरा लेके गइले, दुसरका बेर नारंगी ले गइले। साहेब आँख तड़ेर के देखले त हीरा बाबू मुलामियत से बोलले– आरे हुजूर, इ त अपने के लइका लोग खातिर लेले अइनी हं।

– हमारे यहाँ कवन लइका है जी, दूगो कलकत्ता में इंजीनियरिंग पढ़ रहा है। तीसरका अहमदाबाद में एम.बी.ए. कर रहा है। हीरा बाबू, तुम हमसे गैर कानूनी काम मत करवाओ। अब मेरे रिटोयमेंट का साढ़े तीने साल बच गया है। आखिरी में कवनो दाग लग गया तो तुम तो नौ दो ग्यारह हो जाओगे और मैं बैठा–बैठा भोगता रहूँगा। रिटायर होने पर अपना ही महकमा पहचानता नहीं। पहले जाकर एस.डी.ओ. ऑफिस के कम्पनसेशन सेक्शन से कागज कन्फर्म कराओ।

मुंशी हीरा लाल खाली हिरने के ना, साहिलो के पीठ सुहरावे के हुनर जानत रहले। हाथ में कॉट गड़ जाव तबो सोहरावल ना छोड़स।

उनकर तरह–तरह के चिरौरी पर साहेब नरम पड़ गइले। ट्रेन पर सवार होखे के पहिले फाइल पर दस्तखत क देहले। मुंशी जी उनकरा जेब में एगो लिफाफा रख देहले। साहेब एतने कह पहले– आरे ये सब क्या कर रहे हैं?

– हुजूर, लड़िका लोग के इंजीनियरिंग पढ़ावे में भी कम खर्चा नइखे।

तले प्लेटफार्म से गाड़ी खिसके लागल। साहेब रास्ता में लिफाफा खोल के देखले– पूरा डेढ़ हजार। मुंशी जी आके वकील साहेब के बतवले– आरे उ त हमरा खानी आदमी रहल ह जे देवता पाटे आ गइले। साहेब एगो नाजायज पइसा छूए के तइयार ना रहले। रोज एक घंटा हनुमान चालीसा के पाठ करेले। पूजा कइला के बादे मुँह में कुछ डालेले।

हम उनकरा से कहनी– ए सरकार, एह देस में जब बड़ बड़ साधू, महात्मा, बाबा, चपरासी, मिनिस्टर आ हाई अफसर लोग करोड़ों रूपया पचा जाता त रउआ दू चार हजार ले लेहला से का फरक पड़ जाई। बोरा के बोरा नोट हेने से होने हो रहल बा। आ रउआ सत्य हरिश्चन्द्र बनल श्मशान भूमि में पहरा देबे के तइयार बानी। एह भारतभूमि पर जब करोड़ों–अरबों के भंडा फूट जाई तब कहीं लोग के ध्यान जाई। रउआ कवनो ट्रेन–कोच के कंडक्टर ना नू हई कि पाँचे–सात सौ में खीरा आ घुघुनी खाये लागेब। गपचीं त लाख–करोड़ नाहीं त कमंडल–चिमटा लेके जंगल ध लीं।

एही बतिया पर साहेब आ मेम साहेब हँसे लागल लोग। खूब बतियाता है हीरा बाबू।

जगधारी सिंह के मुआवजा फेर फँसे–फँसे हो गइल। मुआवजा के चेक बीस लाख के बनल। तीनों फरिक मजिस्ट्रेट साहेब के सामने हाजिर भइले। तीसरका जाना चीन्हें में ना आवत रहस। पेशकार साहेब आपन आँख पर के चश्मा तिल–तिल उतार के चीन्हें के कोशिश करस। फोटो आ सूरत में फरक रहे। तले वकील साहेब आगे बढ़के बोलले– इनको हम चीन्हते हैं।

साहेब दस्तखत क देहले।

जगधारी सिंह के बीस लाख के चेक मिलल बा, एकर खबर उनकरा ससुरारी तक चहुँप गइल। मोबाइल पर साली बोललीं– जीजा जी, अब हमरो के कुछ दीं।

कड़ाही में मरिचा के फोरन नियर रुपया–पइसा के झांकवो फइले लागेला। नाहीं त हाथ पर चेक आवते ससुरारी तक खबर कइसे चहुँप गइल। अब दूनू सार भी धउड़ल मत चल आवसन। मेहरारु पाँच महीना पहिले से हीरा के हार खातिर फर्माइश कइले बाड़ी। कुल्ही मुआवजा एही में खतम हो जाई। सड़क बेर–बेर फोर लेन ना नू बनी।

ओने रामा बाबू के भी तेईस लाख मिलल। उनकर पुरनिया बाप लगे बोला के धीरे से कहले– धन–दउलत पाके ढेर ना अगराए के। पता ना केकर कइसन नीयत होखे। रुपिया बाहरे बैंके में रखिह। आ एह बेरी मंदिर के चबूतरा बनवा द। तनी भजन–कीर्तन में आसानी रही। भगवान के आर्शीवाद से आदमी के धन–दउलत में बरक्कत होला।

गाँव में सुने में आइल कि चउदह आदमी के चेक तइयार हो गइल बा। लोग कोर्ट–कचहरी दउड़े लागल।

चेक के इँचार्ज बाबू बोलले– रउआ सभे सबुर करीं। चेक लेके हम खुदे गाँव में आ जाएब।

गाँव के मिडिल स्कूल के हाता चीकन–सूथर कर दीहल गइल। कुर्सी के हाथ टूटल रहे आ ढेकुल नीयर हिलत रहे। शिवराम भगत आपन नया टेबुल–कुर्सी लिया के रखले। चेक–बाबू के आवे के रोज इन्तजारी होखे। लोग आपना काम–धंधा छोड़ के चार–चार घंटा स्कूल के हाता में बइठले रह जाव।

धरीछन के ससुरारी गइल जरूरी रहे। उनकरा सार के बेटा के छठिहार रहे।

एक दिन चेक बाबू केहू के फटफटिया पर झोरा में फाइल लेले चहुँपले। लोग झुक–झुक के परनाम कइल। गाँव में हल्ला भइल, मुआवजा वाला चेक आ गइल। लोग दउड़ल। पहिला आदमी के नाम पुकराइल– राम सागर महतो। राम सागर उठले– जी सर हाजिर बानी।

–राउर केहू पहचानकर्ता बा?

उ हँसले– हमार गाँव में हमरे के लोग ना पहचानी?

–इनकरा के के ना पहचानी जी– इनकरे बेटी इनार में कूद के मरल रहे। ओ केस में तीन हाली जेल जा चुकल बाड़े।

–देखीं सभे, मजाक छोड़ीं, रुपिया पइसा के मामला में मजाक–गभियाँवं ठीक ना होला।

रामसागर महतो के नाम के चेक निकालल गइल। हड़बड़इले हाथ बढ़वले लेबे खातिर। चेक बाबू आपन हाथ खींच लेहले– सस्ते में लपके के चाहत बानी का जी। धूरा–बालू फांकत हे घामा में पेट्रोल फूंकत हम राउर सेवा करे आइल बानी आ रउआ सूखा–सूखी चेक ले लेबे खातिर तइयार बानी।

रामसागर तनी हुड रहले जरूर बाकिर एतना बात बूझे से बुरबक ना रहले, बोलले– हुकुम कइल जाव। आरे अब कहला में का बा, रउरा हमरा चचेरा साला के मौसियाउत भाई के गाँव के हई। इ हम पता लगा ले ले बानी। थोड़ा बहुत त ध्यान दिहले जाई– हुकुम कइल जाव।

–रउरा अइसन बात कह के हमार हाथ–गोड़ त छानिये देहनी, ऊपर से मुँहो पर जाबी पेन्हा देहनी। अब हम कुछ ना कहेब। बाइली आदमी रहतीं त एह उनइस लाख के चेक पर हमार तीन हजार के हक बनत रहल ह, अब राउर मर्जी।

आसपास जे लोग अपना चेक खातिर खड़ा रहे। ओ लोग के कम हड़बड़ी ना रहे। एक जना बोलले– ए सागर बाबू, आरे कुछ दे दा के जल्दी निवटाव।

रामसागर चेट में से डेढ़ हजार निकाल के बढ़वले।

–इ का ह? चेक बाबू पूछले।

–राउर खातिरदारी हम हमेसा करेब। हम फेर रउरा दफ्तर आयेब नू। कहीं भागल नइखी जात। मंजूर कइल जाव, फेर सेवा होई।

पीछे से एक आदमी बोलले– आरे दू–चार सौ अउरी बढ़ा दे भाई। परे साल तीन गाड़ी अलुआ बेचलऽ। दस गो कटहर के गाछ अलगे बा। तू हूं त धीपले दाम वसूलेल। चेक बाबू के बढ़ा के सेवा कर। ओतना से तू उजड़ ना जइबऽ।

रामसागर मनही मन खउल गइले। रहित दोसर मोका त एह निफिकिर के बेटा के नटी धके धरती पर लसार देतीं। बाकिर मुआवजा के मामला बा। सरकारी मुलाजिम खिसिया जाव त बनलो बनावल काम बिगड़त देरी ना लागी।

तीन सौ रुपिया आउर दिया गइल। आपन दसखत कइले। दू जाना गवाह बनले कि ओह लोग के सोझा चेक दियाइल। हाथ में चेक लेक दुर्गा माई के इयाद कइले। घरे जाते कुल देवता के स्थान पर चेक रख के परनाम कइले।

–धनेसर लाल।

दोसरका नाम पुकराइल। एगो जवान भीड़ में से उठ खड़ा भइले– जी, हम उनकर बेटा हईं। बाबूजी के मुँह–पेट चलत बा, एहसे ना अइले हन।

–आरे त खटिये पर लाद के दू मिनट खातिर लेते अइत।

चेक के ममिला बा। दसखत त धनेसरे के करेके पड़ी।

चेक बाबू बोलले– उनकर दसखत ना होई त चेक हेड ऑफिस लउट जाई। फेर दउड़ लगावत रहिह।

धनेसर आवे के स्थिति में ना रहले। तय भइल कि चेक बाबू रेक्शा से खुदे गाँव में उनकर दुआर पर चल चलीं– दसखत कराके चेक दे दीं– चौदह लाख के ममिला बा। तीन जगेह रिक्शा खोजाइल। एगो के धूरा टूटल रहे। मरमती में देर रहे। दूसर रिक्शा वाला के पेट में मरोड़ रहे। रात खाना खइला के बाद एक दउरी भूजा चबा लेले रहले। बेचैन रहले। केहूं ते रिक्शा आइल– दस के बदले तीस रुपया भाड़ा मंगलस।

केहू कहल कि चेक बाबू अपना फटफटिये से काहे नइखीं चल चलत। चेक बाबू मना कइले– तीन दिन भइल मोटर साइकिल किनइले। देहात के धूरा– कीचड़ में ओकर सूरते बदल जाई।

चेक वाला कागज पर धनेसर लाल दस्तखत कइले। गवाह लोग के दस्तखत भइल। गिलास में शर्बत आइल। चेक बाबू मना कइले– चीनी वाला चीज हमरा मना बा। छोड़ी इ सब शर्बत–वर्बत। आगे के के काम देखीं। अन्दर से लिया के हाथ पर एक हजार रखा गइल। चेक बाबू

बोलले– हम भीख मांगे नइखीं नू आइल। रखल जाव। अपने के बाल–बच्चा के काम आई। एह दुनिया के हर इंसान के आपन भैलू होला। ऑफिस जइतीं त बिना पाँच हजार के, चेक के दर्शनो ना होइत। बात बढ़त देखके एक हजार अउरी दियाइल।

रिक्शा से स्कूल पर लउट अइले। अब ले रेट के खुलासा हो गइल रहे। नौ आदमी बाकी रहले। तनी झौं–झौं के बाद सभे सेवा कइल। सबके चेक मिल गइल। चेक बाबू लउट गइले।

पूरा गाँव जवार में ए घरी मुआवजे के चर्चा रहे। बहुत लोग के दावा कुर्सीनामा के कारण फंसल रहे। उहो साबित करे खातिर हाकिम के आगे किरिया– कसम खाये के पड़ी। वकील साहेब सभके मदद कइले। जेकर केस ज्यादा गूढ़ रहे ओकर फैसला करे में अभी टाइम लागी।

दोसरा दिने मुंशी जी भी आपन नेग चार वसूलले। मने मन मनवले कि मुआवजा के सिलसिला हर साल चलत रहो।

वकील साहेब आज भोजन करे बइठले त परोरा के कलौंजी परोसाइल आ भिंडी के भुजिया।

जनाना बतवली– गंगाधर राउत कींहा से एक नदिया सजाव दही आइल बा। भर कटोरा दही खइले। मुंशी, वकील साहेब आ कचहरी के अमला फजला के घरे चैन के बंसी बाजत रहे।

कुछ फँसल केस पर वकील साहेब कई रात से विचार कर रहल बाड़े। इ सब फरिया जाई त पूरा आढ़ई करोड़ के मुआवजा बा। काल्ह मजिस्ट्रेट साहेब के बंगला पर जाके प्राइवेट में बात करे के होई। या इ मुहावरा जानते होइहें– कि बहती गंगा में हाथ जरुर धोए के चाहीं। हीरा बाबू केतना लोग के ढाढस देहले कि ताहार काम हम कराएब।

समय बदल गइल बा। अब बिना कुछ चढ़ावा के केहू के काम नइखे होत। तू सोचत होखब कि जेतना हमरा चेक में आवेला उ सजी हमरे होला। ना ए दादा– ओहू में बाँट–बखरा लागेला। हाकिम, पुलिस सभ के ना पटा के राखीं त काल्हे से कचहरी में गोड़ धइल मुश्किल हो जाई। हीरा बाबू मरते दम तक तहार मदद करिहें।

अइसन मुंशी आ वकील लोग बनल रहो त कवनो कचहरी बन्द ना होई। चढ़ावा चढ़त रही आ चेक बनत रही। ••

ए–1/601, बेवरली पार्क,
सेक्टर–22/2, द्वारका, नई दिल्ली–75

लघुकथा

रेक्शा के सवारी

कन्हैया पाण्डेय

रामपलट चउधुरी कपार पर बडका दउरा लदले अभी कोसो भरि ना गइल होइहें कि पीछा से रेक्शा के घंटी टुनटुनाइल। ऊ पीछा घूमि के तिकवले, एगो खाली रेक्शा चलल आवत रहल। आज भगवान उनकर साफे इज्जत बचा देले रहले। ससुरार के गांव निगिचा गइल रहे। आखिर कपार पर दउरा लदले ससुरारी कइसे जइते? दामाद कहाए के।

आज उनका छोटकी साली के बारात आवे के रहल। समय से नेवता पहुँचावलो जरूरी रहे। इहे सोचत विचारत रहले कि रेक्शा उनका नजदीक आ गइल। हाथ से इशारा करत रामपलट रेक्शा रोकले– ''अहिरवली चलबऽ?'' – ''काहे ना चलब!'' – रिक्शा वाला हामी भरलस। – ''भाड़ा का लेबऽ?'' – रामपलट पुछले?– ''आठ रूपया''। –''आठ रूपया। बाप रे बाप। इहां से कइ डेग अहिरवली बा हो भाई?''

–''चिहुँकत का बाडऽ भइया आठ रूपया तऽ कहिए से उहवां के भाड़ा बाऽ। तवनो पर तहरा पासे अतहत बड़ दउरा बा। खाली दउरवे के पांच रूपया भइल।'' –''रिक्शा वाला रामपलट चउधुरी के निठोठे समझवलस।'' – ''तऽ खाली दउरवे ले चलऽ। हम पैदलो चलि चलब।'' – रामपलट कहलन। रिक्शा वाला इनकर बाति सुनि के मुंह तिकवे लागल आ चउधुरी रिक्शा वाला के मौन स्वीकृति समुझ के झट से आपन दउरा लादि दिहलन, 'अब चलऽ, पाँच रूपया ले लिहऽ!' ऊ मने–मन खुसो भइलन कि अब ऊ ससुरारी ईजत से पहुँचिहें। ••

ग्राम–पोस्ट– मैरीटार, बलिया

साहित्यिक/सांस्कृतिक गतिविधि

मुम्बई ''सबरंग'' आ ''भोजपुरी पंचायत'' के फिल्म-सम्मान समारोह में इल्मी दस्तक

5, सितम्बर मुंबई, विले पार्ले, ठक्कर सभागार, मुम्बई में भोजपुरिया कला– प्रेमियन का बीच, ''सबरंग फिल्म सम्मान समारोह'' के शुभारम्भ, डा0 अशोक द्विवेदी के लिखल भोजपुरी उपन्यास ''बनचरी'' के विमोचन महामण्डलेश्वर उमाकान्तानन्द सरस्वती, श्री सतीश त्रिपाठी (अंतराष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व भोजपुरी सम्मेलन) आ डा0 प्रेम शुक्ल (संपादक, दोपहर का सामना) का साथे भइल।

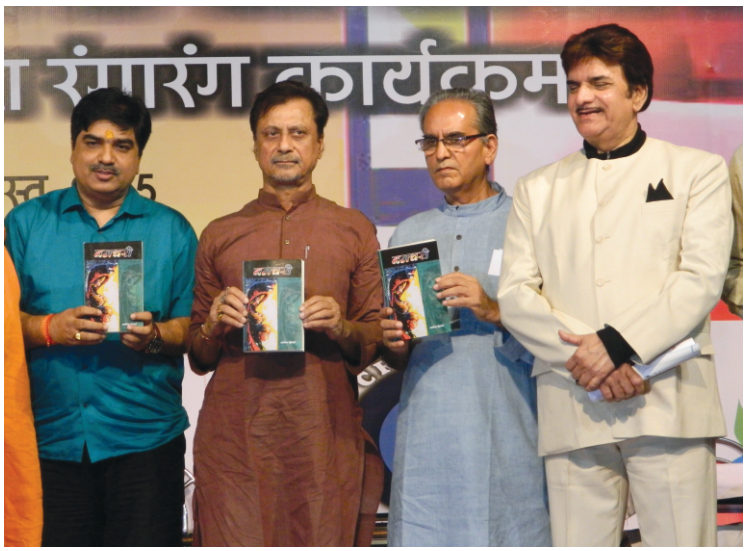

अपना उद्घाटन भाषण में पुस्तक–विमोचन के महत्व के रेखांकित करत डा0 प्रेम शुक्ल कहलन कि विले पार्ले का एह लहुरी काशी में कलाकारन आ फिल्मी सितारन क जमाबड़ा, हमहन के भाषा प्रेम के दरसावत बा। हमके आज बहुत खुशी भइल कि 'फिल्मी' का सँगे 'इल्मी' लोग भी आज आयोजन में शामिल भइल। भोजपुरी के जानल मानल कवि–कथाकार डा0 अशोक द्विवेदी के उपन्यास ''बनचरी'' के विमोचन विश्व भोजपुरी सम्मेलन के अध्यक्ष आदरणीय सतीश त्रिपाठी जी का उपस्थिति में भइल एकर खुशी अलग बा। श्री अशोक द्विवेदी जी भोजपुरी के बहुचर्चित पत्रिका ''पाती'' के संपादक आ भोजपुरी साहित्य–संस्कृति का रचनात्मक आंदोलन का अगुवा लोगन में गिनल जालें। हमके विश्वास आ भरोसा बा कि ई उपन्यास भोजपुरी साहित्य के श्री वृद्धि में चार चान लगाई। ''बनचरी'' उपन्यास का माध्यम से, कथाकार द्विवेदी जी 'आर्यावर्त्त' का पौराणिक पृष्ठभूमि में मानवीय संवेदना के रचनात्मकता के तलाश करत, समय–संदर्भ का कई अनुत्तरित प्रश्नन के उत्तर ढूँढे के कोशिश कइले बाड़न।

डा0 सागर जे0 एन0 यू0 (गीतकार, मुम्बई)

भोजपुरी साहित्य अकादमी
(म0 प्र0 संस्कृति परिषद्, भोपाल) के भोजपुरी-आयोजन

19–20 सितं0 2015 के स्वराज भवन सभागार, रवीन्द्र भवन भोपाल में भइल भोजपुरी–साहित्य–विमर्श का एह दू–दिनी–कार्यक्रम में 19 सितं0 के 'कहानी पाठ' का सत्र में कुछ प्रतिनिधि भोजपुरी कहानीकारन के कहानी पाठ भइल। एमें कन्हैया सिंह 'सदय', भगवती प्रसाद द्विवेदी, अजय ओझा, श्रीमती प्रेमशीला शुक्ल, प्रकाश उदय, विष्णुदेव तिवारी आ तुषारकान्त अपना कहानियन क पाठ कइल लोग।

''भोजपुरी कहानी के समकालीनता'' विषय पर परिचर्चा दुसरका सत्र भोजन का बाद रहे। एह वैचारिक–विमर्श के शुरूआत, डा0 अशोक द्विवेदी के हालहीं छपल भोजपुरी उपन्यास ''बनचरी'' का विमोचन का साथ भइल, जवन भोजपुरी कथाकारन का सहभागिता में अकादमी के सचिव श्री नवल शुक्ल कइलन। एह संगोष्ठी का वक्ता आ आलेख पढ़े वाला लोगन में श्री कन्हैया सिंह 'सदय', अरूणेश शुक्ल, इन्द्रदेव नारायण सिंह, बलभद्र, प्रकाश उदय रहलन, विमर्श में श्री अशोक द्विवेदी, प्रेमशीला शुक्ल, भगवती प्रसाद द्विवेदी आदि लोग आपन विचार व्यक्त कइल लोग।

दिनांक 20 सितंबर के ''हिन्दी–भोजपुरी कहानियन के अन्तर्संबन्ध'' परिचर्चा आ विमर्श गोष्ठी क अध्यक्षता भोजपुरी पत्रिका ''पाती'' के संपादक, वरिष्ठ कवि–कथाकार श्री अशोक द्विवेदी कइलन। विषय के प्रवर्तन करत ऊ कहलन कि भोजपुरी आ हिन्दी कहानियन में अन्तर आ सम्बन्ध दूनों बा। पहिल अंतर ई कि हिन्दी कहानी के जब 48 साल बीतल आ, 'नई कहानी' के शुरूआत भइल तब भोजपुरी कहानी के श्री गणेश अवधबिहारी सुमन का 'मलिकार' आ 'जेहल के सनद' से भइल। हिन्दी कहानी ओह समय तक पुरहर पोढ़ हो चुकल रहे आ 'नई कहानी' क आन्दोलन शुरू हो चुकल रहे। भोजपुरी कहानी जनमते आधुनिक रहे। एह परिचर्चा में श्री सुधीर रंजन सिंह, जनार्दन सिंह, भगवती प्रसाद द्विवेदी, आ सागर से आइल आशुतोष मिश्र का, वक्तव्य का बाद, श्री बलभद्र आ श्री विष्णुदेव तिवारी आपन विचार व्यक्त कइल लोग।

पंकज कुमार, भोपाल, मध्यप्रदेश

काहें नइखे घटत अपराध आ भ्रष्टाचार

अशोक कुमार तिवारी

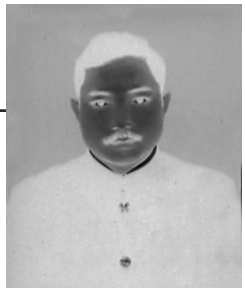

अपराध आ भ्रष्टाचार के मूल रूप से दुइये गो कारण होला। पहिलका अविवेक आ दुसरका असन्तोष। शब्द ब्रम्हा हऽ आ हरेक शब्द के व्यापक अर्थ होला। एतनवे ना, हरेक शब्द के एक–एगो अक्षर आ मात्रा के व्यापक अर्थ होला, जेकर व्याख्या कइ पावल सबका के बस के नइखे। खैर शब्दन के उपयोग खातिर शब्दन के व्यापक अर्थ के गहराई में गइल जरूरी नइखे, ठीक ओइसहीं जइसे कपड़ा पहिने वाला के ई जानल जरूरी नइखे कि ऊ कइसे कपास से निकलल, कपड़ा बिनाइल आदि–आदि। ओकर एतने जानल काफी बा कि कपड़ा तन ढाके खातिर जरूरी बा। शब्दन के आ भाषा के उपयोग समाज खातिर अनिवार्य बा काहे कि मनोगत् भावन के देखावे समझावे के इहे साधन होला। एक दूसरा के सुख–दुख भा गरज–जरूरत जाने के इहे माध्यम होला। शब्दन से भाषा आ भाषा से समाज बनेला। शब्दन, चाहे भाषा के अभाव में समाज के परिकल्पना ना कइल जा सकेला। ओहि तरे जेहि तरे आक्सीजन (प्राण वायु) के बिना जीवन सम्भव नइखे।

मूल बात ई बा कि अपराध आ भ्रष्टाचार के मूल कारन अविवेक आ असंतोष होला, जवना में अविवेक शब्द के अर्थ हमनी का बुद्धिहीनता, अवरू असन्तोष शब्द के अर्थ हमनी का कवनो स्थिति–परिस्थिति, घटना–दुर्घटना के क्रम में मन में उपजे वाली अशान्ति के रूप में लेनी जा। ध्यान देवे जोग बात बा कि ''सन्तोष'' शब्द के उत्पत्ति मूल शब्द ''शान्ति'' से भइल बा। अविवेकी होखला के पीछे कहीं न कही हमनी के सोच अति भौतिकवादी भइल बा। अचानक घटल कवनो घटनो–दुर्घटना अविवेकी होखला के कारन हो सकेला। केहू के सुख–सुविधा, गाड़ी–बंगला, खान–पान, रहन–सहन देख के हमनी बड़ा जल्दी प्रभावित हो जात बानी जा, आ एह फेर में पड़ जात बानी जा कि ऊ सुख–सुविधा कइसे जल्दी से जल्दी हमरो मिल जाऊ। हमनी का इहो सोचे के तैयार नइखीं जा कि भौतिकता के खोज में जाये वाला रास्ता सही बा कि गलत। जबकि ई तय बात बा, पहिलका कि सफलता के केवनो सार्टकट ना होला, दुसरका कि सार्टकट के अधिकतर रास्ता अपराध आ भ्रष्टाचार के गलियन से होके गुजरेला, आ तिसरका कि सार्टकट से मिलल सफलता टिकाऊ ना होले।

बढ़त अपराध आ भ्रष्टाचार का दिसाईं देश के कानून बेवस्था के लचीलापन आ सरकार के एकरा ओर से लापरवाह आ उदासीन होखल कम ना कहाई। 'सरकार' शब्द के अंग्रेजी हऽ 'गवर्नमेंट' जेवना के अर्थ होला शासन। 'सरकार' शब्द के हिन्दी में अर्थ भा पर्याय शब्द का होई हम अभी नइखी जानत। बाकिर भोजपुरी के लेहाज से देखल जाऊ त 'सरकार' शब्द दुगो शब्द 'सर' आ 'कार' के संयोग से बनल बा जवना में 'सर' शब्द के अर्थ होला तंग या परेशान अवरू 'कार' शब्द के अर्थ होला करेऽवालस। एहतरे भोजपुरिया हिसाब से 'सरकार' के एगो अर्थ ओह सिस्टम से बा जवन कि आम जनता के परेशान करे खातिर होखे।

हम केहू के मुँहे सुनले रहीं, अखबार में निकलल रहे कि कइ गो फिलिम स्टार लोग के राशन कार्ड बा आ ऊ लोग महिनवारी राशन आदि उठावेला। जेवना लोगन के एक–एगो सिनेमा में काम कइला के फीस दू–चार–दस करोड़ रूपया बा जब ओही लोग के ई हाल बा त देश के गरीब–गुरबा के का हाल होई? एक से एक घोटाला–महाघोटाला होता अपराधियो चिन्हित हो जाता बाकी सजाइ नइखे जो पावत। कॉहे? दाऊद पाकिस्तान में बइठल कहिये से ठेंगा देखावत बा, का हो पावत बा? जवानी में व्यभिचार, हत्या, लूट आ डकइती करे वाला के केस ओकरा बुढ़इलो तक चलते रह जाता। का एह सबसे समाज में अपराध ना बढ़ी।

एगो चीज हमरा ध्यान में आवत बा, आरक्षण। एकर तऽ आजले हमरा मतलबे ना बुझाइल। खास तौर पर नौकरी में आरक्षण के बात कइल जा। एकरा में आरक्षण के आधार पर अजोग आ असफल आदिमी के जिम्मेवारी के पद दीहल, का देश के भविष्य संगे खेलवाड़ कइल नइखे? हमरा देखे में आरक्षण के मतलब ई होखे के चाही कि जदि तूँ ओह वर्ग विशेष के महत्वपूर्ण पद पर नियुक्ति चाहत होखऽ त ओह वर्ग विशेष के अइसन साधन सुविधा मुहइया करवऽ कि ऊ ओह पद पर जिम्मेवारी के वहन करे जोग बन सके। बेसक ओकरा परिवार के तू हर तरह से साधन सुविधा द मुफ्त भवन–भोजन–चिकित्सा आदि के बेवस्था करऽ। पंचायती चुनाव में आरक्षण लागू होता ओहि तरे विधायकी व सांसदी के चुनाव में ई आरक्षण काहे नइखे लागू होत? का खाली 'हाजीयेपुर' लेखा एक–आध गो सीट आरक्षण जोग बा?

एगो दूसर चीज बा नोकरी में घूसखोरी। निचली स्तर के नौकरियन में अक्सर देखल सुनल जाला कि घूस पर नौकरी बिकाता। आ ई तऽ निश्चित बा कि बेइमानी से पइसा देके नोकरी हासिल करे वाला से ईमानदारी के अपेक्षा ना कइल जा सकेला। केहू खेत बन्हकी धइके, केहू खेत बेचि के त केहू कारजा लेके घूस देले बा। त सबसे पहिले ऊ आपन खेत छोड़ाई, खेत खरीदी आ करजा भरी ओकरा बाद ई सुनिश्चित करी कि ओकर सामने, चाहे आवे वाला पीढ़ी के सोझा फेरू अइसन समस्या जन आवे। आ अइसन भइला पर भ्रष्टाचार के बढ़ल लाजिमी बटले बा।

हिंसक अपराध हत्या, डकइती, लूट, ठगी लेखा अपराध के बारे में गहिर पड़ताल में गइला प इहे पावल जाला कि भीतर–बाहर कहीं ना कहीं से दबाइये कुँचाई के एह अपराधन के अपराधी पैदा होले। हँऽ व्यभिचार

अवरू आतंकवाद के अपराधिन के फार्मूला कुछ अलग बा। व्यभिचार के संबंध मानसिक विकृति आ कुंठा से बा तऽ आतंकवाद के अपराधिन के फार्मूला कुछ अलग बा। व्यभिचार के संबंध मानसिक विकृति आ कुंठा से बा तऽ आतंकवाद के जड़ में गरीबी का संगे–संगे धार्मिक उन्मादो जुड़ल बा। कइगो आतंकवादी संगठन गरीब युवकन में धन के लालच अउरी धार्मिक उन्माद पैदा कइके गुमराह करे में लागल बा।

दू गो नैसर्गिक सिद्धान्तन के चरचा हम एहिजा जरूरी समझत बानी, एगो बा ''शक्ति के सर्वोच्चता'' के सिद्धान्त पहिले एकरा के 'सर्वश्रेष्ठ के उत्तरजीविता' के सिद्धान्त के हम 'सर्वश्रेष्ठ के उत्तरजीविता' के जगह पर ''शक्ति के सर्वोच्चता'' कहल बेसी पसन्द करब। एह संसार में जेतना क्रिया – प्रतिक्रिया होला ऊ ऐही सिद्धान्त पर अधारित बा। जब क्रिया होई त ओकर प्रतिक्रिया जरूरे होई। देवाल आपना ईंटन के दोबा में फेड़न के बीच दबा लेले, बाकिर उहे बीया जब भितरी से जाम जाला त ओहि देवाल के फार देला, नष्ट कऽ देला। एह हिसाब से एह समाज में जवन कुछु हो रहल बा ओकरा के नाजाइज ना कहल जा सकेला। बाकिर एगो सिद्धान्त बा 'कर्मफल' के सिद्धान्त भा 'बीज–फल' के सिद्धान्त जेकर मतलब होला कि आदमी अपना करनिये के फल पावेला भा जवन बोवेला उहे काटेला। अब से पहिले के पीढ़ी भले कम पढ़ल लिखल रहलहा। बाकी एह दूनो सिद्धान्तन के आपना संतति के जरूर समझावते ना बलुक महसूस करावत रहलहा एही से आज के अपेक्षा पहिले समाज में भ्रष्टाचार अपराध के मात्रा कम रहलहा। आज हमनी का भौतिकता के दौड़ में एतना शिद्दत से शामिल बानी जा कि हमनी का लगे अपना औलाद के नैतिक आ व्यवहारिक संस्कार आ ज्ञान देबे के फुरसत नइखे। आज समाज में जवन कुछ गलत हो रहल बा ओकरा खातिर अंततः हमनी का खुदे जिम्मेदार बानी जा।

समाज में कुछऊ गलत हो रहल बा त जा के समाज पर गलत असर पड़त बा आ समाज में ओकरा एवज में विकृति आवतिया तऽ सभ्य समाज के एकर उपाय आ विरोध करे खातिर कमर कसे के होई। सुधार के सबसे बेहतर तरीका ई होला कि दोसरा के नसीहत देला के बजाय एकर शुरूआत आपना से कइल जाउ। अपना आँतर में विवके के दीया जराके बुद्धिहीनता अवरू अशांति रूमी अन्हियार दूर कइल जा। काहे कि हम ठीक होइब त परिवार ठीक होई आ परिवार ठीक होई त जरूरे समाज ठीक होई। दुसर बात सरकार के एह विषय में गंभीर होये के पड़ी आऽ अपराध–भ्रष्टाचार विरोध खातिर जवन नियम–कानून बा ओकरा में से लचीलापन आ ढुलमुल रवइया के खतम कइके ओकरा के सख्ती से लागू करे के पड़ी आ अइसन बेवस्था करे के पड़ी कि दोषीयन के अविलम्ब दंड मिलो। तुरन्त मिले वाला दण्डे एगो अइसन अचूक उपाय बा जेवना से दोषियन में भय बेयापी आ जन साधारण के मन में दोष के जगहा सरकार अउरी कानून खातिर प्रेम–श्रद्धा–सम्मान पैदा होई जवना से अविवेक आ संतोष दूनो के नास होई आ ओकरा जगह पर विवके, शांति के स्थापना होई। तबे समाज के कल्याण होई।

ग्राम व पोस्ट–सूर्यभानपुर, जिला–बलिया–277216

दू गो गीतिका

डॉ रामरक्षा मिश्र विमल

[एक]

मन इ जब जब उदास होखेला।
तोहरे बस आस–पास होखेला।

घर धुँआइल बा आँख लहरेला
जब भी बुधुआ किताब खोलेला।

तोहरा के हम भुला सकबि कइसे
आजुओ मन लुका के रो लेला।

चोर भइलीं भलाई ला जेकरा
ऊहे हमरा के चोर बोलेला।

दोष्ा कइसे विमल के दे दीं जी
देखि लछिमी कबो ना डोलेला।

[दू]

नेह अमिरित झरित जो कबो।
जीव हुलसित फरित जो कबो।

जोत जिनिगी में जगमग रहित
मन अन्हरिया हटित जो कबो।

लोर काहें नयन से बहित
ई दरदिया घटित जो कबो।

आसरा मोर होइत सफल
भास तनिको मिलित जो कबो।

पूछितीं अर्थ आनंद के
पट विमल के खुलित जो कबो।

कहानी

दलदल

कन्हैया सिंह 'सदय'

अकसर रोज सुबह हम दादी के कमरा में जात रहीं, उनका के जगावत रहीं, गोड़ लागत रहीं... आशिर्वाद लेत रहीं आ अपना काम में लग जात रहीं। कबो–कबो पूछत रहीं 'दादी, कइसन तबीयत बा!'

'हमरा तबीयत में का भइल बा! तूं चिन्ता मत करऽ... निरोग बानी... जबले तूँ पढ़–लिखके बड़ा ऑफिसर ना बन जइबू आ तोहार हाथ पीयर ना हो जाई तबले हमरा कुछ ना होई...।' कुछ अइसने बात उनका मुँह से निकलत रहे जवन भीतरे भीतर हमरा के गुदुरावे आ हम गील हो जाई।

ओह दिन, दादी रात में खाना ना खइली। माई पुछली त पेटबथी के बहाना बना दिहली। बिहान भइला जब हम उनका कमरा में गइलीं त देखलीं बिछावन के चादर सिकुड़न से भरल बा... उनका आंखिन के पलक, महुआ–फूल अइसन सूजल बा.. झुर्रीदार चेहरा प चिंता के बादल पसरल बा... गालन के गड़हन में लोर के लकीर सूखल बा...। ई सभ उनका हताशा आ असहनीय पीड़ा के प्रमान रहे। एकर कारनो त हमहीं रहीं। काल्ह, जवन बात हम उनका से कहले रहीं उहे उनका तीर अस लाग गइल रहे। ऊ बिछावना प चिताने निढाल परल रही। हम जगावे के कोशिश कइलीं। बाकिर, ऊ सुतल थोरे रही कि जागस...गुमसुम करवट बदल लिहली।

'दादी! जागत काहें नइखू ? उठऽ सात बजेवाला बा!' ऊ कुछ ना बोलली। मन मारके हम बाहर निकल अइलीं। उनकर ई दशा देखके हमार करेजा फाटे लागल। उहे त हमार सभकुछ रही। जब से होश सम्हरली, हम हर रूप में दादी के पवलीं। उनकर सेवा आ सनेह का कबो भुलावल जा सकत बा! ऊ हमार माई, दाई, दोस्त, गुरू, का कुछ ना रही।

दादी के पास पढ़ाई लिखाई के कवनो सर्टिफिकेट ना रहे। दादा जी मिडिल स्कूल में शिक्षक रहीं। उहें के साथ–संगत से ऊ एतना त शिक्षित होइये गइल रही कि धर्मिक ग्रंथन के पढ़ लेस कुछ–कुछ लिख लेस। दादा जी के असामयिक निधन का बाद बाबूजी हमनी के लेके शहर आ गइल रहीं। मलेट्री–कैंप से कुछुवे दूर प बनल किराया के ई मकान तबे से हमनी के निवास–स्थान बनल रह गइल।

बाबूजी, सी.आर.पी.एफ. के जवान रहीं। ऊ दिन हमरा इयाद बा जहिया उहां का नक्सली मुठभेड में शहीद हो गइली। ओ घरी हम दूसरा क्लास में पढ़त रहीं। खबर मिलते घर में मातम छा गइल... पास पड़ोस में कोहराम मच गइल। रिश्ता नाता आ सगा–संबंधी के खबर दियाइल। उहां के पार्थिव शरीर के तिरंगा में लपेट के जब पुलिस बल के जवान लो ले आइल, दादी छाती पीट–पीट के रोवे लगली... माई के दाँत लाग गइल। एह लोग के विलाप से पूरा माहौल गम में डूब गइल। हमरो सुसुकी थम्हे के नॉव ना लेत रहे। सभ लोग हमनी के बारी–बारी से समुझावत रहल...सांत्वना देत रहल। पुलिस बल के अधिकारी मुवाबजा आ माई के नौकरी देबे के घोषणा कइलें। चाचा जी आग दिहलीं आ उहाँ के दाह–संस्कार, राजकीय–सम्मान के साथ भइल।

कजिया बाद मामा जी, माई के अपना साथ चले के कहले रहीं। बाकिर, दादी रोक देले रही। ऊ पसगयबत में माई के समुझवले रही– 'बहू, नइहर से बेटी के डोली निकलेला आ ससुरा से अर्थी'। नइहर में चार गो पतोह के भार सहा जाला। बाकिर एगो बेटी के ना। तोहरा भाई के नजर, मिले वाला मुवाबजा प टिकल बा, एह से साथ ले जाये चाहत बाड़े। जहिया सभकुछ हथिया लिहें ओह दिन तूं दूछ के मांछी अस निकाल के फेंक दिहल जइबू। तोहरा ससुर के कमाई आजुवो बैंक में सुरक्षित बा। ओकरे सूद से दाल–रोटी के प्रबन्ध हो जाई। गाँवहूँ में अपना हिस्सा के जवन खेत बा उहो सहारा बनी... ओपर से मुवावजा मिलबे करी... अगर तोहार नौकरी लाग जाई तब त कुछ सोचहीं के नइखे मत जा नइहर...।' माई, दादी के बात मान गइल रही। मामाजी नाराज होके चल गइल रहीं।

एने चचो जी दादी से कहले रही–'भाभी रउरा सभ गाँवे चलीं... अब एइजा का रखल बा! ओजा कवना बात के कमी बा जे बहू नौकरी करिहें...।'

'ए बबुआ जी, राउर सलाह कुछ हद तक सही बा। बाकिर, श्रेया अंग्रेजी स्कूल में पढ़ रहल बिया, ओकर पढ़ाई बाधित हो जाई। गाँव में ढंग के कवनो स्कूल कहां बा? जमाना तेजी से बदल रहल बा, जे एकरा साथ ना चली ऊ पिछड़ जाई... हम गांवे आवत जात रहब...। 'चाचा जी मान गइल रहीं।

दादी, पढ़ाई –लिखई से कवनो तरे के समझौता ना करत रही। शादी के समय माई, इन्टर पास रही। इहां अइला का बाद दादी के सलाह से बाबूजी उनकर नांव कॉलेज में लिखवा देले रही आ ऊ स्नातक के परीक्षा पास क गइल रही।

बाबूजी के मुवला के एक महीना बाद पुलिस बल प्रमुख का तरफ से एगो चेक आ साक्षात्कार–पत्र आइल। माई साक्षात्कार में शामिल भइली आ अनुकंपा के आधार व उनका स्थानीय मलेट्री कैंप के कैन्टीन में नौकरी मिलि गइल।

नौकरी पकड़ला का बाद माई के पास हमरा खातिर

पर्याप्त समय ना बचत रहे। तब, दादिये, माई के भूमिका निभावे लगली। ऊ रोज सुबह हमरा के नहवा–धोवाके कपड़ा पहिरा वस, नाश्ता करावस आ स्कूल ले जास ले आवस। सातवां क्लास ले ई सिलसिला चलल। बाद में हम खुद स्कूल आवे–जाये लगलीं।

समय आ उमिर कबो बइठल ना रहे। धीरे – धीरे हम सेयान होखे लगली। लइकाई में हम कइसन लागत रहीं ई ठीक से माई आ दादिये बता सकेली। एक बेर अपना पडोसिन चाची का मुँह से सुनले रहीं– 'श्रेया त परी अइसन लागेले...।' जवानी के दहलीज प पांव राखते हमरा शरीर में खानी–बिखानी के बदलाव नजर आवे लागल। हम सोझ सपाट ना रह गइलीं। बात चीत के अंदाज, चाल–ढाल आ सोच–सरोकार बदले लागल। हमरा महसूस होखे लागल कि हम फूल अस सुन्दर आ नाजुक बानी तबे त कॉलेज के राह में मनचला भौंरन के झुंड मड़रा रहल बा। बात तब के ह जब हम बी. कॉम पार्ट टू में पढ़त रहीं।

एक दिन एगो सीनियर बैच के लड़िका हमरा लगे आके कहलस– 'श्रेया, हम तोहरा से प्यार करिलें... तूं बेहद सुन्दर आ सुकुवार बाडू...।' उनकर बात हमरा अच्छा लागल। बाकिर, बिना जवाब दिहले आगे बढ़ गइलीं। ई सही बा कि कवनो वस्तु तबले सुन्दर ना कहल जा सके जबले ओकरा के केहू सुन्दर ना कहे। ओह दिन हमरा अपना आप प गर्व भइल रहे।

हमरा मौन के ऊ स्वीकार के लक्षन मनले रहन। फेर त ऊ रोजो कवनो ना कवनो विधि मिले आ सराहना करे लगले। आखिर एक दिन हमरों होंठन पर मुस्कुराहट के लकीर खिंचाइये गइल... मौन मुखरित होइये गइल' 'तूहूं हमरा नीक लागे ल विनोद... इलूकृ।' कहके हम आगे बढ़ गइल रहीं। कुछ दिन बाद हमनी एक दोसरा के आपन तसवीर प्रदान कइले रहीं। प्यार के सिलसिला आगे बढ़े लागल रहे।

हमार पढ़ाई–लिखाई में मन ना लागत रहे। बस, उनके खातिर सज–संवर के कॉलेज जाईं... भरपेट बतियाईं आ वापस लवट आईं। कबो–कबो क्लास छोड के कवनो एकांत जगह भा पार्क में पहुंच जाई... प्यार के इजहार करीं ... होटल में खाना खाईं... फेर विदा लीं। एही क्रम में एक दिन ऊ शादी के प्रस्ताव राख दिललें। अब हम का जवाब दीं! बड़ी मुसकिल से कह पवली–इंतजार करऽ कहियो उहो शुभ घड़ी आइये जाई...।

ओह दिन कॉलेज जात समय हम आपन पर्स टेबुले प छोड़ दिहलीं। हमरा गइला का बाद दादी जब टेबुल का लगे गइली त ऊ पर्स उनका हाथे लाग गइल जवना में विनोद के तसवीर आ पांच सय के एगो नोट रहे। उनका शक भइल।

कॉलेज से लवटला का बाद हम सबसे पहिले टेबुल का लगे गइली। उहां पर्स ना रहे। पसेना तर तराये लागल। एही बीच दादी आ गइली। उनका हाथ में पर्स देखके हम हिल गइली। ऊ पर्स खोललली आ पूछली– 'साफ–साफ बतावऽ.. ई फोटो केकर ह?... ई रूपया केकर ह?' एह फोटो से तोहार का सम्बन्ध बा? बताव, हमार कसम...।'

पहिले त हम सकुचइलीं...। बाकिर, दादी से हम झूठ ना बोल सकत रहीं। ऊ अनुभव के खजाना रही... आपने कसम धरवले रही। एह से खुद के सम्हारत कहली 'ई फोटो हमरा दोस्त विनोद के ह। हमरे कॉलेज में स्नातक के फाइनल इयर में पढेले। हमनी एक–दोसरा से प्रेम करिले...ई रूपया माई के ह, कॉलेज फीस जमा करे खातिर देले बाड़ी...।'

'ई बात बा...। फेरत तूं लोग शादियो करे चाहत होखबऽ?'

'हं, दादी!'

'तोहरा एह लड़िका के कुल खनदान... पारिवारिक स्थिति आ पता ठेकाना के जानकारी बा?'

'कुछ ज्यादा ना...।'

'बिना जानकारी के विश्वास आ बिना विश्वास के प्रेम ना उपजे। तूं जवना के प्रेम कहत बाडू., ई प्रेम होइये नइखे सकत। ई त भावुकता ह.., हवस ह.. कामुकता आ उत्तेजना ह। जहां इच्छा होले उहां प्रेम ना होखे। प्रेम खांटी जागरूकता के नाँव ह। अपना भविष्य के दाँव प लगाके तूं जवन निरनय लेले बाडू, ऊ तोहरा के ले डूबी।'

'ऊ कहत बाडें कि उनकर माई–बाप बियाह बाद हमरा के स्वीकार क ली...। शिक्षित आ सम्पन्न खान्दान से बाड़े...।'

'ई तोहार सपना बा... कबो साकार नइखे हो सकत। बाप–महतरी के स्वीकृति के बेगर कइल गइल शादी केतना सफल हो पावेला? ई लड़िका तोहरा के फंसा के आपन उल्लू सीधा करी। फेर फरार हो जाई... तूं ना घर के रह जइबू ना घाट के...। कमसिन उमिर के प्रेम बहुत घातक आ जानलेवा होला। एकर उद्देश्य सीरिफ शारीरिक वासना के संतुष्ठि भर होला। ई स्थाई ना होखे। तूं ओकरा प्रेम–जाल में मत फँस। ई ऊ जाल ह जवना से लड़िका त कसहूँ कूदफान के निकल जालें। बाकिर, लड़की ना...। ई उहे समय ह जब केहू अपना भविष्य के संवारेला आ बरबादो करेला। तूं ओकरा साथ छोढ़ द... पढ़–लिख के आत्म निर्भर बन। फेर कवनो योग्य आ मन पसंद लड़िका से तोहार शादी रचावल जाई। एतना अगुताये के जरूरत नइखे। वैवाहिक जीवन में जवना प्रेम के उदय होला, ऊ स्थाई

होला... सकारात्मक आ सृजनात्मक होला।'

'दादी, हम उनका से वादा कइले बानी... हमनी एक–दोसरा के बिना नइखीं जी सकत। प्रेम के कवनो उम्र ना होखे... ई त हर इंसान के जरूरत ह... प्रेम कइल गुनाह ना होखे। अब जे होई... हम उनके से शादी करब...।'

'का ई तोहार अंतिम फैसला बा?'

'हं दादी...।'

'फेर त हमरा जियला के धिरकार बा... हमार तपस्या बेकार बा... एकरा पहिले कि तूं ओकरा से बियाह करऽ, हमरा प्रान त्याग देबे के चाहीं...।' कहके दादी फफक परली।

हम उनका के चुप करावत कहलीं 'दादी हम हाथ जोड़त बानी, ई बात तूँ माई के मत बतइहऽ। वरना...।' हमरा धमकी के आसय दादी के समझ में आ गइल आ ऊ पर्स के हमरा हाथ में थम्हावत रोवत–गिलगिलात अपना कमरा में चल गइली। ओह दिन दादी रात में खाना ना खइली। माई पुछली त पेट बथी के बहाना बना दिहली...।

ओही दिन से दादी के व्यवहार में परिवर्तन लखार होखे लागल। चेहरा के चमक उधियाये लागल आ जुबान रून्हाये लागल। सुबह के नाश्ता आ रात के खाना त माइये बनावस। बाकिर, दिन के उहे.. साइत हमरे खातिर। हमरा महसूस भइल ऊ सुबह के नाश्ता आ दिन के खाना बंद कर देले बाड़ी। बस, रात में सीरिफ दू गो रोटी खास।... माई के देखावे खातिर। माई से न कुछ बातो करस। बाकिर, हम कुछ पूछीं त चुपी लगा घालस। हम मन मार के रह जाई।

एक हप्ता बाद दादी के सीना में भयंकर दरद उपटल। ऊ जोर–जोर से कराहे लगली गनीमत रहे माई ड्युटी से लवट आइल रहली। हमनी उनका के अस्पताल पहुँचवलीं। अभी डॉक्टर लोग जांच करते रहे कि उनकर हार्ट फेल हो गइल। आँख तरेरा गइल। बाकिर, जब ऊ लोग बतावल कि माता जी के मौत सदमा का चलते भइल बा त हमार दिल धकधकाये लागल। हमनी के रोवाई फूटि परल। शव के शीतगृह में रखवा के हमनी घरे अइलीं। हमनी की चीख–पुकार सुनके आस–पास के लोग जुट गइल। मकान–मालिक कैंप–ऑफिस में फोन कइलीं। चाचा जी के सूचना दियाइल।

चाचा जी के अइला प पड़ोसी लोग के सहयोग से दादी के दाह–संस्कार कइल गइल। एकरा बाद हमनी चाचा जी के साथ गाँव चल गइली। कजिया उहवें भइल। कुछ दिन के बाद जब माई के छुट्टी समाप्त होखे के भइल त हमनी वापस लौट अइलीं।

गाँव से लवटला का बाद हम अपराध–बोध से ग्रसित रहे लगलीं। ना दिन में चैन, ना रात में नीन्ह। जब देखीं... जहां देखीं... खाली दादी देखाई देस। हम का करीं, कुछ समुझ में ना आवे। डर, चिन्ता आ बेचैनी हमार पीछा ना छोड़त रहे। दादी के निधन ना, हत्या भइल रहे, उहो हमरे से... हमरा आचरण आ बात व्यवहार से। एह अपराध बोध से मुक्ति के उपाय का बा? ई त दादिये बता सकत रही...।

दादी, जब कबो फुरसत होखे रामचरित मानस के पाठ करस। एक दिन अचानक हमार नजर ओह ग्रंथ प परल। हम ओकरा के रैक पर से उतरनी। हमरा इयाद परल, निधन के एक दिन पहिले दादी ओकरा के बड़ा ध्यान से पढ़त रही। अपना एकरसता आ घुटन से मुक्ति खातिर हमहूँ ओकरा के पढ़े चहली। हम ओकरा के टेबुल प रखलीं आ कुर्सी प बइठ के जसहीं पहिला पन्ना पलटी कइलीं, एगो चिट्ठी मिलल। लिखल रहे–श्रेया, तूहीं हमार प्यार हऊ... हम तोहरा के बरबाद होत नइखीं देख सकत... तोहरा खुशी में बाधको नइखीं बन सकत... एही से हम तोहरा से विदा लेबे जा रहल बानी... एक बात इयाद रखिहऽ... हमरा आत्मा के शांति तबे मिली जब तूं पढ़ लिख के बड़ा ऑफिसर बनबू...। तोहार दादी।

चिट्ठी पढके हमरा देह में सनसनी फइल गइल। हाथ काँपे लागल। देह पसेना से भींज गइल। एक बारगी हमरा मुँह से निकलल– 'दादी'... आ आँखिन से आँसू झरे लागल...। हमरा महसूस भइल, नैतिकता, सहजता आ सरलता के प्रतीक दादी, सही माने में हमरा से प्यार करत रही। उनकर प्यार निःस्वार्थ आ छल–कपट से दूर रहे। हमरे खुशी, उनकर खुशी रहे आ हमरे दुख उनकर दुख। ऊ हमरे खातिर जीयत रही आ मरियो गइली हमरे खातिर... हमरे उच्च शिक्षा आ सुखमय भविष्य खातिर ऊ पाई–पाई जोड़के रखली...। तब हमरा बुझाइल, प्यार आमोद–प्रमोद भा मजा ना ह... प्यार, भावुकतो नइखे हो सकत... संवेदना, वासना आ उत्तेजनो नइखे हो सकत...। विनोद के प्यार में भोग के इच्छा बा... भटकाव आ अनिश्चितता बा... ई सच्चा प्यार नइखे हो सकत... हमार दुरभाग बा कि हम उनका झाँसा में आके पथ भ्रष्ट हो गइलीं... आ सच्चा प्रेमी के ठुकरा दिहली धिरकार बा...।

एक दिन माई जब ड्युटी से लवट के अइली त पूछली– 'श्रेया, आज काल्ह तूं कॉलेज नइखू जात का?' उनका शंका भइल होई।

'ना माई...। दादी के गुजरला का बाद हम मानसिक रूप से स्वस्थ नइखी रह गइल... पढ़ाई में मन नइखे लागत। दिन–रात हम उनके चिंतन आ आत्म–विश्लेषण

करत रहत बानी... अब तोहरा से का छिपाई कि...।' हम माई से सभकुछ साफ–साफ बता दिहलीं। सुनके ऊ कपारे हाथ ध लिहली। हम फेर कहलीं– 'तूं चिंता मत करऽ हम कसम खात बानी, अब से अइसन भूल ना होई... पह फाट चुकल बा... मुक्ति के युक्ति देखाई दे रहलि बा... हम एह दलदल से बाहर निकल के रहब... अपना लक्ष्य के पावे खातिर अब हम कुछुवो करे के मन बना चुकल बानी... हम दादी के मनोरथ पूरा कके रहब...।

'ई काम एतना आसान नइखे। बाकिर, असंभवो नइखे। अपना लक्ष्य तक पहुंचे खातिर बरियार इच्छा–शक्ति, साहस आ संकल्प के जरूरत होला। प्यार आ नफरत एके सिक्का के दू पहलू होला। सिक्का के आस्ते आस्ते पलटी करे के प्रयास करऽ। आत्म–विश्वास के साथ एह दलदल से सरकबू तबे जंग जीत पइबू... हम तोहार मदद करब... बस, अपना प्रगति के जानकारी देत रहिह...। समस्या से भगला से समाधान ना निकले... मुकाबला करऽ... तूं कॉलेज जा... अपना पढ़ाई प धेयान केन्द्रित करऽ... अभी ढ़ेर काम बिगड़ल नइखे...।' फेर ऊ हमरा कान में जवन कहली, हम चकित हो गइलीं।

'हं माई, तूं ठीक कहत बाडू। हम असही करब.. तबे हम तोहरा लोगिन के सपना साकार कर पाइब... एह झूठ में सभकर हित छिपल बा...ई पाप नइखे हो सकत।

हम कॉलेज जाये लगली आ सिक्का के पलटी करे में लाग गइलीं। बात–चीत के दौरान एक दिन विनोद से हम अपना एगो अइसन अंदरूनी रोग के बारे में बतवलीं, जवना प ऊ नाक–भौंह सिकोड लेहलें। माई के सुझाव, कामयाब भइल आ ऊ फेल...। सच्चा प्यार त सभकुछ कबूल करेला। धीरे–धीरे ऊ खुदे हमरा से दूर भागे लगले.. एकरा विपरीत हमहीं कुछ दिन ले उनकर पीछा कइलीं।

स्नातक परीक्षा में प्रथम श्रेणी से पास कइला का बाद हम साल भर के कोचिंग कइली। एक्स.एल. आ. आई द्वारा संचालित एच.आर.एम. के कठिन कोर्स खातिर हमार चयन भइल। हमरा उत्कृष्ट प्रदर्शन का चलते देश के प्रतिष्ठित स्टील कम्पनी अपना कैंपस सेलेक्शन में हमरा के लॉक कइलस। एक साल के प्रशिक्षण का बाद उहे कंपनी, हमरा के प्रबन्धक के पद प नियोजितो क लिहलस।

नियुक्ति पत्र लेके सबसे पहिले हम दादी के तसवीर का सोझा गइलीं आ जसहीं कहलीं, 'हमार श्रद्धांजलि स्वीकार करऽ दादी! हमरा के माफ कदऽ...।' तसहीं हम रोमांचित हो उठलीं। लागल, उनके आंसू हमरा आँखिन में उतर के उनका पत्र के अभिषेक कर रहल बा...।

••

कार्तिक नगर, खडगाझाार, एस. एस. अटोमोटिव सर्विस सेंटर के पास/पो. टेल्को वर्क्स, जमशेदपुर–831004

पियासल

राजगुप्त

एगो आदमी इची मनबढ़ू रहले आ उनकर नाव रहे चनरमा। चनरमा के एक दिन बहुत जोर के पियास लागल, जुरते हैण्ड पाइप की लगे चोहँपले। पता ना कवना बाति से उनकर मन भिनुकि गइल। चापाकल के पानी ना पियले। ओइजे भइल उनका के एक जगह पनिसरा चलत लउकल। बतासो ओइजा राखल रहे। पानी पीये खातिर लगे चोहँपले। देखले एकही गड्डुआ से सभका के पानी पिआवल जाता! अंजुरी से सब पानी पिअता। ओइजा उनकर मन ना पतिआइल ओइजो से हटि गइले। मनेमन सोचले। इनार के पानी भल भेंटाई। इनार खोजत–खोजत आगा बढ़ले। बजारि में एक जगहा बोतल में पानी बिकात रहे। सपनों में ना सोचले रहले कि प्लास्टिक के बोतल में पानी बेचाई। ओइजो उनका पानी पीये से मन उचटि गइल। इनार खोजत आगा बढ़ले। कई आदमी से इनार के बारे में सवचले। सभे कहल। 'पुराना जमाना के बाति जन करऽ। समुन्दर में सुई ना मिली।' बड़ी पछतइले। इनार के बाति भुला के पोखरा के फेरा में पड़ले। कई आदमी से सवचले। पोखरा होखी तब न केहू बताई। नामी–गिरामी शहर में ना पोखरा, ना इनार? 'फेड़ ना रुख, कहाये के बगइचा?'

चलत–चलत राहि में शहर के एगो पुरनिया भेंटइले। उनसे आपन दुःख रोवले। आपबीती बतवले। बुढ़ऊ आगमजानी रहले। देश–दुनिया के चरवले रहले। बूझि गइले चनरमा का चाहऽ ताड़े। चनरमा के नबुज देखत वैद लेखा बेमार के दवाई बतवले, कहले कि, 'चनरमा बाबू रउरा समुन्दर की पासे पहुँच जाईं। राउर मंशा पूरन हो जाई।'

पियासल चनरमा आगा बढ़ले। चलत–चलत समुन्दर की पासे पहुँचले। खुश भइले। एइजा हमार पियास जरूर बुता जाई। बाकिर पता ना का मन में आइल तमकि के समुन्दर से पूछि दिहले। का बड़ भाई समुन्दर जी! का रउरा लगे खाली एतने पानी बा? एतना कहते भर में सउँसे समुन्दर सुखा गइल। समुन्दर के तमाशा देखि चनरमा चकरिया गइले। ••

राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया

लघुकथा

बाइचानस

विजय शंकर पाण्डेय

बुधनी से रधिकवा कऽ माई इतवार के कहलेस कि बच्ची तू कल अपने फूवा किहाँ कंचनपुर जात हऊ तऽ रधिकवा बाई चानस तोके रस्ते में गोबर पाथत मिल सकेले।

'अच्छा तू ई बतावा कि बाई चानस रधिकवा मिल गइल तऽ ओसे का कहब ? बुधनी पुछलस

''कह दिहे कि माघ के दशमी के बाई चानस पहुना कलकत्ता से आ जइहैं तऽ ओनहूँ के साथे लेके चल आई। अउर मान लऽ बाईचानस नाही अइलैं तऽ टेनसन लेवे कऽ जरूत नाहीं हौ, अकेले चल आई। नरभसाये केना हौ। ओकर जेठ इसकूल कऽ रिकसा चलावेला बाईचानस ओ दिन इसकूल में छुट्टी रहै तऽ ओही से चल आई।'' रधिकवा कऽ माई कहलेस।

बुधनी बस से भिखारी पुर उतर के कंचनपुर पैदल चल देहलेस। बाईचानस बुधनी के जेठ कऽ तबियत ओही दिन खराब हो गयल। रस्ते में आधार कार्ड बदे बहुत भीड़ लगल रहल। बाईचानस बुधनी ओही रस्ते कंचनपुर जात रहल। रधिकवा कऽ निगाह बाईचानस बुधनी पर पड़ गयल। दउड़ के ओके पकड़लेस। ओके लेके पैदल घरे जाये लगल। रस्ते में एक पुराना कुवाँ जमीन के बराबर रहल। जवने पर बाईचानस बुधनी कऽ निगाह नाहीं पड़ल। ओकरे पास जाते बुधनी के रधिकवा ओमिन ढकेल देहलस। अपने अँधरे में गायब हो गइल।

बाईचानस पीछे से एक आदमी आवत रहल। जवन समझ गयल कि कोई आदमी बाईचानस कुआँ में गिर गयल हौ। रस्सी डाल के गाँव वाले बुधनी के कइसों निकाल लेहलन। बाईचानस ऊ जिन्दा रहल। नाहीं तऽ ओह कुँवाँ में गिरल कोई नाही बचत। बुधनी के जब होश आयल तऽ बतौलेस कि ओके कुँवाँ में रधिकवा ढकेल देहलेस। बाईचानस ऊ अदमी हमके देख लेहलेस, नाहीं तऽ देर तक हम रहित तऽ मर जाइत।

बाईचानस पुलिस ओही रस्ते गस्त पर जात रहल। भीड़ देख के रूक गइल। सब बात मालूम भइला पर रधिकवा के पकड़ लेहलेस। बाईचानस महिला दरोगो साथ रहलिन। रधिकवा से कड़ाई से पूछलिन कि बुधनी के कुँवाँ में काहे ढकेललीं? तऽ ऊ बतौलेस कि एकर ओकरे अदमी से गलत सम्बन्ध रहल। बाईचानस जब–जब ई हमरे अदमी से मिले कऽ कोशिश कइलेस तब–तब हम आ जाईं। एही से एके हम खतम कयल चाहत रहलीं। बाईचानस ऊ मुँह फुकौना कहाँ से आ गयल, जवने से बुधनी बँच गइल।

रधिकवा के उपर हत्या करे कऽ प्रयास करे कऽ मुकदमा चलल। बाईचानस रधिकवा के गवाह नाही पहिचान सकलन, जज साहब अपने फैसला में लिखलन कि बाईचानस सोहन गवाह के अलावा कोई अदमी रधिकवा के ढकेलत नाही देखले हौ। बुधनी बाईचानस अपनहूँ से गिर सकेले। रधिकवा के फँसावे खातिर ओके ढकेले के कहत हौ। एसे रधिकवा के अभियोग से बरी कयल जात हौ। सन्देह कऽ लाभ देके रधिकवा छूट गइल।

रधिकवा के जेल से छुटत–छूटत अन्हियार हो गयल रहे। भिखारीपुर चौराहा पर आवे में ओके रात कऽ दस बज गयल। बाईचानस ओ समय बिजलियो नाहीं रहल। अन्हार कुघ रात में रधिकवा जल्दी–जल्दी घरे जात रहल। रस्ते में ओके भुतहवा कुवाँ क खियाल नाही रहल। एही में बाईचानस ऊ ओही कुवाँ में फिसल के गिर गइल। ओ समय आस–पास बाईचानस कोई आदमी नाहीं रहल। सुबह भइले पर लोगन के बाईचानस रधिकवा मूड़ी के बल कुवाँ में गिरल मिलल।

भीड़ लगल रहल, लाश निकाले कऽ कोशिश होत रहल। पुलिसो खड़ी रहल। तैसहीं बाईचानस रधिकवा कऽ आदमी सोहना अपने नोकरी से आ गयल। शंका के अधार पर ओकरो के पुलिस गिरफ्तार कर लेहलेस। ऊ चिल्लात रह गयल कि हम तऽ अपने नोकरी पर रहलीं हैं, अबहीं त अबहियें बाईचानस आ गइलीं हँ।'' ••

विजयशंकर पाण्डेय, गुंजन कुटिया, नारायणी विहार कालोनी, चिरईपुर, सुन्दरपुर, वाराणसी–221005

गजल

संजय कुमार 'सागर'

[एक]

साफ पानी में कनई मिलावल गइल बा,
आदमी के तऽ झूठे फँसावल गइल बा।

आदमी, आदमी बनके जनमल रहे,
हिन्दू मुस्लिम इसाई बनावल गइल बा।

बाँट पवलस न जे धरती अउरी गगन
धर्म का नाँव पर ऊ बरावल गइल बा।

साँस के सूत जोगवल कठिन बा बहुत,
जाल जिनिगी प सगरे लगावल गइल बा।

देख लीं बाइबिल गीता अउरी कुरान
सब तऽ एकहीं से जनमल बतावल गइल बा।

••

गजल

आसिफ रोहतासवी

[एक]

तरक्की क कतना ढिंढोरा पिटाई
जमीनी हकीकत बा हावा–हवाई।

जमीरे बिकाइल बा जब 'मीडिया' के
इ सरकारिये नू ककहरा पढ़ाई।

उमिरिया चलावा के चारे दिना के
बुझा जाई तहिया जे नलपट धराई।

सभे खुद के लाठी बचावे में लागल
भला कइसे किसुना गोबरधन उठाई।

सुशासन में चानी कटे 'आसिफे' के
जे चानी क जूता चढ़ावा चढ़ाई।

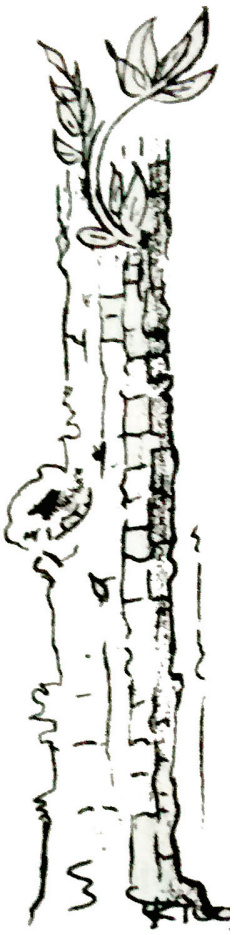

[दू]

दुख जियलीं सुख पइलीं का
तब सपनो से गइलीं का?

जतना पवलीं, बाँटे के
अपना खातिर धइलीं का!

ए फिकिरे अब का मूई
कब का पियलीं, खइलीं का

साँच बा राउर ना भइलीं
बाकिर, अपनो भइलीं का?

के हमरा के ना जोखल
'आसिफ' हम अजमइलीं का!

[तीन]

इहाँ जे न चीन्हल नजाकत समय के।
कहाँ जान पवलस उ ताकत समय के।

दबे पाँव आइल कि ना जान पवलीं
मगर देखलीं जात, माकत समय के।

नवल देह माई के, बाबू के झुर्री
झलक जात चेहरा बा थाकत समय के।

सफर अब बचपन से पचपन के पूरी
निहारीले केशन में, पाकत समय के।

हँकाइल बा हाथे समय के जे 'आसिफ'
उहे पोंछ अँइठत बा हाँकत समय के।

••

श्री इन्द्र कुमार सिंह
हिन्दी विभाग, पटना साइन्स कालेज, पटना–5

भुलाइल शब्द, गायब होत भावार्थ

मिथिलेश कुमार सिंह

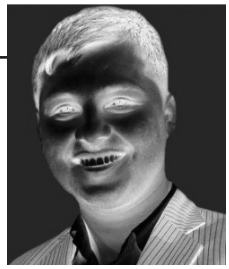

समय–संदर्भ का हर भाव के पहचान में बोली आ ओकरा लहजा के खास योगदान रहल बा। बड बुजुर्ग लोग एकरा खाली एगो साधारण उदाहरण देलन कि 'राम' शब्द के कई भाव में प्रयोग होला। जइसे केहु से मिलला पर 'राम राम हो चाचा,' कौनी चीज से घिन्न आवता तबो 'राम राम,' आदमी के जब शमशान पहुँचावल जाला तबो राम के नाम प्रयोग में आवेला। कहल जा सकेला कि बोली में, भाषा में भाव बहुत मायने रखेला... भोजपुरी ए मामला में बहुत रईस रहल बिया। एक एगो भाव खाती, अलग अलग शब्द... सुन के करेजा जुडा जाला और समझे में तनिको दिमाग पर जोर ना डाले के परेला। दिल्ली में रहत रहत कई गो शब्द भुला गइल बा, लेकिन कबो कबो मन परिये जाला। अब काल्हे के बात सुनाईं आपसे, खाना खात–खात पत्नी से कहुवीं कि 'तनी अउरी भात दिहऽ हो!' एतना सुनते हमार जनाना कहि दिहुबी कि 'भात पात मत बोली। सीख लिहन राउर बबुओ उहे।' हालांकि, हमर जनाना भोजपुरिये क्षेत्र से हई लेकिन का कहीं, मनवें खट हो गउवे, बाकी कुछ बोलुवीं ना। हँ बिचार जरूर घुमरियाए लगुवे कि 'भात पाकल चावल'' होला, त ओहू के चावल कहे के कवन तुक बा'... ससुरा किराना के दुकान पर जा तबो चावल कहऽ अउरी कवनो होटल में जा तबो चावल कहऽ। आजकल बिहार चुनाव से पहिले, गाय भैंस के खूब चर्चा चलता। अपना गाँव में एक हाली हमरो के दूध दूहे के सवख चढ़ल त बड़का बाबूजी नोएड़ा और बाल्टी थमा देहलन। हम बइठ के गाइ के ओकर पिछिला गोड़ में नोएड़ा छान के सोचे लगनी त बड़का बाबूजी बोललन, 'अरे पहिले ओके पेन्हाये त दऽ। ओही घरी पता चलल कि पेन्हाइल, दूध निकाले का पहिले के क्रिया हवे।

राधो काका के लड़िका ओघरी लंठई में 'स्कोप' बनावत रहे ओह दिन ऊ हमार बड़का बाबूजी से पूछे अइलन कि ओकरा के कैसे सुधारल जाय! तब बाबूजी टुन से कहलन कि ओकरा के 'नथिया' पहिना द हो... सुधर जाई। हमरा तब ना बुझाइल कि कवन नथिया पहिनावे के बात होत बा। लेकिन कुछ साल बाद सचहूँ राजेश सुधर गइलन! चट्टी प जाके नवछेड़िहन के सँगे घूमे वाली आदत त छूटबे कइल, संगे संगे आपन घरहूँ के काम में उनकर देह नवे लागल। पता चलल कि नथिया पहिनावे माने 'शादी करे के सलाह देले रहलन बडका बाबूजी। भोजपुरी भाषा के बतिये निराली बा। भोजपुरी कृषि–समाज आ लोक के भाषा रहल बिया। ओकरा शब्दन क हाल ई बा कि अनुवादे कइल कठिन बा। जइसे 'थेथर' जवना भाव में बोलल जाला ओके व्यक्त करे खातिर हिन्दी के कई गो शब्द मिलावे के पड़ी – जइसे 'जिद्दी' – बेहया, 'न मानने वाला' आदि। तब्बो ऊ व्यंजना ना आई, जवन ' थेथर' में बा। बीज जमला के अँखुवा, डिब्भी पर्याय बा। हिन्दी में 'अंकुर' बा। लोक–भाषा आँख वाला अंकुरण खातिर 'अँखुवा' बना लिहलस, जइसे आलू, ऊखि क अँखुवा आ जौ–मटर–गेहूँ के जमला खातिर डीभी आ 'डिभियाइल बोलल जाला। अइसहीं कई गो शब्द बाड़न, जवन अर्जुन के तीर लेखा अचूक। जरूरत बा ए भावपूर्ण शब्दन के समझला, सहेजला के अउरी ओकर लगातार प्रयोग कइला के काहें कि ई खाली शब्द ना ह हमन के संस्कृति, सोच और पूर्वज लोगन के संस्कार ह। जवन भाषा अउरी शब्द के माध्यम से हमनी के वंशजन में आई। आज कल इंटरनेट के जमाना बा अउरी पूरा संसार एगो गाँव लेखा हो गइल बा, अइसन में ऑनलाइन प्रयास बहुत जरूरी बा कि शब्द आ ओकर भावार्थ सहेजल जाउ। अंग्रेजी के ऑक्सफोर्ड लेखा ना त कमसे कम हिन्दी के भार्गव लेखा ही एकर प्रमाणिक शब्दकोष बन जाव त ए मामला में ई मीले के पत्थर हो जाईं। हालाँकि गूगल पर खोजे जाई त 'अँजोरिया' जइसन एगो दूगो बेबसाइट जरूर लउकेला, लेकिन ए प्रयास में अउरी जान लगावे के जरूरत साफ महसूस होता। पटना में, 'भोपाल' अउरी दिल्ली में भोजपुरी अकादमी उम्मीद के किरण जरूर बा। ऑनलाइन दिशा में विशेष प्रयास के जरूरत बा। अइसे त भोजपुरिका डाट काम, नियर साइट लगातार खबर, साहित्य रपट, मनोरंजन आदि पोस्ट करत रहेला। ओकरा प 'टटका खबर' आइल करेला। भोजपुरी का पत्रिकनो के आपन साइट बा। जरूरत बा, एकर इस्तेमाल तेज कइला के। अपना भाषा के ताकत, आपन ताकत होला। पढ़ले–लिखले से, ई बढ़ी।••

मिथिलेश कुमार सिंह,उत्तम नगर, नई दिल्ली

कहानी

अनगराहित

डा0 शारदा पाण्डेय

मणिदीप के अँजोर में बइठल सत्यवती एकटक ओह दीआ का ओर देखत रहली, जे सोने के दीप–दण्ड पर अविचलित भाव से अँजोर बाँटत रहल। ना ओकरा पवन से डर रहे कि लौ काँपि जाई ना एकर चिन्ता रहल कि कवनो हाथ आके ओकरा के बुता दी। ऊ बिना डर सँकोच के खाली अँजोर बाँटत रहे। एह अँजोर में एगो कर्तव्य निष्ठा रहे। व्यक्तित्व ओकर पत्थर रहे बाकिर भाषा ओकर प्रकाश रहे। सत्यवती के एकटक दृष्टि ओह अँजोर के पार कुछु जोहत रहे, देखत रहे ऊ निश्चेष्ट होत जात रहली। सोचि लिहली नियति कवनो रूप में आ सकेले। ओकर खेल हऽ जीत के संगे परिहास करे के। नाहीं त कइसे राजा वसु के बेटी के एगो मछरी लील गइल। केहू के चिन्ता ना भइल ओह मछरी के जोहे के। ऊ अवरू मछरी से विशाल आ कुछु अलगा जरूरे रहल होई। राजा कतना उपचार कइले होइहें, ओके जोहे के? अगर सचहूँ उनका मन में तनिकियो प्रेम रहल होइत। कइसन नियति बा कि जवन मछरी राजा के ना मिलल ऊ एगो मल्लाह के मिल गइल। आकि ऊ राजा खातिर अनगराहित रहली।

अब घटना कई रूप में सोझा आवतिया कि एगो भाइयो रहल, जेकरा के चेदि नरेश वसु पाल लिहले। बाकिर सत्यवती के नियति मछरिए से बन्हाइल रहल। बुला एही से मछरी के जोहे में राजा के परिचर सफल ना भइले। ऊ अनचिते मल्लाह के जाल में फँसि गइल। अनगुतहा उठि के राज नियर दाशराज गंगा मइया के गोड़ लगले 'हे माता! पूरा जिनिगी मछरी पकड़त बीतल, ईहे रोजी–रोटी के साधन बा। मइया कुछु अइसन करितू कि आपन दरिद्रता बिला जाइत।' बुझाइल जइसे गंगा के ओह चित्र में एगो लहर उठल आ दशराज के दहिनी आँख आ हाथ अनासे फरके लागल। मने मन कुछ सोचत–गुनत चलि गइलन। नदी में जाल फेंकलन मन कतो अनते चलि गइल रहे तले बुझाइल जइसे हाथ पर एगो बोझ परल, रोज ले भारी। बल लगा के जाल घिंचले। कइसे दो एगो बड़ मछरी दाशराज के भेटाइ गइल। ओह मछरी के देखि के ऊ अचम्भे में पड़ि के घरे ले अइलन। दाशराज अपना पत्नी से कहलन, ''अतहत मछरी त एने गंगा जी में कबो ना भेंटाइल। काहें ना एकरा के राजा के भेंट कऽ दीहल जाउ। ढेर धन भेंटाई।'' तऽले कुल्ही मलाह टोला के लोग ओके देखे खातिर भीड़ लगा लिहलन। मछरी के आँखि में जाने कतना वेदना रहे। ऊ हाँफत रहे। ओकरा पेट के बढ़ल व्यास अवरू तनाइल जात रहे। दाशराज के मेहरारू कहली, ''एजी एकरा पेट में कुछु सुगबुगाता। हमरा जाने आजुए एकर घरी आ गइल बा। बाकिर अइसन करत कवनो मछरी के आजु ले ना देखनी। काहें ना एकर पेट चीरल जाउ! देखल जाउ का बा? एकर आँखि देखीं ना, बुझाता उलटि जाई।'' दाशराज कहलन–''मेहरारून के बात में पड़ि के हम आपन लाभ के संजोग ना गँवाइब।''

सभे कहे लागल, – ''साँचहूँ एकर पेट हिलत–डोलत बा। देखे के चाहीं।'' दाशराज बूझि गइलन कि अब उनुकर ना चली। उनको मन में तनी उत्सुकता जागल। केहू ओजू से टसके के ना चाहत रहल। तनिकी भर छुरी छुआते मछरी के पेट फाटि गइल। ओकरा पेट में एगो अउरी ढोकरी नियर लउकल। दाशराज के मेहरारू ओके टोवली। टोवते–टोवत तनिकी सुहरावत उनुकर नोह लागल कि एगो सुन्नर लइकी हाथ गोड़ चलावत लउकल। पूरा भीड़ सहम गइल, अचंभा परि गइल। ई कइसन संयोग बा कि निःसंतान दाशराज खातिर मछरी देवता बनि के बेटी के आशीर्वाद दे गइल। अइसन तऽ कतो देखल–सुनल ना गइल। चारों ओर चर्चा हो गइल, लइकी के सुनराई, ओकर बाढ़ दिन–दिन चन्द्रकला नियर बढ़त–गइल। पूरा टोला ओकर जान–मान करे–कहे ''ऊ देवकन्या हऽ'' बाकिर ओकरा देह से मछरी के गंध ना मिटे। कतहूँ रहे ओकरा गँध से ओकर उपस्थिति बुझा जाउ–ऊ मत्स्य गंधा कहाए लागल। साँच बोलल ओकर सुभाव रहल, रूप ओकर आकर्षण आ गंध ओकर पहिचान रहल। नदी में उतरते ऊ जलपरी बनि जाउ। बढ़िआइल गंगा से ओकरा डर–भय ना लागे बलुक जइसे –जइसे गंगा बढ़िआसु, उनुका लहर के ध्वनि मत्स्यगंध के अइसन खींचो कि ऊ मछरी नियर सत् से गंगा में सरकि जाउ। दाशराज आ उनुकर मेहरारू डेरा जासु बाकिर 'सत्यवती' के रोके के साहस उनुका में ना रहल। मत्स्यगंधा के आँखि के चमक उनुका अनुशासन के कठोरता के ढील कऽ देत रहल।

बेटी के प्रसन्नता के बाधित कइल अनुका ना रूचल एसे ऊ मत्स्य गंधा के 'नाइ' थमाइ के धरमकारज वाला यात्रियन के नदी पार करावे के दायित्व दे दिहलन। मत्स्यगंधा निहाल हो गइली। लोगन के पार करावल उनुका खातिर तीर्थ रहल। कबो कोपित धार के चुनौती स्वीकार कइल, कबो शांत धार में हलचल भरल इनकर रोज के मनोरंजन हो गइल। राति में आइके महतारी से दिन के घटनन के चर्चा करसु त महतारी के करेजा घमंड से भरि जाउ। अइसन बेटी केकर होई? सइ गो बेटन के बरोबर। उलटल नाव सोझ करे, यात्रियन के बिना लालच के पार करे में बिना मेहनताना लिहले तनिको कोताही ना करसु।

दाशराज बेर–बेर सोचसु, का जानी केकर कन्या आजु हमरा घरे मलाहिन बनल बिआ। एकरा आवे के

साथ घर के दरिद्रता बिला गइल बा, बुझाता अँजोर चारो ओर से भइल जाता। ई बेटी कवनो राज परिवार में जाए जोग बिआ। सोलह बरिस के होत–होत मत्स्यगंधा जइसे रूप के आगि हो गइली। अनुकर चारो ओर चर्चा होखे लागल। उनुका ऊपर कवनो प्रभाव ना पड़ल ।ना तऽ उनुका काम में ढिलाई आइल ना उनुका मन में नारी सुलभ–श्रृंगार के प्रति कवनो आकर्षण भइल। खाली यात्रियन के पार लगावल उनुका आनन्द के आधार रहे।

सत्यवती के ध्यान टूटल, अपना कक्ष में अकेल रहली। कब दासी आइ के उनुका सेज पर बेला के कली सजावे लागल उनुका ना बुझाइल ना चद्दर के मोती के झालर हिलल लउकल। उनुका तऽ ईहे लउकल कि जमुना नीला आकाश नियर लहर पर उनुकर नाव झिझिरी खेले के तेयार रहे कि एगो साधू लउकलन। बड़–बड़ डेग बढ़ावत नदी के किनारा पर आवत। चारो ओर तकली, खाली उनुके नाव नदी के छाती पर रहे। सूरज में ढेर गरमी ना रहे बाकिर अबहीं अँजोर भरपूर रहे। एक खेप नाव जा सकत रहे। एने–ओने देखली अवरू कवनो यात्री ना रहे। खाली एगो साधू खातिर नाव ले गइल तनी मन के अनमनाह लागल। साँवर बान के साधू बाबा जटा बन्हले एगो कमण्डल लेले आके खड़ा हो गइले। नाव के संकेत से बोलवले। मत्स्यगंधा सहजे चलि अइली। साधू बाबा कहले–'बेरा नवत नदी पार करा दऽ।'

कहि के नाव पर आइ के बइठि गइलन। मत्स्यगंधा के पुष्ट हाथ पतवार चलावे लागल। हवा के वेग तनी बढ़ल तऽ हाथ रोक के डाँड़ में आँचर कस के खोंस लिहली। अचानके आँखि परल साधू पर, देखली साधू के आँखि एकटक उनुकर पतवार चलावत देह के भाषा पढ़त रहल। ऊ तनी सकपका गइली। काहें कि केहुओ पुरूष के आँखि में ना देखे के महतारी के सिखावन उनुका धियान परल बाकिर सोझा वाला के का कहसु? ओकर आँखि तऽ इनकर सिखावन ना मानी। चारो ओर देखली कतो दूर–दूर तक केहू ना लउकल। नदी के बीच धार! उनुका कुछु ना बुझाइल। पूरा बल लगा के जल्दी–जल्दी नाव खेवे लगली कि ऋषि कहलन, ''हमार नाँव पराशर हऽ। एह गंगा भगिनी आ सूर्य के साक्षी बना के हम तहरा के अपना पत्नी रूप में स्वीकार करे के चाहतानी। एह शुभ नक्षत्र में प्राप्त संतान विश्व–पुरूष के रूप में जानल जाई। अतना शीघ्रता में हमरा आवे के इहे प्रयोजन रहल हा। हम बलात–अपना के आरोपित नइखीं करे चाहत। बाकिर प्रकृति आ नक्षत्र एह संयोग के सहज स्वीकृति देता''। मत्स्यगंधा अचानक एह माँग पर चिहुँक गइली। ई ऋषि के कइसन दृष्टि बा? ऊ तऽ एह विषय में अब ले सोचबे ना कइली। ई अनजान ऋषि गंगा के बीच धार में एगो मलाहिन के देखि के विचलित हो गइलन? ई कहाँ ले उचित बा? बाकिर एह ऋषियन के कोप दृष्टि बड़ा घातक होला, एहू सच्चाई के सत्यवती जानत रहली। अपना माई से इहनी लोग के शाप–बरदान के कई कथा सुनले रहली। अपना जन्म के अद्भुत कथा उनुका सोझा रहे। नियति के चक्र में बन्हाइल उनुकर जीवन कर्म उनुका आँखि में नाचि गइल।

ऊ पराशर से स्पष्ट कहली, ''महात्मन्। आजु तक अक्षत कुमारी बानी, तन–मन दूनू से पवित्र कन्या पिता के सम्पति होले। पिता जेकरा से हाथ धरा दी ऊहे ओकर पति हो जाई। ई अधिकार पिता के होला। हमरा पर खाली हमार अधिकार नइखे। परिवारो के अधिकार बा। दोसर बात कि हमरा आ रउरो में वर्णगित, शिक्षा संस्कारगत सामाजिक अंतर बा। अइसन स्थिति में हमरा स्वीकृति के असंगति सहज बा।'

ऋषि पराशर मुस्किया दिहलन, ''तहार रूप आ शील निषादकुलीय नइखे। बात–व्यवहार कुलीन कन्या से हीन नइखे। शिक्षा के स्तरीयता ना कहि सकेनी, बाकिर संस्कार सत्यनिष्ठ बा। एगो पत्नी–स्त्री के ई सहजगुण हमरा संतोष आ तृप्ति के आधार बा।

दोसर तथ्य ई बा कि हमार चेतना कइसे तहरा पर आके केन्द्रित हो गइल! ई तर्कातीत बा। ईहो बात हमार अनुकूलता सिद्ध करत बा कि एह घरी वासना के प्रमुखता मन में नइखे एगो अइसन पुत्र–रत्न के इच्छा बा जवन अद्वितीय होई। उचित बा कि बात में समय ना देके तू एगो निर्णय कऽल।'

सत्यवती अचकचा गइली। ऋषि के रूप आ उनुकर प्रभाव, वाणी के सत्यता उनुका के प्रभावित करत जात रहल। ऊ पूरा दृष्टि से ऋषि के ओर तकली। पवली ओह दृष्टि में आग्रह, प्रकाश आ दृढ़ता रहल। ओजू कवनो तरह के छल ना रहल। ऊ सूर्य के ओर आ तट की ओर देखि के मुँह नवा लिहली। पराशर मर्यादा आ शील के एह मौन भाषा के समुझ लिहले। नौका के चारो ओर से जइसे जमुना के साँवर लहर तोप लिहली। बाकिर अबहियों मत्स्यगंधा ऋषि के उपयुक्त ना रहली। उनुका देह के मत्स्यगंध सामीप्य भाव से दूरी बनवले रहल। ऋषि पराशर सूर्य विज्ञानी रहलन। सूर्य के किरण से पद्मगंध के सृष्टि कइलन। ओह पद्म सुगंध के पवित्र मादकता से अभिभूत सत्यवती कब ऋषि के ऋचा बन गइली, उनुका स्वयं ना बुझाइल। जब बुझाइल तऽले उनुका अपना में एगो अइसन परिवर्तन लागल कि ऊ ऋषि के चरण में स्वयं विनत हो गइली।

ऋषि के प्रति उनुकर संकोच समाप्त हो गइल। ऊ ओह नदी–द्वीप में पूर्ण नारी के जीवन जीए लगली।

दाशराज तक पराशर अपनहीं आपन संदेश पहुँचा दिहले। ऊ ना चाहत रहले कि मत्स्यगंधा के जीवन में प्रवाद के स्थिति बनो। उनुकर गान्धर्व विबाह पूरा सफल भइल। प्रतिक्रिया में सत्यवती के देह से मत्स्यगंध समाप्त हो गइल। ऊ पद्मगंधा, गंधवती के रूप में ओह द्वीप में जानल जाए लगली। उनुकर सुगंध एक योजन तक चारो ओर फइलल रहे। पराशर आपन पूरा समय सत्यवती के देसु। कतना ज्ञान चर्चा, पुराण कथा, वेदमंत्रन के व्याख्या करसु; सुन के सत्यवती आश्चर्य से भरि जासु। बाकिर सत्यवती के विस्मय होखो कि पराशर के आँखि में आसक्ति भा भोग के कवनो लहर कबो ना उठे। एगो अनिर्वचनीय शांति, निष्ठा आ सत्यता के सागर लहरात रहे। उनका मन में प्रश्न उठे कि अतना प्रबल इच्छा कि एगो मलाहिन से सम्पर्क कइलन बाकिर इच्छा पूर्ति के बाद आजु ले कबो भाव–स्फूर्त–स्पर्श तक ना कइले। ई कवन भाव हऽ? ऋषि पराशर बुला उनुका मन के भाव बाँचि लिहलन। शांत भाव से मुस्करा दिहलन आ सत्यवती के ओर स्नेह भाव से देखत कहलन, ''हमरा मन में जाति–द्वेष भा घृणा नइखे। दोसर भाव ई कि हमरा तेज के धारण करे के बेला आ सामर्थ्य खाली तहरे में रहल। वातावरण के पवित्रता एह भाव के अवरू उद्दीप्त कइलस। तोहरा गंध विषयक हीनता कहीं से संतान पर कुप्रभाव मत डाले ओकरा के हटावल हमार धर्म रहे। पत्नी के सम्मान बिना, श्रेष्ठ संतान के प्राप्ति सम्भव नइखे। हम भविष्य ईहो देखतानी कि तहरा भाग्य में राजयोग बा, जवन हमरा संगे सम्भव नइखे। एसे तहरा प्रति आसक्ति के कवनो कारण हमरा मन में ना आ सके। हम आपन संतान लेके तहरा के मुक्त करे के चाहतानी।'

सत्यवती अचकचा गइली, ''का मतलब? रउआ हमके छोड़ जाइब? ई तऽ छल हऽ, अपराध हऽ।''

ऋषि के बलिष्ठ देहि पर उनुकर आँखि फिरि गइल। मन भइल उनुका श्मश्रु पर हाथ फेर देसु। जटा के खोलि के छितरा देसु। बाकिर ऊ अइसन कुछु ना कइली। पराशर कहलन, ''तहरा कुल में दोसर बिआह वर्जित नइखे। दोसर बात कि बालक हमरा लगे रही, तहरा खातिर कवना बन्धन ना रही। तीसर बात कि सन्तानोत्पति के बाद तूँ फेरू पहिलहीं अइसन हो जइबू। हमरा लगे रहि के जवन औषधीय भोजन तहरा के मिलल बा ओकरा कारण तूँ चिर यौवना रहबू। वृद्धावस्था तहरा पर कवनो प्रभाव ना डाली।'' अतनो पर जदि तूँ हमरा से असंतुष्ट बाडू त बतावऽ हम का करीं? हम केहू के भाग्य ना बदल सकीं। बाकिर अतना निश्चिते कहि सकेनी कि केहू तहार अपमान ना करि सके। तूँ ऋषि पत्नी हऊ। खाली भोग्या ना। तोहार जीवन राजवंश खातिर बा।

सत्यवती के मन मरूआ गइल। बाकिर एह अकेल द्वीपीय जीवन के कवनो अवरू अर्थ उनुका ना बुझाइल। पति के प्रति आकर्षण त कम बाकिर श्रद्धा भरपूर रहे। उनुका संगे बितावल जीवन संस्कृत जीवन के भूमिका रहे। समय पर जवना बालक के जन्म भइल, ओकर रंग–रूप पिता के, बाकिर आँखि सत्यवती के रहल। सत्यवती आपन पूरा वात्सल्य कृष्ण के दे दिहली। लइका एकदम श्यामल, रहे बाकिर, चैतन्य खूब। नदी के लहर के भाषा बूझे वाला। सत्यवती के कोरा में बुझाए जइसे गंगा में नील कमल खिलल होखो। अपना हाथ से जब सत्यवती के आँचर धइ के मुँह देखे तऽ सत्यवती के करेजा धक हो जाउ,। एह बालक के छोड़े के कल्पना कइके।

बाकिर अपना समाज में लवटे के इयाद उनुका के उत्सुक बना देव। पराशर से ध्यान खींचत रहसु, बाकिर कृष्ण के दूध भरल मुँह भुलाइल उनुका कवनो कठिन दण्ड से कम ना लागो। आ एक दिन आइये गइल जब पराशर सत्यवती के सिर पर हाथ फेरत बिदा मँगलन। कहलन, ''दुखी मत होखऽ। ई बालक जीवन भर तहार सहायता करी, आपन धर्म निभाई। तहरा के सदैव सम्मान मिली।''

सत्यवती के आँखि से दू बूँद लोर पराशर के गोड़ पर अनासे टपकि गइल। पराशर सत्यवती के भरपूर देखलन आ मुस्काइ के कहलन–''हमार सोचऽ। सृष्टि के अद्भुत रचना छोड़ के जा तानी। चलऽ तहरा के नइहर पहुँचा दी''। ईहो हमार धर्म हऽ।''

सत्यवती बालक के करेजा से अवरू सटा लिहली। मन भइल अपना शरीर के कुल्ही अमृत रस से ओकरा के तृप्त कऽ देसु मातृ धर्म केनियो से अधूरा मत रहो। पराशर एकटक उनुकर वात्सल्य, अतृप्ति आ द्वन्द देखत रहलन। फेरू दूर आकाश में देखत रहलन जहाँ साँझ उतरे के तइयारी में रहल।

सत्यवती एक बेर पराशर के ओर देखली आ आपन धर्म पतवार सम्हार लिहली। आजु उनुकर हाथ पतवार पर सधत ना रहल। बाकिर कर्त्तव्य के धार बड़ा तेज होले।... चला देले। सत्यवती आपन नाव अपने खेवत अइली। कृष्ण के पराशर के हाथे सँउप दिहली। कहली – ''रउआँ जाईं हम अपना राह पर अपने जइब।'' बाकिर ऋषि पतिधर्म निभावत दाशराज के पद्मगंधा के सँउपि दिहले ई कहत कि, ''राउर धरोहर अक्षत रूप में लवटावत बानी।''

दाशराज जइसे कृतकृत्य भइलन। सत्यवती अकेल हो गइली। केकरा से कहसु मन के पीर–व्यथा। महतारी के आँखि में हरघरी एगो प्रश्न लटकत रहल कुछु जाने के। सत्यवती कृष्ण के जन्म के कथा तक बता

दिहली। उनुका देहि से निकलत सुगंध उनुका कथन के प्रमाण रहे। कृष्ण के पराशर के सँउप देबे के प्रसंग पर आवत उनुकर आवाज काँपि गइल। जइसे हिचकी बन्हा गइल। महतारी उनुका पीठ पर हाथ फेरली आ आँचर से लोर पोंछ दिहली। कहली, ''कुल्ही भुला जा। फेरू से नया जीवन प्रारंभ करऽ!

ओतने दिन के साथ रहल बाकिर कतना ऊँचाई, शांति आ सुख रहल। तूँ कतना भाग्यशाली बाडू कि ऋषि के बरदान तहरा संगे बा। उठऽ! आपन नाव सम्हारऽ। ऊहे तोहरा के बल दी।

सत्यवती के निखरल रूप–रंग फेरू चर्चा के विषय बनि गइल। दाशराज केहू के उनुका बीतल जीवन के कथा ना बतवले रहलन। ऋषि पराशर के ईहे आदेश रहल। सत्यवती के उपस्थिति लोग उनुका देहि गंध से पहिचान लेव। ऊ दिव्य गंध सभे पावे के चाहो। सत्यवती लाख प्रयास करसु कबो पराशर, कबो बालक इयाद आइए जाव। परिणाम होखो लोर के गिरल आ विश्वास के छूटल। गंगा के तिरवहीं जासु त एकटक देखत पराशर के प्रकाश झरत बड़–बड़ आँखि इयाद आवे, पहिला दिन के उनुकर भेंट–समर्पण इयाद आवे आ मन के झकझोर देव। कुल्ही अतीत सोझा आवे लागो। नाव खेवत ओजू तक पहुँचसु जहाँ जीवन रस से सरावोर भइल रहे, बाकिर ऊ द्वीप का जाने का हो गइल। दुबारा ना भेंटाइल। लहरन में झाँकसु बाकिर ओकर छाया तक ना लउके, बुझाला जइसे ऊहो ऋषि के सृष्टि रहल। मछरी त लउकऽसँ ऊपर नीचे जात क्रीड़ा करत। बाकिर इन कर आपन मन बालक के इयाद कऽ के मछरिये नियर तड़प जाए। सत्यवती पद्मगंधा होके साधे लगली अपना मन के। बाकिर कतनो उतजोग करसु कृष्ण के दूध भरल मुँह, बड़ी–बड़ी आँखि, पराशर के उज्जवल दृष्टि, उनुकर कथा–पुराण कहत, इनका के संस्कारित करे के प्रयत्न मन परिये जाइ। जानि गइली कि पराशर आपन देय चुका गइलन। अइसन मानसिक संस्कार दाशराज कइसे दे सकितन?

अब उनुकर मन नदी पार जाए के ना होखो। ना मन के उदासी घटे। कबो–कबो अपना चिन्तन में अइसन डूबि जासु कि आस–पास के वातावरण भुला जाउ। अइसहीं एगो साँझ रहल बसंत ऋतु के। सूर्य डूबल ना रहलन। ऊ सोचत रहली कृष्ण के बारे में; कतना बड़ हो गइल होइहें। ऋषि कइसे उनुका के सम्हारत होइहें? का जाने केकर आँचर धइ के आपन बात मनवावत होइहें? कुल्ही लइकन के माता–पिता दूनू मिलत होई तऽ ई मातृ विहीन बालक कइसे अपना के समुझावत होई? सत्यवती के मुँह पर मन के उदास साँझि ढेर गहिरा गइल। एगो ठंढा साँस लेके जइसहीं उठि के खड़ा होखे के चहली, देखली, एगो प्रौढ़ आयु के राजपुरूष जेकरा मुख पर चमक रहल, शरीर बलिष्ठ रहल, मुकुट में हीरा दमकत रहल बड़ा विस्मय से उनुका के एकटक देखता। सत्यवती के हृदय के धड़कन बढ़ि गइल। कहीं पराशर के भविष्यवाणी के तऽ साँच होखे के संयोग नइखे आ गइल? ऊ सधल आँखि से देखि के चले चहली। तऽले ऊ राजपुरूष आपन परिचय देबे लगलन ''हम कुरूवंशी महाराज प्रतीक के पुत्र शांतनु हईं। अक्सर जमुना के तट पर चलि आइले। आजु एने आवते कमल के सुगंध आइल। हम ओकरे दिशा धइ के एजू तक आ गइनी। मालूम भइल एह सुगंध के कारण रउआ हईं। पग ठिठक गइल। देवि! राउर परिचय चाहतानी।''

सत्यवती ओह प्रौढ़ आँखि के मुग्धता पढ़ि लिहली। ई भाषा उनुका खातिर अजान ना रहल। बाकिर ऋषि के आँखि में जवन समादरित आह्वान रहे ऊ एजू ना लउकल। इहाँ साग्रही विस्मयाकुल रूपाकर्षण रहे। सत्यवती अपना के स्थिर कइ के कहली, ''हम दाशराज निषाद के पुत्री सत्यवती हईं।'' राजा बिना मुँह पर से आँखि हटवले कहलन, ''हम तहरा के आपन रानी बनावे के चाहतानी।' ढेर दिन से हमार राजमहल बिना स्वामिनी के उदास बा।''

सत्यवती सहज भाव से कहली, ''एह संदर्भ में रउआ हमरा पिता से बात करीं। काहें कि कन्या पर पिता के अधिकार होखेला। ऊ जवन उचित समुझिहें, करिहें।'' आ सत्यवती अपना घर के ओर चलि दिहली।

शांतनु एकटक देखत रहि गइलन। बुझात रहल जइसे सत्यवती के संगे–संगे उनुकर मन बन्हाइल जाता, ऊ मादक सुगंध के तार से खिंचाइल अपना कुल्ही गरिमा के विस्मृत करि के सत्यवती के पीछे–पीछे दाशराज के दरवाजा तक पहुँच गइलन। दाशराज साँझ घिरत देखि के सत्यवती के बाट जोहत रहलन। सत्यवती के सुगंध से आश्वस्त हो गइलन। तबले देखलन कि सत्यवती के पीछे–पीछे एगो मंत्रमुग्ध राजपुरूषो आवता। ओकर प्रभावशाली व्यक्तित्व देखि के दाशराज सावधान हो गइलन। सत्यवती बिना कुछु बोलल अपना घर में ढुकि गइली। ऊ राजपुरूष ओनिए देखत खड़ा हो गइल। दाशराज के देखि के राजपुरूष बोलल– ''हम हस्तिनापुर के राजा शांतनु हईं। रउरा लइकी के सौदर्य से आकर्षित होके आइल बानी आ अब हम चाहतानी ओकरा से विवाह कइल। एमें राउर अनुमति चाहीं। दाशराज पहिले तऽ संभ्रम में परि गइलन, फेरू सम्हर गइलन आ मन में गदगद हो गइलन। ऊ राजा के आदर सत्कार करे लगलन। राजा के बइठे के ऊँच आसन दिहलन। कहलन ''साँच पूछींत हम रउरा योग्य नइखीं। जाति के निषाद हईं।

कहीं हम सपना तऽ नइखीं देखत। ई संबंध भला कइसे हो सकेला? ''राजा कहलन,'' ''हमरा कवनो आपत्ति नइखे। हम त स्वयं तहरा कन्या के हाथ माँगतानी।'' राजा के भाव भाँपत दाशराज कहलन, ''हम सोच के बताइब। 'हमरा के कुछु समय चाहीं।'' राजा लवटि गइले। मालुम भइल कि महल में आइ के उदास रहे लगलन राज–काज में मन ना लागे। मंत्री बड़ा पता लगवलन तऽ तनिकी भर संकेत दे दिहलन। बाकिर अइसन करत उनुका संकोचो लागत रहे काहें कि गंगा के गइले छबीस बरिस हो गइल रहे।

मंत्री कहलन, ''ई कवन कठिन बात बा! हम अबहिएँ जाके ओह कन्या के उठा ले आवतानी।''

राजा बरिज दिहलन, बाकिर मने मन घुले लगलन। उनुकर अइसन स्थिति देखि के राजकुमार देवव्रत मंत्री लोगन से बतिया के असली कारण जानि के दाशराज किहाँ पहुँच गइलन आ अपना पिता खातिर सत्यवती के हाथ मँगलन।

दाशराज ओही दिन से असमंजस में रहलन। सोचत रहलन का जाने कब राजसैनिक आके घर में उत्पात करिहें भा हमरा के बान्हि के ले जइहें। बाकिर अइसन कुछु ना भइल। अब देवव्रत अइसन सुदर्शन आकर्षक नौजवान सत्यवती के याचना करे अइलन, सँगे–सँगे राजसैनिको रहलन। दाशराज देखलन आ परिणाम सोचि लिहलन। उनुका आपन बंदी भविष्य लउके लागल। अतनो पर उनुकर मन प्रौढ़ शांतनु से सत्यवती के संगे विवाह करे के ना होत रहे। राजा के उमिर आ सत्यवती में दुगुना ले ढेर के अंतर रहे। दाशराज के मन कसमसा गइल। सत्यवती के योग्य तऽ देवव्रत राजकुमार रहले। अतना शक्तिशाली, तेजस्वी कि बड़–बड़ योद्धा हार मान लेव।

दाशराज आपन कर्तव्य सोच लिहले। देवव्रत के कन्या याचना के साथ ऊ आपन बात राखि दिहलन कि, ''रउरा पिता श्री खातिर हम तैयार बानी। हमरो एगो प्रतिज्ञा (व्रत) बा कि हमरा लइकिए के संतान राजा बनी। ई बात हम राजा के सूचित कऽ देले बानी।'' देवव्रत एक क्षण रूकलन आ फेरू तुरंते कहलन, ''हम बचन दे तानी कि सत्यवती के पुत्र राज्य के अधिकारी बनी। अब रउरा सत्यवती के हमरा साथे बिदा करीं।''

सत्यवती केवाड़ी के पाछा से सुनत रहली उनुकर मन काँपि गइल। देवव्रत के अतना तेजभरल मुख आ बोली उनुका मन के खींचत रहे। उनुकर महतारियो सनाका खिंचले रहली। पूरा समुदाय चुप रहि गइल। दाशराज अबहियों चुप रहलन। देवव्रत के मन कुनमुनाइल! तनी तेज स्वर में आपन बात दोहरवलन। अबकी दाशराज अकम्प आ तनी रूखर स्वर में कहलन– ''रउआ तऽ लइका के राजा बना देब। बाकिर भविष्य के देखले बा। राउर लइका राजगद्दी से सत्यवती के लइका के उतार सकेलन। तब का होई?''

देवव्रत उनुकरा बात के मर्म समुझ गइलन। बिना एकहूँ पल के बिलम्ब लवले तेज स्वर में, अपना दाहिना हाथ के आकाश के ओर उठा के, प्रतिज्ञा कइलन कि, ''हम बिआह ना करब तऽ लइका होखे के सवाल कहाँ उठी?'

सभ केहू सन्न रहि गइल। युवराज ई का कहि दिहलन? आवेश में आइ के पूरब पश्चिम कुछु ना सोचलन। राजा शांतनु आधा से अधिका जीवन जी चुकलन। देवव्रत पर धीरे–धीरे राज्य के दायित्व डालत जात बाड़न। अचानक ई व्यवधान कहाँ से आ गइल? भविष्य के जानता? अब हस्तिनापुर राज्य के का होई? अतना दिन तक संयमी जीवन बिता के अब तीसरपन में ई का हो रहल बा? तऽले देवव्रत दुबारा फेरू आपन प्रतिज्ञा दोहरावत दाशराज से अपना पिता श्री खातिर सत्यवती के याचना कइलन। पूरा वातावरण धर्रा गइल लोग स्तब्ध रहि गइल, धरती काँपि गइल, आकाश में जइसे बिजली तड़पि गइल। लोगन के लाल आँखि दाशराज पर ठहरल। भीतर सत्यवती अपना महतारी के संगे कबूतरी नियर सहम गइली। एगो मलाहिन खातिर अतना बड़ प्रतिज्ञा? एगो तरूणाई, एगो राजकुमार पिता के आन्हर आसक्ति पर बलिदान हो गइल। सत्यवती के रोम–रोम काँपि गइल। ऊ कइसे जीवन में सुखी रहि सकेली? उनुकर महतारी उनुका के अपना छाती से सटा लिहली। ओह क्षण संतोष आ दुःख के विचित्र संगम उनुका मन में होत रहे।

सत्यवती के राजरानी के रूप आजु आपन पद अधिकार पा गइल। बाकिर ...। बाकिर एगो पात्रता के समाधि दे दीहल गइल। ऊ सोचलीं, एमे हम दोसिहा नइखीं। ई निर्णय देवव्रत के हऽ। ई उनुकर त्याग, आपन पुत्र धर्म हऽ। पिता के स्वस्थ जीवन–संतोष खातिर अनुकर कर्त्तव्य निष्ठा हऽ।

सत्यवती के महतारी के विचार तुरंते पलटा खइलस। कवन बाप ना चाही कि हमार बेटी अच्छा–ऊँच घरे जाउ। ओकर जीवन सुखी आ सुरक्षित होखो। दाशराज के कवनो दोष नइखे। जदि देवव्रत बिआह करितन त का जानी इनकर लइके सत्यवती के लइकन से राज छीनि लें सँ, आ सत्यवती के निषाद कन्या जानि के अपमानित कइ के राजमहल से, राजगद्दी से निर्वासित कऽ दीहल जासु। ऊ मोहित हो गइली दाशराज के दूरदर्शिता पर; बुद्धिमानी के निर्णय पर। अपना पोषिता बेटी पर अतना वात्सल्य कि एगो राजा के सोझा खड़ा होके निर्भयता से आपन प्रस्ताव रखलन। उनुका अपना पति के निडरता पर गर्व भइल।

सत्यवती के पीठ सहरावे लगली। ऊ उनुका भविष्य के प्रति आश्वस्त हो गइली। सत्यवती के आँखि से लोर ढरकि गइल। महतारी के अँकवारी से खिसक के घर में चलि गइली। मन उफनाई–अफनाइ जाय। लागे कि अतना जोर से रोई कि आकाश फाटि जाउ, धरती में दरार पड़ि जाउ आ हम ओही में समा जाईं। पराशर बहुत इयाद अइलन, बेटा कृष्ण आँखि में नाच गइलन। द्वीप में जनमला से पराशर उनुका के कबो द्वैपायन, कबो कृष्ण द्वैपायन बोलइहन आ कृष्ण आपन छोट–छोट बाँहिं बढ़ा के पाराशर के दाढ़ी छू लिहन। सत्यवती अपना पद्मगंध के प्रति क्षुब्ध आ आक्रोशित हो गइली। ई गंध आजु अतना बड़ दुःख के कारण बनि गइल। 'पराशर ई का कइलऽ? पहिले त अवाँछित संबंध स्थापन, सन्तानोत्पत्ति? फेरू जइसहीं मन तनी रमल कि बेटा के लेके अलगा गइल? अतना स्वार्थ? मत्स्यगंधा रहला पर कम से कम केहू के काम दृष्टि के आधार तऽ ना होखितीं! केहू के अधिकार हनन के कारण त ना बनितीं? केहू के जीवन के मरूथल त ना बनइतीं? केहू के वंश–रोध के निमित्त त ना बनितीं? आजु आपन तन–यौवन आ गंध तीनू हमरा खातिर–अभिशाप बनि गइल बा। एह बोझ के मन कइसे, कब ले ढोई? तरूणाई सन्यास ली, तपस्वी बनी आ प्रौढ़ता कामाग्नि में जरी, वासना के जीही। छिः ई कइसन जीवन होई? हमार ई नारी देह एगो पति के छोड़ के, बेटा से बियुक्त होके कामिनी के जीवन–साँस जीते? ई बोझ आत्मा के कबो आहलादित ना करी। ई राजभोग ना राजदण्ड हऽ हमरा खातिर। बाकिर पिता वचन के दाँव हार चुकल बाड़न। अब बचाव नइखे। हमहीं आपन जीवन डोर उनुका हाथ में स्वेच्छा से पकड़ा देले रहनी। देवव्रत आपन पूरा सुख–तारूण्य–आशा–आकांक्षा पिता के संतोष खातिर वचन के तरजुई पर जोखि के बलिदान कऽ देले बाड़न। साचहूँ ऊ 'भीष्म' हवन। मीनाक्षी सत्यवती के आँखि जइसे लोर में पँवरे लागल। अतना सोचत एह पीड़ा के जीअत ऊ अपना आँचर से तुरंते लोर पोंछि लिहली। रोआई के भीतरे पी लिहली। उनुकर एगो निःश्वास निकलल।

दाशराज भीतर अइलन। सत्यवती के सिर पर काँपत हाथ फेरत रून्हल कण्ठ से कहलन, ''बेटी आजु हम तहरा के उचित स्थान पर भेज रहल बानी। तूँ एह निर्धन घर के योग्य ना रहलू। हमरा खातिर तूँ वरदान रहबू। हमार जीवन धन, एह घर के श्रृंगार रहलू। बाकिर हीरा के शोभा राजा के मुकुट में रहेला। ऊ राजा आ आभूषण में सोभेला, धूर में लोटिआइल, पाँकि में सनाइल ओकर सम्मान नइखे। हमरा से जतना भइल, हम कइनी। अब तू भीष्म के महतारी आ राजा शांतनु के रानी भइलू। हस्तिनापुर के साम्राज्ञी। कुल के मर्यादा रखिहऽ। ईहे नारी धर्म हऽ। हमार कठोर माँग तहरा सुख खातिर रहल। अब भीष्म के कुल्ही मोह अपना पिता के प्रति आ अवरू संतानन से बन्हा जाई। इनका नियर सुयोग्य, शक्तिशाली, चरित्रवान आजु केहू नइखे। ऊ तहरा वंश के कर्णधार होइहें। उनुकर मान रखिहऽ।'' कहत दाशराज सत्यवती के लेके बहरी चलि अइलन। पूरा निषाद समाज एकठा हो गइल रहे। सत्यवती के भाग्य के सब सराहत रहे। ईर्ष्या करत रहे। उनुका महतारिये के ना अवरूओ मेहरारूअन के आँखि से लोर गिरे लागल। एह करूण आ सुखकर दृश्य के सभ देखत रहे। अवरू केहू के मुँह से एकहू बोल ना फूटल। देवव्रत भीष्म सत्यवती के रथ पर लेके चले लगलन तऽ सत्यवती के हिचकी बन्हा गइल। ई उनुका जीवन के दोसर अध्याय रहे, निषाद परिवार से उनुकर विलगता उनुका नया जीवन के प्रारंभ रहे। सोचि के उनुकरा हृदय के धड़कन तेज हो गइल आ बेर–बेर दाशराज के कहल ''भीष्म के महतारी'' शब्द कान में बाजे लागल। ओह लइका के महतारी जे उनुका से उमिर में बड़ रहे।

समय बहत जात रहे। सत्यवती के आँखि से मोती नियर लोर टपकत रहे। आँखि उनुकर लगातार ' मणिदीप' के देखत रहे। दासी 'नियति' अपना स्वामिनी के देखत रहे। जे आजुए महल में अइली रानी बनिके। तनिकी देर में आँखि उठा के कइसन दृष्टि से देखली कि पूरा कक्ष खाली हो गइल। खाली 'नियति' खड़ा रहल। उनुकर एक एक क्षण के साक्षी बनके। अपना स्वामिनी के देखत ओकरा ई तऽ बुझाए कि सत्यवती के हृदय में एह घरी कवनो झंझावात उमड़ल बा। बाकिर ऊ का हऽ? कइसन हऽ? ऊ ना बूझि पवलस। चुपचाप आदेश के प्रतीक्षा में खड़ा रहि गइल। अतना चुप कि जइसे ओकर साँसो रूकि गइल होखो। सत्यवती एगो दीर्घ साँस लिहली।

कमल नियर आँखि में अतीत जमुना के धार पर डोले लागल। जीवन के प्रारम्भ जमुना से होके आजु गंगापुत्र के लगे तक, गंगा के पति के चरण–तक, सान्निध्य खातिर–बहि के आइल बा। एमें उनुकर 'आपन कुछ' कहाँ बा? उनुका त खाली गंगा के जीवन जीए के बा। अनवरत बिना रूकल। सत्यवती के आँखि ओह 'मणिदीप' के पाषाण रूप–कर्म पर फेरू गइल। कर्त्तव्य के शपथ नियर। ••

142, बाघम्बरी गृहयोजना,
भरद्वाजपुरम, प्रयाग–211006

कहानी

तपेसर

प्रेमशीला शुक्ल

देर खान छप्पर का बिच्चे बिलाइल एगो छोटवर पलानी, जवना में तपेसर रहेलें अपना माई का साथे, उमिर के छोट, भागि के खोट। बाप के मुँह देखेके बदा न भइल। दइब का कइला से ना, बापे का कइला से। जब तपेसर गरभे में रहलें, बाप उनुकर पुरूब बनिजिया चलि चइलें। सब केहू तपेसर के माई के धीरज बन्हावे, जनि रोवऽ, कमाये गइल बाड़े, दलिद्दर छूटि जाई, कवनो बने में त बाडू ना। आरी–पासी भाई पट्टीदार बाड़े, दरबार के छाहँ बा। फिकिर के कवनो बाति नइखे। दलिद्दर छोड़वला का नाम पर छ महीना ले मनीआडर आइल बिना सनेस के। कवनो चिट्ठी पतरी ना, कवनो खोज खबर ना थोरका दिन का बाद ऊहो बन्द हो गइल। केहू कहे–ऊ त मरि बिला गइलें, केहू कहे आसाम के मेहरारू एक जादूगरनी होली। ऊ अइसने कवनो जादूगरनी का फन्दा में पड़ि के लोग–लइका भुला गइलें। साल–दू–साल अइसे मुँहचरचा में बीतल। धीरे–धीरे लोग इहो छोड़ि दिहल। तबले तपेसर के जनम हो गइल रहे। सभे तोख दे कि इहे तपेसर तुहार दुःख छोड़इहें, धीरज धरऽ।

अइसन बिपत्ति के बेरा में दरबार में सरन मिलल। तपेसर के बाप, दरबार के सिरवार रहलें। भागि के फेर में पड़ि गइलें, आपन घर भुला गइलें, बाकी दरबार के लोग आपन धरम नाही भुलाइल। तपेसर के माई दरबार से खाये पीये के पावत रहें, दिन सेवा टहल में बीति जाये। ए तरे जिनिगी ढरहर भइल।

धीरे–धीरे तपेसरो उधरेंगू हो गइलें। देखला सुनला में तपेसरो ओइसने रहलें जइसन गॉव के अउरी लइके, दुबर–पातर साँवर के। मिचिर–मिचिर आँख लिहले, जहाँ बिलमि जायँ, बिलमले रहि जायें। उनुकर इहे आदति केकरो ना सुहाये। एकरा खातिर हरदम डाँटल–डपटल जाये, माई टोकल करें–का निहारेले छान्हि का बान्ह में? उठऽ, कलेवा करऽ, दरबार में गइला के देरी होत बा। तपेसर उठें, कलेवा करें आ माई का पाछे–पाछे दरबार पहुँचें, चउकठ के माथा टेकें, सुरूज बिनवें– ''हे सुरूज! जइसे अकासे में तू चमकेलऽ, ओइसे जवार में ई चउकठ चमके, एकबाल बनल रहे, मरजाद बनल रहे।'' एतना बिनवला का बाद दरबार मे पइसारी मिले।

काम–काज, अनिवन परकार के काम–काज। बनावल–फटकल, झारल–बटोरल, बरतन–बासन। एतने रहे कि दरबार में केहू मारल–गाँसल ना जाव। अमला–फइला के बाति रहे। बहरा से भीतरीं ले नोकर–चाकर भरल रहे। सबके खेत मिलल रहे। उपर से जवन अन्न पानी मिले, ओकर त कवनो गिनती नहीं। सबसे बड़हन बाति इ कि मलिकार के सुभाव रहे अउव्वल बड़का आदमी के। मलिकार के इहे सोच रहे कि दिहला से घटेला ना, बढ़ेला। जे खाई ना, ऊ करी का आ जो ऊ करी ना तऽ दरबार बढ़ी कइसे? ओहू में तपेसर का ऊपर तऽ मलिकार के कुछु ढेर मोह–छोह रहल। बिना बा पके लइका के पोसल–पासल धरम के काम ह। तपेसर माई का पाछे लागल रहें। कब्बो–कब्बो उनुको पुकार उठे–''चल तपेसरा पीढ़ा–पानी कर, मलिकार के गोड़ चाँत।'' काम कइलाका बाद सबासी मिले, चवन्नी मिले। माई के करेजा दस हाथ के हो जाव, ऊ गदगद होके कहें– ''मलिकार बड़ी तपेसा से पोसऽतानी रउरे लोगन के आस बा, रउरे छाँह में राखबि एके।''

मलिकार पुरहर तोख दिहलीं– ''जब कीरा अइसन तपेसर पोसा गइलें त करवाँसू तपेसर के छोड़ला के कवन बाति आ गइल। आ देखऽ, एह चउकठे पर जे आ गइल, ओके कब्बो हटावल बा? जे गइल से अपना मन से गइल, अउरी बहि–बिला गइल। बोल ई झुठ बा?'' सुनिके तपेसर के माई का करेजा में का जानी कइसन हूकि उठि गइल। करान ना ऊ जनली, ना जाने के कवनो दरकारे बुझली।

ओहि दिन राति के मलिकार तपेसर के गोड़ चाँते के बोलवलन। तपेसर के सधल हाथ चलल। मलिकार आँखि मुनले कुछ सोचत–गुनत रहलीं। तपेसर के गुनी हाथ के दबाव से एतना आराम मिलत रहे कि मलिकार आँखि खोलिके बख्शीश देबे खातिर तकियातर से दस के नोट निकरली तऽ देखत का बानी कि तपेसर के हाथ उनुका गोड़ पर पूरा मनोयोग से चलऽता बाकी तपेसर कवनो दुसरे दुनिया में रमल बाड़े। तपेसर के आँख हरेक चीज पर घूमत रहे। लागत रहे सबकुछ तपेसर का छोट–छोट मिचिर–मिचिर करेवाली आँखिन में समा जाई। मालिक कुछु ना बोललीं। धीरे से नोट तकिया का नीचे सरकवलीं आ तपेसर के देखे लगलीं। तपेसर के आँखि में आजु मलिकार का नया चौकन्नापन लउकल। बुझाये, तपेसर देख तनइखे, पीयऽता, आ जो एही तरे थोरी देर अउर देखत रहि गइल त दरबार के सुख–सान्ति, धन–दौलत सगरीं पी जाई, कुछु ना बची, केहू ना बँची।...

अब एकरा खातिर कवनो उपाइ सोचे के परी। ई बाति गाँठ में बान्हि के मलिकार ओढ़ल अंटी उतार के तपेसर के टोकलीं– ''ले तपेसरा, ओढ़िले, तोरा जडवऽता, आपन दुःख तकलीफ कहे के चाहीं। आखिर हमसे ना कहबे, त केसे कहबे, कवनो तोर बाप तोरा साथे बाड़े! ले ओढ़िले। तपेसर अंटी लिहलें, देहि ढ़ँकले। तन त ढँपाइल बाकी मन का भितरी कुछु उघार हो गइल।

अंटी ओढ़ले तपेसर घरे अइलें। पछुवा बयार के झोंका आजु तनी कम अखरत रहे। एक अंटी के एतना सुख

त सगरी दरबार के केतना सुख। का हाथे में समाई ऊ सुख, अंगुरी से छुआई ऊ सुख?

दीया–बातीं जूलड़ कइके माई–बेटा सुतलें। अन्हार...अन्हार...चारूओर अन्हार, घर में अन्हार, बहरी अन्हार। दरबार में मन के जवन कोना उधार भइल रहल, उहे माई से पूछिं बइठल – 'माई ई पलानी केकर हऽ?'

नींनीं भरल आँखि लिहले माई बोललीं ''हमनीं के, ईहो बतावे के परी का?''

''एहमे लागल बाँस, सरई सब कहाँ से आइल?'' बड़ीं सहजे माई कहलीं– ''दरबार से।''

एतना सुनते तपेसर पूछिं बइठलें–माई ई जमींन जवने पर पलानी बनलबा, ई केकर हऽ?'' तपेसर का सवाल से माई के नींनि भागिं गइल। कुछ झुझुआ के, कुछ रिसिया के बोललीं– ''दिनभर खटनी खटेके,, राति भर पुछनी पूछेके। पूछ, का पूछत बाडे? ई जमींन दरबार के हऽ। जवन, खालऽ ऊ दरबार के, जवन पहिरेलऽ ऊ दरबार के, जहाँ सूतेलऽ ऊ दरबार के, जहाँ जागेलऽ ऊ दरबार के। बनल रहे दरबार, कायेम रहे एकबाल।''

''आ हम? हम माई??'' सुतल माई के झकझोरि के तपेसर पूछत रहलें।

''तुहूँ, तुहूँ ए लाल, आपन धरम मत भुलइहऽ, दरबार के चउकठ जनि तेजिहऽ।''

माई जइसे आगम–निगम समुझा के निचिन्त भइलीं, करवट लिहलीं, सुति गइलि।

तपेसर का ऊपर बजर गिरल। अन्हरिया राति में पछुवा साँय–साँय मारत रहे। नीचे धरती, ऊपर अकास ठिठुरि गइल रहलें, तपेसर का छितरी छूटत रहे।

बस, बस। बाकीं अब ना, अब कुछु पूछे के नइखे। 'हे जगर–मगर करत, फरल–फुलाइल अकास! हे मुहुर–मुहुर महकत, भरल–पुरल धरती! तू बतावऽ, का हमरा पहिले हमार पुरखा पुरनिया अपना माई से ई सवाल ना कइले रहलें? का इहे जवाब उनहूँ का मिल रहल?' केहू ना बोलल। थथमथाइल रहे जइसे सगरो देस काल।

धरती–अकास के गोहरावत तपेसर अपना सवाल के बोझा माथे पर लिहले कबले चलिहें? के उतारी ई बोझा? दूसरा दिने फिरू उहे दरबार, उहे ठाट–बाट, जिनिगी के रंगीनी। खाली एगो फरक आजु रहे! तपेसर खातिर मलिकार के फरमान।

अब तपेसर बड़वर हो गइल बाड़े। उनुकर मजूरी अब रही–पाँच सौ रूपया हर महीना। पेट–पल्ला पर केतना दिन काम करिहें। एगो बाति अउर, अब ऊ घर में नाहीं, दुआरे काम करिहें।

तपेसर के माई अँचरा उठा के सुरूज बिनवली– हे सुरूज! बाढ़ो, मलिकार के परताप, बाढ़ो आइ–अरदुआइ।'' मलिकार का गोड़ लगे लोटि गइली–हमरे लाल के सरन मिलल रहे।''

माई का भरोसा रहे, ओकर कइल बिनती कब्बो खलिहर ना भइल रहे, किरिन के अंगुरी धइले ओकर बिनती जरूर सुरूज भगवान का लग्गे पहुँची।

तपेसर की माई के बिनती सुरूज भगवान लगे पहुँचल कि ना, ई तऽ उहे जाने बाकी माई का बगल में खाड़ तपेसर का मन से सुरूज का गोला से जइसे एगो लुत्ती गिरल।

तपेसर का धुँधआत करेजा में लुत्ती से ऊ दिन अँजोर भइल जवना दिने तपेसर कुँवर जी के बिछौना के झारत–पोंछत रहलें। बाति कुछु नाहीं त चार–पाँच बरिस पहिले के होई। लाली पलंगिया पर परल मोटवर गद्दा, ओकरा ऊपर बिछावल झकझक चदरा। एहपर लोटा–लोटउवल खेलला के मजा कुछ अउर होई। लोटउवल खेलल तपेसर का बड़ा नीक लागे। आधा आँखि खोलले, आधा आँखि मुनले। हाली–हाली जब तपेसर लोटाये लागें त घर–दुआर के सगरी जिनिस एके में मिले लागे। छान्हि–छापर, गाछि–रूख सब जइसे मिलिके एक हो जायें। एक छन अइसन आवे जब आही का साथे तपेसरों मिलि जाये आ उड़ि चलें–दूर बहुत दूर। एही सुख के लाली पलंगिया पर पावे खातिर हुमकि उठलें। अगल झँकलें, बगल झँकलें, केहू के ना पाके चढ़ि परलें लाली पलंगिया पर। एक लोटानि, दुसरकी लोटानि, तीसरकी लोटानि–एतने पर परल सटाक्। लोटानि सटकि गइल, कूदि के नीचे खाढ़ हो गइलें। सामने रहलें हाथे में छड़ी लिहले कुँवर जी।

तपेसर का एही दिन का अँजोर में ढेर कुछ लउके लागल। तपेसर 'सरन' की से रून्हल राहि से बहरा निकरि गइलें। अपना रिरियात माई का बगल में बइठल तपेसर ठाड़ हो गइलें– 'हम कवनो काम ना करब–ना भीतरी के ना बहरी के।'

तपेसर के ठनकत आवाज मलिकार का कान में परल। माई के असीस से भींजल चेहरा दन्न से सूखि गइल। ''का कहले? फेरू से तऽ कऽहु।''– कहत मलिकार छड़ी खोजे लगलें। तपेसर मलिक का हाथे में छड़ी देत बोले लगलें–''मारीं मालिक अनगिन छड़ी मारीं। जरत तावा पर पानी के फुहारा देके ओके ठण्ढाई मत, जरे दीं, तलफे दीं। भूखल पेटे में रोटी के दू टुकड़ा डारि के सुताई मत, रोवे दीं, बिलबिलाये दीं। दुनिया–संसार में आपन 'खालिस' आपन 'खोजे दीं हमके। सिखारी ना, गाँव से निकसलें के दण्ड दीं। मारीं, मारीं मालिक, अनगिन छड़ी मारीं।''

एतना कहत तपेसर पिछउड़ भइलें। मलिकार के आगे राति के बाति दउरे लागल, मलिकार बूझि गइलीं कि उपाय कइल खलिहर गइल।

प्रदक्षिणा, दक्षिणी उमा नगर, सी0सी0रोड़,
देवरिया–274001

नुक्कड़ नाटक

जनतंत्र

डा0 अमरनाथ चतुर्वेदी

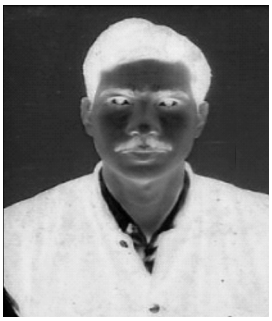

मंच निर्देश– (मंच पर डिग–डिग ..... डिग–डिग .....। डुग्गी बाजऽतिया ..... आ गाना होता.....।)
'हमरा देसवा के सुराज मिलल, हम सुतंत्रऽ भइलीं नाऽ । –टेक
देसवा गुलाम रहे लोग परतंत्र रहलें
अब आइल बा जमाना जनतंत्र के, हम सुतंत्रऽ भइली नाऽ । .....
(तबले बीचे में सूत्रधार के आगमन हो जाता अउर गाना बंद हो जाता।)

सूत्रधार– ए भाई! देखऽ तानी सभे, ई गाना होता जनतंत्र के । आज 26 जनउरी हऽ । आजुए के दिने हमार देस (गणतंत्र) भइल रहे। गणतंत्र क माने बूझऽ तानी सभे ? आजुए का दिने 26 जनउरी सन 1950 में हमरे देस के आपन संविधान लागू भइल रहे । तब से आज ले अपना देस के जेतना सरकार बनली सऽ कुल जनतांत्रिक। एही से नू जनतंत्र के दोहाई दिहल जातिया। एकरा में सबे बराबर होला, चाहे राजा होखो भा रंक । गाँव में रहे वाला गोबरी चाहे आनन्द भवन में रहे वाला नेहरु एके भाव बाड़े । तबे नू जी, हमारा गाँव के झीगुरिया आज माननीय विधायक श्री झींगुर प्रसाद जी कहल जा ता । एतने ना अउर चलीं देखल जाउ जनतंत्र में का–का हो ता ? आजु अगिला विधान सभा चुनाव के तारीखो अखबार में आ गइल बा ।

(प्रतीकात्मक गाँव के दृश्य। राति खान
सूते के बेरा बाऽ । घूरा के माई, घूरा के बाबू से राय करऽ ताड़ी ।)

माई– ए घुरवा के बाबू ! सुनऽ ताड़ऽ .....। सुति गइलऽ का हो?
घूरा के बाबू – नाहीं,..... सुतल नइखी । कहऽ, का कहऽ ताडूऽ ?
माई– कहऽ तानी, जे हमहूँ अबकी वोट लड़ितीं ।
बाबू– (चिहुँक के) तूँ वोट लड़बू ?
माई– काहें ? का भइल बा ? हम वोट ना लड़ि सकीलाँ ? हम तऽ सुनले बाड़ी जे, ई परजातंत्र हऽ, एमें केहू कुछू कऽ सकेला। सब बराबर बा । सब सुतंत्र बा ।
बाबू– ई बाति ना । लड़े के त तू लड़िये सकेलू । हमरा अचम्भो ई भईल हऽ, जे तहरा चुनाव लड़े के ए बेरा कइसे मन परऽ ल हऽ ?
माई– जानऽ ताड़ऽ, गाँव के कुल्हि लइका हमरा के नेता कहेले सऽ। कवनो इन्दिरा गांधी कही, तऽ कवनो मेयाउती कही । एही से हम सोचली हँ, काहें न हम वोट लड़ि के नेता बनि जाईं ।
बाबू– आच्छा..... तऽ ई बात? लोगन के नेता कहला पर तू ए बेरा नेता बने चललू हऽ । जानऽ ताडू..... जेवन इन्दिरा गांधी आ मेयाउती कहलू हऽ, ऊ सभ लोग पढ़ले लिखले बा । आ तहरा, करिया अच्छर भइंस बराबर। तू का करबू ? तहरा कुछु बुझाईल ? तहरा तऽ सोझार नावों लेवे नइखे आवत ।
माई– त का भइल? कवनों पढ़ल–लिखल जरुरी बाऽ ? रबड़ी बहिन तऽ बादे में नू पढ़ली हँ, पहिलवाँ त ऊहो कजरौटे में ठेपा लगावति रहलीं । हमहूँ बाद में पढ़ि जाइबि । हम सुनले बाड़ी जे वोट लड़े खातिर पढ़ल–लिखल कवनो जरुरी नइखे । खालसा पागल, दिवाना ना होखे के चाहीं । आ भारत के वोटियर होखे के चाहीं ।
बाबू– अरे, राबड़ी देवी के दाँज तू करऽ ताडू । कहाँ लालू प्रसाद, आ कहाँ हम ?
माई– तऽ का से ? तू कवनो लालू से कम बाड़ऽ ? तहरा गोड़वा के धोवनों नइखँऽ लालू । तू खलिसा कहि दऽ , तऽ हम वोट लड़ि जाइबि ।
बाबू– तू हमार बाति नइखू समझत । जितला पर ओजुगिया कुल्हि बड़ा दाव–पेंच चलेला । तूँ कुछ बूझि पइबू? कुल्हि पत्रकार, आ रेडियो आला सवाल–जवाब करिहें सऽ, का जवाब देबू ?
माई– तू एकरा फेरा में का बाड़ऽ ? ई त कुल्हि बाद में न होई । हम कुल्हि समझि जाइबि । जब शबनम मउसी विधान सभा में कानून बना सके लीं त, ओकरा ले त हमरा ढेरे बुझाई । तू खालसा हमरा के वोट लड़वा दऽ ।

बाबू– त बतावऽ ..... लोग पुछिहें, तहार का नाँव ह, त का बतइबू ?
माई – का बताइबि ? जेवन नाँव ह तेवन, सोहगिया ।
बाबू– (हसऽ ताड़ें..... ही... ही... ही...ही..) सोहगिया ना सौभाग्यवती, सौभाग्यवती देवी अब हो जइबू ।
माई– हँऽ... हँऽ... उहे सोभगाउती देवी । तू त रहबे करबऽ । रबड़ी बहिन लेखा हमरा जेवन ना बुझाइ तेवन तू बता दीहऽ ।
बाबू– चलऽ.... ना मनबू त ठीके बाऽ। लड़ऽ ..... ई हे बा जे बड़ा दिक होई।
सूत्रधार – सुनलीं सभे, सोहगिया काकी आ झिलमिट काका के बतकही ।
ई जनतत्र हऽ । एमें केहू कुछू बनि सके ला, कई सके ला। अभी त महिला सुरक्षित सीट पर सोहगिया काकी चुनाव लड़ी । आगे दोसरा विधान सभा क्षेत्र सदर में चलीं चलल जाउ।
मंच निर्देश– (सूत्रधार तनी चले के उपक्रम देखावा करऽ ताड़े ।)

दुसरा–दृश्य

(दोसरा दृश्य में एगो चाय के दुकान में चारि– पाँच गो नौजवान सफेद खद्दर के कुर्ता – पैजामा पहिनले बइठल बाड़ें, मेज प गिलास में चाय धइल बा ।)

सूत्रधार– देखीं सभे बीच में जेवन छोटी–छोटी कटिंग वाली दाढ़ी रखले सबसे रुआबदार लउकऽ ताड़ें, उहे विक्रम साही हवें, बगल में कुरता का नीचे हमेसा पेस्टल राखेलें । उनका संग्हें केहू बिना राइफल के ना रहे। एहू लोगन के पास राइफल बाटे। ई सहर के नामी माफिया हवें। इनका नाम पर बड़े–बड़े सेठ महाजन लोग दस – बीस हजार के थइली दे–देला । चलि गइला पर बिना लाख के इ बात ना करें । पढ़ाई – लिखाई में दर्जा नौ फेल हवें । कालेज में जेवना साल गइलें, ओही साल से इनकर गुण्डई शुरु हो गइल, तऽ भला पढ़ाई कइसे होखो। नवे में फेल हो गइलें। इनका पर ए बेरा कम से कम पन्द्रह–बीस गो हत्या के आ बीसे–पचीस गो छिनैती आ बलात्कार के मोकदिमा चलत होई। बाकिर देखीं सभे, ई जनतत्र हऽ, खालसा मोकदिमा चलऽ ता, जमानत हो जा तिया, फैसला होई नू अस्थिराहे.... । जब ले फैसला नइखे भइल तब ले त कवनो आदमी अपराधी बा ना । इज्जत के, शराफत के तग्मा अब एह आदमिन से अधिका, केकरा पाले बा..... ? इहे लोगवा नू गरीबनों के मसीहा बा। अब दोकनिये में चलीं देखल जाउ का बतकही हो ता ?
नौजवान –1. आज के अखबार देखलीं हँऽ सभे ? चुनावों के त डेट आ गइलि ।
नौजवान –2. (चिहुकि के) आ गइलि ? कब हवे चुनाव ?
नौजवान –1. 22 फरउरी के मतदान, आ 2 फरउरी से 5 फरउरी ले पर्चा दाखिला बाऽ । देखऽ ए बेरी के–के चुनाव लड़ेला ?
नौजवान –2. आरे के–के लड़ी ...। भाजपा से कमलनाथ लड़बे करिहें, कांग्रेस से देखऽ केकरा के टिकट मिलेला ? बसपा से त ओकरे के टिकट मिली जे सबसे ढेर रुपिया बहिन जी के दीही । सपा से कैलाश यादव के निश्चिते बा जे ए बेरी टिकट मिली ।
नौजवान –3. हम त कहऽ तानी जे ए बेरी भइयो के पर्चा भराव। ई सरवा पुलिस वाला हर दम छापा मरलही रहऽ ताड़ें स । ई हमनिये से पइसो खा ताड़े स, आ तनिको मोका मिलऽ ता त छापो मारि दे ताड़े स ।
नौजवान–4. ठीक त होई । का भइया ?
विक्रम जी – (तनी मुसुकिया के) आरे मर्दे ई पुलिस वाला चले दिहँऽ स? अभी त काल्हुए के गैर जमानती वारंट कटल बा, पहिले ओकरा में जमानत करावल जाउ तब न ।
नौजवान–1. ओकर फिकिर छोड़ि दिहीं। ओकर जोगाड़ हमरा पाले बा। डिस्टिक जज के एगो बड़ा पेट आदमी हमरा पाले बा। एक लाख रुपिया दियाई आ काल्हि मय जाना के जमानत हो जाई ।
नौजवान–3. भइया! ए बेरी मन पक्का करीं । राउर परचा भराई । कुल्हि बा त का करी रउवाँ फूलन देवी ना नू हईं । सरकार के पाले कवन सबूत बा जे कही की हमनी के अपराधी हईं जा ।
नौजवान–4. आरे सभ आपन–आपन काम करऽ ता। हमनियों के आपन काम करऽ तानी जा ।
नौजवान–2. देखीं ई जनतत्र हऽ । एमें त सभे स्वतंत्र बा । सब करा चुनाव लड़े के आ वोट देवे के अधिकार

बा। कहीं त हम एही बेरा विमल वाला के बोल दे तानी, पचास हजार बैनर आ दु लाख पोस्टर दस हजार होर्डिंग बनि जाई।
विक्रम जी – कवना पार्टी से लड़ल जाई त ठीक रही ?
नौजवान–1. कवना से का ? जवने से मिल जाउ टिकट।
विक्रम जी – जवना के ना ..... जवना से जितला के उमेदि होखो। टिकट त ए बेरा चाहि दीहीं त कवनो पार्टी से मिलि जाई।
नौजवान–3. देखीं आज–काल्ह वोट त मिलऽ ता जातिवाद के नाँव पर आ कुछ मिलऽ ता बुथ कैप्चर कइला से । हमरा त ठीक बसपे बुझा तिया।
नौजवान–4. हँऽ, यदि टिकट लेवे के बा बसपे ठी रही । हमनी के विधान सभा में ठकुरन के केतना वोट होई ? मुस्किलन तीन से चार हजार। एसे का होई ? जब ले मियन के आ चमारन के वोट ना मिली .....।
नौजवान–2. हँऽ... हँऽ । बसपे ठीक रही, एकरा में मुसलमानो आ जइहें स आ हरिजन त हाथी के नाँव पर रहबे करिहें स। लड़ाइयो सपे–बसपा के रही ।
विक्रम जी – त ठीक बा । काल्हु जमानत हो जाउ ओकरा बाद तहन लोग एने चुनाव के तइयारी करऽ जा, आ हम लखनऊ चलि जाइबि। एही बेरा हम फोन से बात कऽ ले तानी। बसपा से टिकट कनफर्म जानऽ।
नौजवान–3. पोस्टर–बैनर के होइये गइल । हम बीस गो स्कार्पियो मय तेल के हाजी साहब से बोल दे तानी । बीस गो गाड़ी अपना पाले भरि चुनाव रहिहें स त परचार के कमी ना होई । ओइसे त परचा दाखिला आ चुनाव का दिने कम से कम पाँच सौ गाड़ी के काफिला रही त ठीक होई। ई सभ ब्यवस्था हमरा जिम्मा रही ।
नौजवान–4. जाड़ा के दिन बा दस हजार कम्बल बँटवा दियाई। बाबू साहब किहाँ हम एही बेरा जा तानी ।
नौजवान–1. बबुसहबवा दे दीही दस हजार कम्बल ? दसन लाख के हो जाई ।
नौजवान–4. दिहें काहें ना ....। देला केहू भरसक । जब फँसी तब न दिहें। ढेर बुझाई त केहू अउरी के मिला दियाई।
विक्रम जी– अरे, अजीत टेक्सटाइल से कुछ ले लिहऽ जा । बोल दीहऽ, जे साही जी ए बेरी चुनाव लड़ऽ ताड़ें।
नौजवान–4. ई हो ठीके रही । थोरे–थोरे हो जाई त केहू के ढेर दबाव ना परी ।
विक्रम जी – (नौजवान –1 से) रज्जू तू हमरा संग्हें चलऽ, पहिले काल्हु के जमानत वाला काम हो जाउ । आ इहो लोग तब निकलो, अब कऽ दिन बड़लही बाऽ ? चार के भा पाँच के परचो भरे के होई । एकरा पहिलहीं कुल्हि ब्यवस्था करे के बा।
नौजवान–2. हँऽ ... हँऽ ... अब चलीं जा । तैयारी में ए बेरा से एक दम जुटि जाये के बा । (सब केहू चले के उपक्रम करऽ ता ।)
सूत्रधार– देखलीं सभे जनतंत्र के कमाल । अब विधान सभा आ लोक सभा दूनो में इहे लोग बइठी । इहे लोग संविधान में संशोधन करी आ नयी– नया कानून बनाई । जनता के भलाई होई। जनतंत्र के सिवाय दोसर कवन तंत्र बा जेवना में सोहगिया काकी आ विक्रम जी लेखा लोगन के अइसन अधिकार मिली । अब विक्रम जी के पुलिस का करी? जेल में डाली? नाहीं अब त इनका के जेड प्लस के सुरक्षा दिही। दोष ए लोग के नइखे । दोष जनता के बा । जेवन दारु–मुर्गा आ कमरा–साड़ी ले के वोट दे तिया । जनता–जनार्दन से आजु हमार ईहे निहोरा बा जे वोट देवे से पहिले तनी सोचीं सभे, समझीं सभे कि.... के सदन में बइठे लायक बा ? के देस – समाज के हित, आ कानून के बूझे वाला बा.....? जे ई कुल्हि सर्त पूरा करे, ओकरे के आपन वोट दिहीं सभे। ना जाति पर ना पाँति पर, मोहर लगाईं सभे–राष्ट्रीयता की बात पर।।

अनुशीलन

'काव्य' के दार्शनिक अवधारणा, साधना अउर सिद्धि)

अनिरुद्ध त्रिपाठी 'अशेष'

'कविता' के प्रसंग में ध्यान देवे लायक बा, कि आदि–कवि के मुँह से श्लोक के रूप में जवन काव्य–छंद फूटि परल रहे, ऊ क्रौंच–वध से उत्पन्न करुणा के अनुभूतिये–भर ना रहे, अपितु ओहमें, निष्ठुर निषाद के, ओकरा पाप खातिर दंड के रूप में सरापो दिहल गइल रहे–

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वगमः शाश्वतीः समाः।
यत् क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

दोसर बात ई, कि आदि–कवि खातिर एह तरे के पदबद्ध, लययुक्त, काव्यात्मक अभिव्यक्ति एगो अप्रत्याशित आ विस्मयकारी घटना रहे, जवना पर ऊ एकाएक बिसवास ना क पावत रहें–

पादबद्धोऽक्षरसमस्तन्त्रीलयसमन्वितः।
शोकार्तस्य प्रवृत्तो मे श्लोको भवतु नान्यथा।।

तीसर बात ई, कि एह काव्यात्मक अभिव्यक्ति के पीछे ब्रह्माजी के प्रेरणा रहे आ ऊहे उनका के राम के चरित लिखे के आदेशो देले रहें–

श्लोक एवास्त्वयं बद्धो नात्र कार्पा विचारणा।
मत्छान्दादेव ते ब्रह्मन् प्रवृत्तेयं सरस्वती।।
रामस्य चरितं कृतस्नं कुरु त्वमृषित्तम्।
धर्मात्मनो भगवतो लोके रामस्य धीमतः।।

इहाँ काव्याभिव्यक्ति खातिर करुणा, करुणा के सापेक्ष प्रवृत्ति, आ काव्य–रचना के पीछे विराट–शक्ति के प्रेरणा, साफ उजागर बा। तुलसी काव्य–रचना बदे ईश्वरीय कृपा आ प्रेरणा के अनिवार्य बतवले बाड़न– 'जेहि पर कृपा करहिं जन जानी। कबि उर अजिर नचावहिं बानी।।' आ, काव्य के सफलता खातिर 'वर्णानामर्थसंघानां...' द्वारा सरस्वती–गणेश के बंदनो कइले बाड़न। ई परम्परा कालिदास आ भास आदि अनेक संस्कृत–कवियन में त लउकते बा, मैथिलीशरणगुप्त आदि हिन्दी–कविजनों एह से अछूता नइखन। गुप्त जी 'अयि दयामयि देवि सुख दे शारदे। इधर भी निज वरदपाणि पसार दे।' कहत बाड़न तऽ छायावाद के सबसे अधिक विद्रोही कवि निरालो 'वर दे वीणावादिनी वर दे' जइसन कविता रचले बाड़न। दिनकर त करुणा से पैदा भइल 'रोवाई' के कवि खातिर काव्य–रचना बदे अनमोल धन बतवले बाड़न ('रुदन अनमोल धन कवि का') आ खुद के 'आँसुओं का हार हूँ मैं' कहले बाड़न। पंत के 'वियोगी होगा पहला कवि' भी कम चर्चित नइखे रहल। इहाँ करुणा से उत्पन्न आँसुअन के तीन गो रूप दिखाई देत बा। एक त अदना चिरई के प्रति आदि–कवि के आँसू, दोसरका मानवता के प्रति दिनकर के आँसू, आ तिसरका निपटे आत्मकेन्द्रित पंत के आँसू। मानवता के प्रति दिनकर के आँसू बेशक सराहे लायक बा, बहुते हद तक मानवीय मूल्यादर्शन के प्रोत्साहित करेवाला बा, बाकी तब्बो, ऊ करुणा के आँसू नइखे हो सकत। करुणा के आँसू में मनई आ चिरई के दुख के प्रति कवनो तरे के भेद–भाव आ विभाजन ना होखे। एहसे ओह आँसू में ऊ सौन्दर्य नइखे, जवन कि अदना चिरई के प्रति उत्पन्न आदि–कवि के आँसू में दिखाई देत बा। पंत के आँसू निम्मन त बा, बाकी सुन्नर नइखे। निम्मन एह से, कि ओह में अपना लोगन खातिर दुख बा। अपना सगा–संबंधी भा इष्ट–मित्र खातिर दुखी भइल बाउर नइखे कहल जा सकत, बाकी आत्मकेन्द्रित दुख के सुन्नरो नइखे कहल जा सकत। ई त स्वार्थी होखल हवे। कविता त आदमी के स्वार्थ के सम्बन्धन से निर्बन्ध करे के, आ 'आत्म–सत्ता' के 'लोक–सत्ता' में लीन करे के अनुप्रेरित करेले। आत्मकेन्द्रित प्रवृत्ति लोक–मंगल के सिद्धि में बाधक होखेले, साधक ना। संस्कृत–चिन्तन–परम्परा आ हिन्दी–चिन्तन–परम्परा से लेके, लोक–काव्य–परम्परा तक में, लोकमंगलवादी मानवीय सत्यन के साक्षात्कारवादी नजरिये कविता के प्रयोजन रहल बा। लोक–मंगल खातिर करुणा आ प्रेम, दू ठे अनिवार्य तत्व बनेंसँ, जवना में शाब्दिक अन्तर का बावजूद मर्मार्थ के तल पर कवनो अन्तर नइखे। इहाँ काव्य–साधना के प्रसंग में आदिकवि के आँसुअन के मर्म आ सौन्दर्य समुझे लायक बा।

तमसा–तट पर क्रौंच–वध के दुख से आहत आदि–कवि खातिर क्रौंची के व्यक्तित्व कवनो भिन्न व्यक्तित्व नइखे, अभिन्न व्यक्तित्व बा, ना त एगो तुच्छ चिरई के दुख, मानव–कवि के दुख कइसे हो सकते बा? पराया दुख, आपन दुख तब्बे हो सकेला, जब पराया, पराया ना रहि जाय। ईहे समानुभूति हवे, ईहे कवि–संवेदना हवे, करुणा के सार्वभौम अवस्था हवे। ईहे साहित्य के 'साधारणीकरण', 'मधुमती भूमिका' आ आध्यात्म के 'अद्वैत–दर्शन' हवे। अद्वैत के अर्थ बा–जहाँ 'दू' नइखे, बाकी एकर ईहो अर्थ ना भइल कि उहाँ 'एक' बा, काहें कि 'एक' के होखे खातिर 'दू' के होखल जरूरी बा। 'एक' तब्बे ठाढ़ रह सकेला, जब सामने 'दोसर' मौजूद रही। एहसे अद्वैत के अर्थ बा– 'दू' ना, अर्थात् एको ना, माने कि शून्य। ई शून्य पूर्ण, अखंड, दिव्य, सर्वव्यापी, कालीतीत, शाश्वत, आनंदमय, करुणा आ प्रेमरूप बा। ईहे शून्यता विश्व–मानव के आपन मौलिक सहज स्वरूप बा, स्वभाव बा। सगरे प्रकृति में एही शून्यता के छटा छिंटाइल बा। सगरो सृष्टि एकरे सौन्दर्य से ओतप्रोत बा। एही से उहाँ विभिन्नता त बा, बाकी कवनो तरे के विभाजन नइखे। कबीर एकरे लाली में नहाके लाल भइल बाड़न– 'मैं भी हो गई लाल'। कबीर हर तरे के विभाजन अउर भेद–भाव के फूँक देवे खातिर हाथ में लुआठा लिहले ठाढ़ बाड़न। विभाजन आदमी के स्वभाव ना, मनोविकार हवे। नवजात मानव–शिशु में कवनो तरे के विभाजन आ भेद–भाव

ना होखे। ओकर आपन कवनो नांव, उपाधि, धर्म, जाति भा सम्प्रदायो ना होखे। बाकी जइसे–जइसे ऊ बड़हन होत जाला, ओइसे–ओइसे ऊ नाँव, उपाधि, जाति, धर्म–मजहब, सम्प्रदाय आ काम–क्रोध, लोभ–मोह, ईर्ष्या–द्वेष आदि विकारन के बरियार डोर में बन्हात, कसात चलि जाला। ओकर मौलिक स्वतंत्रता छिन जाले आ परतंत्रता ओकर नियति बन जाले। कविता मुनष्य के आन्तरिक स्वतंत्रता के उपलब्धि के शब्द–साधना हवे, आ ओकरा के उपर्युक्त समस्त प्रकार के बन्धनन से मुक्त कइल ओकर मुख्य प्रयोजन हवे।

अइसे त मानवीय मनोविकारन के प्रकार त अपार बा, बाकी सगरो के मूल एक्के बा, आ ऊ बा आदमी के अपने मन, जवन निपटे झूठ बा, भ्रम बा, लेकिन तब्बो ऊ हर छन आदमी के कपार पर सवार बा। ईहे मिथ्या मन मुनष्य के भीतर मिथ्या 'मैं', यानी कि मिथ्या 'अहंभाव' के जन्म देला जवन कि ओकरे खातिर 'पृथक सत्ता' अर्थात् 'व्यक्ति सत्ता' के वजह बनेला। फिर ईहे मिथ्या मन 'बुद्धि' अर्थात् 'मैं' के हर नीक–बाउर बात के समर्थन देवेवाली खंड चेतना जइसन चित्तवृत्ति के खड़ा करेला। परस्पर अलग–अलग प्रतीत होत रहला के बादो ई तीनों एक्के चित्तवृत्ति 'मन' के ही तीन ठे रूप हवे। एह में मन 'मैं' के रूप में विभेदकारी प्रवृत्तिवाला हवे। सभ्ज्ञ तरे के भेदभाव आ विभाजन एही विभेदकारी चित्तवृत्ति के उपज हवे। संसार के हर तरे के संघर्ष, एही 'मैं' से उत्पन्न द्वैत–भाव के संघर्ष हवे। संघर्ष खातिर द्वैत जरूरी बा, दू के मौजूदगी जरूरी बा। यदि कवनो तरे विभेदकारी 'मैं' के दीवार ढहि जाय त भीतर मुनष्य एके रहि जाला–शून्यवत, अरूप, अनाम, निरुपाधि, अद्वैत अर्थात् ना हिन्दू, ना मुसलमान, ना सिक्ख, ना ईसाई, सिर्फ मनुष्य, दिव्य मनुष्य–निर्मल, निर्विकार, करुणा आ प्रेमरूप। 'एकोऽहं द्वितीयो नास्ति', उहाँ सब तरे के संघर्ष मिट जाला। आखिर स्वयं से स्वयं के संघर्ष कइसन? स्वयं से स्वयं के ईर्ष्या–द्वेष कइसन?

आध्यात्म में जनवा अद्वैत–दर्शन के चर्चा भइल बा, ऊहे साहित्य में 'रहस्यवाद' के रूप में प्रतिष्ठित बा। कबीर के एगो दोहा बहुते प्रसिद्ध बा–

जल में कुंभ कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल जलहि समाना, यह तत् कथौ गियानी।।

इहाँ कुंभ आदमी के 'देहभाव' अर्थात् मिथ्या अहंकार के प्रतीक बा, जइसन कि खुद कबीर कहले बाड़न– 'यह तन काचा कुम्भ है।' कुम्भस्थित जल 'परम चैतन्य' के प्रतीक बा, 'चितिशक्ति' भ आध्यात्मिक भाषा में कहल जाय त 'आत्मस्वरूप' के प्रतीक बा, अरूप, अनाम, अखंड अस्तित्व के सूचक बा, जवना में कवनो तरे के विभाजन नइखे, बाकी कुंभ के दीवार अर्थात् विभेदकारी अहंकार कुम्भस्थित जल आ नदी स्थित जल के मध्य विभाजन पैदा कइले बा। जवन जल बाहर नदी में 'विराट' दिखाई देत बा, ऊहे जल भीतर कुम्भ में बहुते 'लघु' प्रतीत हो रहल बा, कुम्भ के कारन, ना त ऊहो विराटे बा। कुम्भरूपी अहंकार के देवाल 'विराट' के प्रत्यक्षबोध में बाधा बनि के ठाढ़ बा। ई कुम्भ जब फूटि जाला त भीतर स्थित जल आ नदी स्थित जल के भेद मिट जाला, कुंभस्थित जल नदी स्थित जल से मिल के तदरूप हो जाला, विराट हो जाला। अहंकार के वजह से ऊ मनुष्य होखला के बादो पशु नियर आचरण करे के मजबूर बा। पशु 'पाश' शब्द से बनल बा, जवना के अर्थ बा– जे पाश से बँधल बा, 'पाश' माने बंधन। चित्तवृत्तियन के पाश में बन्हाके जीयल त पशु होखल हवे। जे एह पाश से मुक्त हो जाला, ऊ 'पशुपति' हो जाला, शिव हो जाला। कविता मनुष्य के चित्तवृत्ति के पाश से मुक्त होके, 'पशुपति' होखे खातिर प्रोत्साहित करेले। ई चित्तवृत्ति से मुक्ति आ स्वयं के उपलब्धि के साधना हवे,मनोविकारन के गहन अंधकार में हेराइल स्वयं के ढूँढ़े वाला अँजोर हवे। एही से–'कविता' मनोरंजन ना, मनोभंजन हवे।

कवि होखे खातिर चित्तवृत्तियन के बंधन से मुक्ति अनिवार्य बा। स्वयं आदि–कवि के आपन अतीरत एकर परतोख बां अतीर में ऊ कुख्यात डकइत रहलन– डकइत रत्नाकर। लूटपाट, आ हत्या जइसन अमानवीय कर्म उनके दिनचर्या रहे। कालिदास त बजर मुरुखे रहलन, जवना डाढ़ि प बइठल रहे, ओकरे के काटत रहें। तुलसी के अतीत त 'कामी पुरुष' के अतीत बा। काम–वासना में अतना आन्हर कि उनके मुरुदा में नाव, आ साँप में रसरी लउकत रहे। असल में, चित्तवृत्ति के त प्रवृत्तिये अंधकार के प्रवृत्ति होखेले, बाकी अंधकार में जीयल मनुष्य होखल ना हवे, ई त निशाचर होखल हवे– 'निशायां विचरति स निशाचरः।' उपनिषद् के कवि अंधकार से मुक्ति के प्रार्थना कइले बा– 'तमसो मा ज्योतिर्गमय।' अंधकार में उतरे खातिर प्रार्थना के जरूरतो का बा? ओकरे खातिर त चित्तवृत्तिये पर्याप्त बाड़ीसँ। पुराण के कवि कहले बा कि देवता आ दानव एक्के पिता के संतान हउवें सँ, बाकी दूनों के जीवन–प्रवृत्ति एक ना रहें जे अन्हार में उतर गइल ऊ निशाचर हो गइल, जे अन्हार से बहिराइ गइल ऊ देवता हो गइल। रावण 'उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती' ऋषि विश्रवा के संतान यानी कि प्रकाश–पुत्र रहे, रामो से ऊँच जाति के रहे, बाकी तब्बो ऊ निशाचर रहे, ओकर जीवन–गति पग–पग प तिमिरोन्मुखी रहे, ऊ कम तपस्वी ना रहे, बाकी ओकर तपस्या अह ंके दमन खातिर ना, बलुक अह ंके सम्बर्द्धन खातिर रहे। साधना के एह से बेसी विसंगति अउर का हो सकेला? ईहे त अंधत्व हवे, असुरत्व हवे। राम के जीवन एह विसंगति

से मुक्त रहे। हालांकि उनकर शरीर साधारने आदमी के शरीर रहे, क्षत्रिय–शरीर रहे, बाकी ओके ऊ अपना तरीका से, अपने इच्छा मोताबिक, दुबारा गढ़ले रहले, 'निज इच्छा निर्मित तनु' आ एहीलिए उनकर ई नयका शरीर अब 'माया गुन गो पार' रहे, मनोविकारन से मुक्त चिदानंदमय शरीर रहे। मानस के कवि स्वयं आदि–कवि से एकर गवाही दियवले बा– 'चिदानंदमय देह तुम्हारी। बिगत बिकार जान अधिकारी।' आदि–कवि से गवाही एहलिए, कि ऊ अंधकार से मुक्ति के आपन 'तप–यात्रा' पूरा क चुकल रहें, अब ऊ चित्तवित्तयन के दास ना, मालिक रहले। कवि होखे खातिर 'रत्नाकर–चेतना' से ऊपर उठि के 'ऋषि–चेतना' में प्रतिष्ठित भइल अनिवार्य शर्त बा।

साहित्य में कवि, द्रष्टा आ ऋषि, तीनो समानार्थक बाड़न सँ। भारतीय आप्त–चिन्तन में 'कवि' शब्द 'ईश्वर', ब्रह्म' आ 'प्रजापति' के पर्याय बा। 'कवि' शब्द 'कु' धातु में अच् प्रत्यय अर्थात् 'ई' जोड़ि के निर्मित भइल बा। इहाँ 'कु' के अर्थ बा– 'व्यक्ति', 'आकाश', 'अनंतता', 'अन्तता' यानी कि सर्वज्ञता। एहसे ई ठीके कहल गइल बा कि काव्य ओही मनीषी के सृष्टि हवे, जवन कि स्वयं सम्पूर्ण आ सर्वज्ञ बा– 'कवि मनीषी परिभू: स्वयम्भू:।' 'परिभू:' अर्थात् जे अपने अनुभूति में जीवन–जगत के सब कुछ के समेट लेवे के शक्ति से सम्पन्न बा। एह सामर्थ्य के पावे खातिर 'विराट–शक्ति' के 'कृपा–प्रसाद' जरूरी बा। आ एकरे खातिर ओकरा दिव्य चरनन में आपन तुच्छ अहंकार के केंचुल उतारि के रखिये देवे के परी। कालिदास अपने चित्तवृत्तियन के जड़ता अर्थात् मूढ़ता के बरियार डाढ़ि, जेपर ऊ बइठल रहें, माने कि, जवन उनके जिनिगी के आधार रहे, के काटि के, माँ काली के चरनन में रखि के निराधार हो गइल रहें, शून्य हो गइल रहें, काली के दास हो गइल रहें। दास के अर्थे होला– अज्ञात–सत्ता के मर्जी में राजी रहे के हिम्मत अर्थात् स्वयं के विसर्ज, 'व्यक्ति सत्ता' के सम्पूर्ण समाप्ति। तुलसी के 'काम' से 'राम' तक के कठिन तप करे के परल रहे। तब्बे ऊ 'गोस्वामी' के उपाधि से सुशोभित भइल रहें। गोस्वामी अर्थात् 'गो' के 'स्वामी' यानी कि इन्द्रियन के मालिक। आखिर लम्पटई आ कवितई, दूनों के साथे कइसे चली? काव्य–साधना भगवत्ता के साधना हवे, माँ शारदा के आराधना हवे। एकरे खातिर हृदय के मनोविकार के प्रदूषण से पूर्णतः मुक्त आ पवित्र त करही के परी, अपने मिथ्या अहंकार के अंधकार से बाहर त निकलही के परी। सच्चा कवि के अर्थ हवे–जेके ई समझ में आ गइल बा कि आपन कवनो सामर्थ्य नइखे, आपन सामर्थ्य त अहंकार हवे। अपने असमर्थता के ईहे अनुभूति कवि के दिव्य सामर्थ्य के उपलब्धि हवे, ईश्वरीय कृपा के प्राप्ति हवे– 'निर्बल के बल राम।' तुलसी का कबीर आदि कवि आत्मनिर्बलता के एही अनुभूति से बलवान बाड़न। आपन बल त अहंकार हवे, आ अहंकार अउर विराट–शक्ति, दूनों साथ–साथ कइसे रहिहें? एक हटी, तब्बे त दुसरा के प्रवेश सम्भव बा। अहंकार घुसकी तब्बे त जगज खाली होई आ जगह खाली होई तब्बे त दैवी कृपा के बल स्थान ग्रहण करी! 'मैं' के समर्पण के ई घटना बड़ा अद्भुत हवे। एक तुच्छ 'मैं' के ढहते आदमी विराट हो जाला।

घटे अगर तो एक मुश्ते–खाक है इन्सां/बढ़े तो बुसअतें कौनेन में समा न सके।

आपन 'मैं' से मुक्त भइला के अवस्था में कवि सच्चा माने में 'परिभू:' के चरितार्थ क पावेला। आचार्य रामचन्द्र शुक्त के एगो चर्चित निबंध बा– 'कविता क्या है?' कहल गइल बा कि ऊ निबंध के जिनिगी–भर लिखते–सुधारत रह गइल रहें, आ कठिन मेहनत के बाद ई कहि पवले रहें– ''जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की...मुक्तावस्था 'रसदशा' कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द–विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भावभोग कहते हैं और कर्मयोग और ज्ञानयोग का समकक्ष मानते हैं।''

इहाँ सवाल ई पैदा होत बा कि आखिर आदमी के हृदय कवने बन्हना से बन्हाइल बा? का हवे ऊ छनना–बन्हना? आ, का हवे मुक्ति? साँच पूछीं, त इहाँ बन्धन कवनो वस्तु नइखे, ना ओसे मुक्त भइल, कवनो बड़हन बात। ई बंधन कुछू अउरो तरे के बा, जवन बा त ना, बाकी बन्हले बा, तब्बे त एकरा के अपना इहाँ 'माया' कहल गइल बा। 'मा' माने 'ना' आ 'या' माने 'जे', अर्थात् माया माने, जे 'बा' ना, बाकी 'बा' जइसन बुझात बा। निपट 'झूठ' बा, बाकी 'साँच' लागति बा, एही से त एसे मुक्ति मुश्किल हो गइलि बा। मानस के कवि एही अनुभूति से गुजरला के बाद कहल बा– 'जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई। जदपि मृषा छूटत कठिनई।' आदमी कहीं कवनो वस्तु से नइखे बन्हाइल, आदमी बन्हाइल बा 'हमार' के भाव से, 'मोर' के भाव से– 'हमार घर', 'हमार मेहरारु', 'हमार बेटा–बेटी', 'हमार खेती–बारी', 'हमार जाति–धर्म–मजहब' भा 'हमार प्रांत' 'हमार राष्ट्र' आदि अन्तहीन चीजन से बन्हाइल बा ऊ। एही 'हमार' भा 'मोर' के भाव के जब घाव लागेला भा ओके कवनो नुकसान पहुँचेला त आदमी तिलमिला जाला, दुखी हो जाला। दोसरा के मेहरारु मरति बा, दोसरा के बेटा बेमार बा, दोसरा के घर जरत बा, दोसरा के धन–दउलत लुटात बा, दोसरा के गला घोंटात बा, त आदमी कहीं तकलीफ में नइखे, कहीं बेचैन नइखे, दुख में नइखे, काहें? काहेंकि उहाँ 'हमार' आ 'मोर' के कवनो नाता नइखे। 'हमार' भा 'मोर' के एह मिथ्या

भाव के अर्थ बा–ममता, अर्थात् मन के राग–वृत्ति, यानी कि आसक्ति। ई ममता भा ममत्व 'मैं' के उपज हवे, आ 'मैं' के मूल हवे मन, बाकी ई दूनों अलग–अलग चीज नइखे, एक्के बा। योगीराज लाहिड़ी महाशय के प्रपौत्र क्रियायोगी शिवेन्दु लाहिड़ी कहले बाड़न– 'भासमान अहंभाव (माया) इसी संकुचित चित्तवृत्ति से बना हुआ है जिसे हम चित्र कहते हैं। (अहंभाव और मन समरूप हैं। जब हम 'मेरा मन' कहते हैं, तब वास्तव में 'मैं' ही 'मन' हूँ तथा 'मन' ही 'मैं' है। यह मिथ्या द्वैत ही हमारे दुख और दुखभोग का मूल कारण है।)' कबीर एकरे के 'चलती चक्की' कहले बाड़न आ एहमें फँसल मनुष्य के दुर्दशा पर रो पड़ल बाड़न– 'दिया कबीरा रोय।' तुलसी एकरे के 'माया' नाँव देत बाड़न, जवन कि इन्द्रियन समेत जहाँ ले मन के सत्ता बा, उहाँ ले जिनिगी के सभ ओर से घेरले–छेंकले बा।

'मैं' अरु मोर तोर तै माया। जेहिं बस कीन्हे जीव निकाया।।

गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई।।

ईहे 'मोर'–'तोर' के भाव विभेदकारी चित्तवृत्ति 'मैं' के दू बाँह हवे, जवना से ऊ आदमी के जकड़ रखले बा। मनुष्यता आ लोकमंगल खातिर विनाशकारी, हर तरे के भेदभाव, हर तरे के द्वैत, हर तरे के विकास वस्तुतः एही 'मैं' के मन के उत्पत्ति हवे। गीता के कवि कहले बा– 'मन एव मनुष्याणां कारण बन्धनमोक्षयोः।' चित्तवृत्ति आ ओह से उत्पन्न सभ तरे के विकारन के सम्पूर्ण अंत हृदय के मुक्तावस्था हवे। ईहे आन्तरिक शून्यता के उपलब्धि हवे, ईहे परम स्वतंत्रता के प्राप्ति हवे आ ईहे आदमी के अपने सहज स्वरूप अर्थात् अद्वैतावस्था के साक्षात्कार हवे। एही आन्तरिक शून्यता के सिद्धि के उद्येश्य से चित्तवृत्ति के सम्पूर्ण संहार खातिर, शून्यता के उपलब्ध मनुष्य द्वारा कइल गइल छनद–विधान कविता हवे। कवि होखे खातिर आन्तरिक शून्यता के उपलब्धि जरूरी बा। 'व्यक्ति–सत्ता' से पूर्णतः मुक्त 'शून्यावस्था' में, कवि अखिल विश्व के प्रति अखण्डता के बोध करेला। इहवें ऊ अखिल विश्व से एकाकार होके तदरूप हो जाला आ विश्व के पीड़ा ओकर आपन पीड़ा बनि जाले, क्रौंची के आँसू ओकर आपन आँसू बन जाला, आ सभके आँसुअन से अभिन्न होके ऊ आँसुअन के हार बन जाला अउर गाइ उठेला– 'आँसुओं का हार हूँ मैं।' बाकी इहवाँ ओकर 'मैं', 'समष्टि–मैं' होखेला। चित्तवृत्ति से मुक्त शून्यावस्था अर्थात् हृदय के मुक्तावस्था से उत्पन्न करुणा ही असली करुणा हवे। एहीलिए इहाँ करुणा कृत्य ना खेल हवे– 'करुणैव केलिः।' कृत्य त 'मैं' के विकृति हवे, करुणा के ढोंग हवे, पाखंड हवे। 'मैं' जब करुणा करेला त ओकर हिसाबो राखेला आ सूद समेत वसूललो चाहेला। चित्तवृत्ति से मुक्त करुणा के पसार आदमी से लेके गाइ–बरध, कुक्कुर–बिलार, चिरई–चुरुंग, जड़–चेतन, सभके प्रति समान होखेला। ई शून्यावस्थे प्रेम क`जनक हवे। प्रेम अर्थात् मन के अभाव। प्रेम के उपलब्ध आदमी सभ भेदन से ऊपर उठ जाला, आ एहीलिए ऊ अपने दुश्मनो से अपना जइसन प्रेम करेला। असल में, शत्रु–मित्र के अवधारणा मनवे के उपज हवे। मानस के कवि कहत बाड़न कि शत्रु, मित्र आ उदासीन, ई तीनो मने के जनमल बाड़न सँ। आ मनवे कहेला कि शत्रु के साँप नियर त्याग देबे के चाहीं, मित्र के सोना नियर ग्रहण करे के चाहीं आ उदासीन के तिनका नियर उपेक्षा क देवे के चाहीं–

शत्रु, मित्र, मध्यस्थ, तीनि ये, मन कीन्हें बरिआईं।

त्यागन, गहन, उपेच्छनीय, अहि हाटक, तृन की नाईं।।

प्रेम समानुभूति के अवस्था हवे। एकर अर्थ ई, कि हम जेसे प्रेम करीलाँ, ऊ केहू दोसर ना हवे, हमही हईं। प्रेम द्वैत में अद्वैत के सौन्दर्यबोध हवे। प्रेम आ करुणा, एक्के सिक्का के दू पहलू हवे। प्रेमे दोसरा के दुख के लैनू नियर टहकि के करुणा बनि जाला। आ, फिरु ईहे करुणा ओकर आँसू पोंछे खातिर, जरूरत पड़ले प हथियारो उठा लेले, ना त करुणा के अर्थे का रहि जाइत–

उस करुणा का अर्थ भला क्या, जो बस नीर बहाती।

मगर कभी बेवा आँखों का पानी पोंछ न पाती।।

राम के करुणा खाली–भर नीरे ना बहावे, नीर पोंछबो करे– निसिचर निकर सकल मुनि खाये। सुनि रघुबीर नयन जल छाये।।

निसिचर हीन करुउँ महि भुज उठाइ पन दीन्ह।

सकल मुनिन्ह के आश्रम जाइ जाइ सुख दीन्ह।।

करुणे प्रेम हवे आ प्रेमे जीवन के सौन्दर्य हवे। राम के सौन्दर्य एही प्रेम के सौन्दर्य हवे, जेकरा प्रभाव में आवे से जड़–चेतन केहू अपना के रोक नइखे पावत। प्रेमे सत्य, आ प्रेम शिव हवे। जीवन में एही प्रेम के प्रतिष्ठा काव्य के प्रयोजन हवे। ईहे प्रेम 'परम धर्म अहिंसा' हवे– 'अहिंसा परमो धर्मः' काहेंकि, प्रेमे आदमी के हिंसा से मुक्त क सकेला। आखिर हिंसार का हवे, 'मैं' के ही त उपद्रव हवे! थोरे में, कहे के मतलब ई बा कि चित्तवृत्तियन के पूर्ण समाप्तिए अर्थात् शून्यावस्थे सगरो तरे के दुर्गुणन के अस्त, आ सभ तरे के सद्गुनन के उदय हवे। ईहे शून्यावस्था आदमी के विवेक भा प्रज्ञा नामक समझदारी के दिव्य ऊर्जा प्रदान करेले। एकरे द्वारा संचालित जीवन 'राम–राज्य' हवे। एही दिव्य प्रज्ञा–ऊर्जा के हम 'काव्य–कर्म' के सिद्धि बदे 'कवि–प्रतिभा' कहल चाहब। एही प्रतिभा से संपन्न कवि के 'ऋषि' आ 'द्रष्टा' कहल गइल बा।

मूल्यांकन

सहज साँच अनुभूति करावत धरती-राग

रामदेव शुक्ल

भोजपुरी में लिखाई में बाढ़ि आ गइल बा। जवन लोग पढ़ि लिख के बुधिआगर होके सहरी हो गइल रहलें आ भोजपुरी बोलले में लजात रहलें ऊहो लोग अपने समाज में भोजपुरी बोलल आ भोजपुरी में लिखल सुरू कइले बा। सबसे ढेर लिखात बा कविता। कविता एतना लिखा रहल बा आ अइसन लिखा रहल बा कि कवनो भाषा के पछाड़ि दे। कसरि एतने बा कि भोजपुरी कविता लिखे आ गावे (बजावे) वालन के गँउवों बंबइया फिलिम वाला 'बहुत नीक लागे वाला गाँव' बा। नवका चालचलन वाला गाँवन में हालिजे लिखि रहल बा, ऊ अखबारन में छपल लूट खसोट, मारल मुवावल, नेत नेतकुल्ली के चोरी छिनारी आ अधरम के कुकुरकथा लिखि रहल बा। कवन गाँव एइसन रहि गइल बा जवने में शराब, ताड़ी, गाँजा, स्मैक, गुटका, गुल, मुर्गा अंडा आदि नाहीं बिकात होखे। मोबाइल पर अदिमियों नाहीं जनावर ले के कुलिकरतब देखल जा रहल बा, दुर्गापूजा में आ फगुवा में ट्राली पर लइकी नाचि रहल बाड़ी। जवन जवन कुकरम कऽ के सहरी लोग थाकि गइल बा, ऊ सब अब गाँव में हो रहल बा। तब? जेकरा गाँव से आ गाँव की बोली बानी से नेह छोह के नाता नइखे टूटि पावत ओकरा का करे के चाहीं?

चलीं, तनि इतिहास कावर ताकल जाव। आजु से एक सौ छव बरिस पहिले, महात्मा भइले से पहिले, गांधीजी एगो किताब लिखलें– 'हिंदस्वराज्य' ओमे उनकर ई सोचान परगट भइल कि भारत के आजादी तब्बे मिली आ टिकल रही जब गाँव के रहवइयन के जिनगी के रहनी ठीक से पहिचानि के पढ़ल लिखल लोग ई समुझे लगिहें कि अन्नदाता किसान हवें आ किसान गँउवे में रहि सकेलें। एसे गाँव के मन मिजाज समुझे के जरूरत बा। किसान प्रेम करेलें– धरती से, बैल बछिवा से, पेड़पालो से, हर कुदार से घरपरिवार से, नातहीत से, अरोसपरोस से आ ओह सबकुछ से, जे एह धरती पर जीव के सिरजना में मददगार होला। प्रेम ऊ अमिरित हवे, जवन मुवलो के जिया देला। जरूरत, ओके देहि से देहि ले के एक्के रूप तक ले छोटहन ना कऽ के ओह सरेह सिवान तक ले गइले के बा, जहाँ कबीर लेके गइल रहलें। देहि के परेम घिनाए वाला नाहीं होला, ओही से कढ़ावल जाला ऊ राग, जवन पहुँचेला अनहद के देस तक ले।

बहुत दिन बाद भोजपुरी के एगो पढ़ेलायक कविता–संग्रह पढ़ि रहल बानी 'कुछ आग, कुछ राग'। लिखवइया हवें अशोक द्विवेदी। आपन गाँव छोड़ि के परदेस में रहले पर उनका बुझात बा कि– जइसे सुर गूँजेला अकास में धुन लहरेला बतास में। जइसे गरमी आग में बा। हम, तहरा में रचल बानी.... हम तहरा ओठन प अचके आ जाए वाला गीत हईं। थिरक उठे जवना पर। तहार देह। ऊ आदिम संगीत हईं। मीता, जइसे पानी से चाहेला बहाव हमार प्रेरना ह, तहार लगाव।'

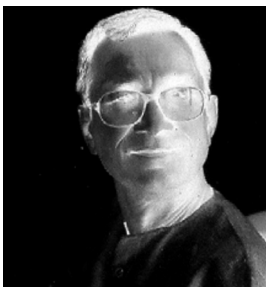

महानगर में रहि के कवि आपन चिन्हार बता रहल बा–

जइसे गुड़ में रहेला मिठास, आ मरिचा अपना तिताई से जानाला, जइसे धान के देस पुअरा से चिन्हाला। हमार पहिचान तोहसे बा।'

ई परेम केतना खदिगर उपजाऊ खेत बा जवने के सिरजना से के नइखे अघात?

''तहरा से पूर होला हमार सिरजन। तोहरे से सजेले हमार कल्पना। आ रचेले अइसन संसार–जवने में खुश रहे जिया जंतु, चिरई–च्युंटी सब। केहू ना रहे छछाइल। सबके मिले दाना पानी। सभे लउके अघाइल।''

ई प्रेम ह जवने में सबके जुड़वा दिहले, सबके अघा दिहले के समाई होला। लोहासीमटि के जंगल में अफनाइल कसमसात परान के पुकार सुनल जाव–

''तोहसे दूर इहां परदेस में। अपना चिन्हारी खातिर हम न जाने कबसे घुमड़त बानी। बन्हले अँकवार में समुंदर उमड़त बानी। हवा के कवनो तेज झोंका आइत आ उड़ा के पहुँचा देइत अपना देस। अपना माटी पर।'' मीता एगो देहि नाहीं हई, गाँव के रूप–रस–गंध–स्पर्श–भरल आतमा हई। ई अनगिनत रूप में ओके जुड़वावेली जेकर जियरा इनसे जुड़ल रहेला। एही तरे, एक रूप सुघर घरनी के ह।

''जब कबो चिन्ता के रेघारी। उभरेले हमरा माथे, कहेली हमार घरनी। 'थिर राखीं मन। लौना अस मत जराईं देह। जीव आ जियका जोगवला के हऽ। जरवला के ना।' जे गाँव से जुड़ल बा ऊ जानत बा कि दू चीज एक्के लेखा जोगाके, सहेजि के, सम्हारि के राखल जाला–एगो जीव आ दुसरका जियका। जीव परान् हऽ आ जियका हऽ परान के राखे वाला। 'लवना' कहला जाला ओह सब कुछ के जेके जरा के चूल्हा जरावल जाला। इहाँ कहल जात बा कि जीव आ जियका जोगा के राखल जाला, जरावल नाहीं जाला। किसान लोग के बीच कहाउति कहल जाले–'जीव आ जियका एक्के हऽ।' उपनिषद की भाषा में अन्न के ब्रह्म कहल जाला। अन्न उपजावे वाला जानेलें कि जियका जीव से अगले नइखे।–

रीसि बरले पर– ''बरिजेली थिर रहीं, तनि सेरवाईं। अगिन के भितरे। घेर दीं विवेक (का जल) से। चढ़े मत दीं कपार पर आँकुस में राखीं मन.....ईहे रउरा के, आग का उपदरो से बचाई।''

ई हऽ आग, राग आ बिबेक के आपसी नाता। मन में राग अउर आग सथहीं रहेला। बिबेक के जल से सेरवावल जाके आग सृष्टि के चलावे वाला ऊर्जा बनेले आ अविवेक से लहकि के सब कुछ के– रागो के, विधंस के देले। रिसिया नेवरले के बाद बुझाता कि ''धरनी हमार। उमगत जल के सीतल सोत हई। जेकरा निगिचा आगि से निकलत लवर। आ लवर से निकलत आँच दूनो अपरूपी सेराई जाला। हमरा अगिन के जइसे ऊ जोगवत होखसु। बेर बेर जताइ के नेह। जइसे सिद्ध करत होखस कि जतना पियासल रहेले हमार पियास। ओतने पियासल रहेला। उनका भीतर से उमगत जल।'' ई बिबेक के जल हऽ जवन राग आ आग दूनू के सीतल करेला। पियासल पियास के विरोधाभास कवनो उलटबाँसी नाहीं ह, कबीर के आपा खोइ के बोलल बानी ह, जवन आन के सीतल करेले आ अपन दू सीतल होले।

जब हियरा प्रेम में रसलबसल रहेला तब कइसन अजगुत बिंब के सिरजन होला।

''सुधि का सुगंध से। गमक उठेला जब बतास। छान्ही पर एकदम ओलरि आवेला अकास.....तहार सुधि अवते। लहरे लागेला ताल। फूल, टूसा–कोंढ़ी से लेके रंग। संवरेले कल्पना बन के तितली दउरेले। पँखुरी पँखुरी.....''

''तहार सुधि। फुनुगी से लटकल लालमुनि चिरई, झूलि झूलि उड़ि जाले। हिलत छोड़ कंछी डाढ़ि के।'' एह कविता में सुधि के जेतना अजगुत बिम्ब बनल बा ऊ पढ़वइया सुनवइया के भितरकी आँखि के आगे नाचि रहल बा। फुनुगी से लटकल ललमुनिया के झूलत रहल आ कंछी हिलत छोड़ि के उड़ि गइल, पढ़वइया सुनवइया के ईहो बता रहल बा कि उमड़त घुमड़त भाव आ कल्पना कविता में कइसे रस भरेले।

अशोक द्विवेदी भोजपुरी भाषा के सुकुवार सुभाव आ रचाव के पुरहर उपयोग कइले में समरथ बानें, एकर परमान उनकी कविता में जवने लेखा मिलेला, ओइसन बहुत कमे कवि लोग में लउकेला।

एगो भाषा होला, जइसे भोजपुरी आ एगो काव्य–भाषा होला जवने के कवि लोग रचेलें। भाषा विरासत में मिलेले आ काव्य–भाषा कवि रचेलें। एही से हर समरथ कवि के आपन 'काव्य–भाषा' होले। 'प्रेम कहानी' कविता में देखल जा सकेला कि अशोक द्विवेदी कइसे आपन 'काव्य–भाषा' रचेलें।

''सबद सबद हम साधत बानी। भीतर अगिन नयन भरि पानी। अरथ उहेरत, रचि ना पवलीं। अबले आपन प्रेम कहानी।''

सबद सधले रहलें कबीर। उनके कहाव रहल कि–सबद सहारे राखिए, सबद के हाथ न पाँव।

एक सबद औषद बने, एक सबद बने घाव।।

जे सबद के सम्हारि लेला, ओके सबद सम्हरले रहेला। ईहे हालि प्रेम के हवे। जे प्रेम के सम्हरले रहेला, ओके प्रेम सम्हारत रहेला। ईहे कहानी धरम के हऽ। जे धरम के सम्हरले रहेला, ओके धरम सम्हरले रहेला। एक लेखा तीनो एक्के हवें।

'भीतर अगिन नयन भरि पानी' पढ़ते महाकवि जयशंकर प्रसाद के 'आँसू' के छंद अचके मन में उतरि आइल, ''शीतल ज्वाला जलती है, ईंधन रोता दृग–जल का। यह व्यर्थ साँस चल चल कर करती है काम अनिल का।।''

कइसे भाषा से काव्य–भाषा बनेले?

''बून कि जस गिरि ताल सरोवर। नदिया सागर मिलि जाले। अछरे अछर सबद बनि भाखा। अकथ उचारत खिलि जाले।'' प्रेम में बूड़ल रचना में ऊ लिखा जाला, जवने के न कहल जा सकेला, न उचारल जा सकेला। कबीर एही से कहि गइलें– 'अकथ कहानी प्रेम के।'

काहें, कवि के ई बुझात बा कि ऊ आपन प्रेम अबहिन रचि नाहीं पवलें? अपरूप सुनरता पर काम के रीझन से अनुरागभरल सिरजना त हो जाए के चाहीं, तब कसरि का रहि गइल? ''रति अपरूप काम के रीझन। सिरिजन में अनुराग समाइल पर नेवछावर हो दुसरा पर। तवने भाव–सुभाव न आइल। जवन करे कहनी संपूरन। भइल न ओह शिव के अगवानी।'' प्रेम–कहानी तब संपूरन होई जब सबके मंगल करे वाला शिव–भाव आ जाय। प्रेम अलगावत रहे, तबले ओकर कहानी पूरन होइबे नाहीं करी। आन आपन के फरक मेटा के प्रेम पूरन होला आ सबके खलिहर जगह भरि देला। सबके मंगल करेला।

''खुशी भा प्रेम। मुट्ठी में ना बन्हाय
ओनहल बादर अँजुरी में ना समाय

खाली ओके रोपल जा सकेला। दीठि का अँगना में/हिया का अँजुरी में। फेरू ओके उलीचि के दोसरा पर पावल जा सकेला सुख। खुशी आ प्रेम बान्हे के ना, लुटावे के चीज हऽ।''

मक्खीचूस लोग जवन धन पाबेलें, गठरी बान्हि के धइ लेलें। इहाँ कहत जा रहल बा कि खुशी आ प्रेम जेतने लुटावल जाई ओतने बढ़त रही। जेतने छिपावल जाई ओतने घटत रही।

मानुसप्रेम बैकुंठी तब हो जाला जब ओकरे अँकवार में जीव जंतु चिरई चुरूँग सभे समा जाला। एह मामला

में अशोक द्विवेदी हजारन पीढ़ी से गावल जाए वाली गीतन के नवका संदर्भ देके रचि रहल बानें। गाँव अब सहर बनत जात बा। चिरई कहाँ बास लेव? गौरैया के रहे के जगह कहाँ बा? घर के पुरनिया के फिकिर हो गइल बा कि चिरइया काहें पहिले की लेखा घर–अँगना में खोता नइखे बनावति? ऊ सोझे ओही से पूछि रहल बाड़ी।

'उड़ि–उड़ि फुदुकेली छन्हियां/न उचरे अँगनवा नु हो, चिरई, काहे दूनी भभतेली जइसे कि/ हमनी का आन भइलीं हो।

उहे हउवे गँउँवा–गिरउवाँ/ ओसरवा दुअरवा नु हो, कवने अमनख चिरई न उचरेली। मइया हरान भइली हो।

अपने आप चिरई के दुख अमरख के कारण समझि के अपनहीं कहतारी–''कटि गइली दुअरा के निमिया। इनरवा भठाइ गइलें हो। बुझला एही दुखे चिरई दुखइली। निपट अनजान भइली हो।'' जब कारन बूझि गइली तब उपाइ सोचि लिहली।

'धइ के कटोरवा भरल जल/मइया अरज करें हो चिरई होइ जाला भूल चूक सबसे। न हमहू धेयान धइलीं हो।'

जइसे रूसल बेटी के पोल्हावत होखें, कहत बाड़ी–

''फेरू नया गछिया लगाइब/पनिसरा चलाइब हो, धिया करीं का, जँगरवो बा थाकल

हमहूँ पुरान भइलीं हो।''

एह गीत से कवि के नाँव न जुड़ल रहे तऽ 'निबिया के पेड़ जनि कटिह कि निबिया चिरइया बसेर' जइसन पुरनका लोकगीत मानल जा सकेला। केहू कवि के एसे बड़हन लालसा ना हो सकेला कि ओकर रचना लोकगीत बनि जाव। अशोक के कई गो गीत एह लेखा लोक में गावल जाई।

लोकगीत जहाँ बा, जवने बोली बानी में, ओकर पहिलका नाता श्रम से बा। जँतसार सोहनी, रोपनी, कटिया, दँवरी, सिकार कवनो न कवनो कठोर श्रम से ओकर नाता बा। अशोक द्विवेदी के कर्म–गीत परंपरा के सुमिरन बनि गइल बा–

''सरधा सनेह सरस रही जेतने। ओतने हँसी बखरी देहियां से ढरी जहाँ श्रम के पसेनवा। उहंवे सरग उतरी।'' तीन पीढ़ी एक्के साथे कइसे मड़ई के 'राम मड़इया' बना देले– ''मटिया के पयवा प 'धइल धरनियाँ। बाबा अस रोके बलाय, दूनो पाटे बबुरे क थुन्हिया लगावल। बाबू जी के कन्हिया बुझाय। ताहि पर ओरमल राम मड़इया। नेहिया क घर बनि जाय माई अस मयगर निमिया क छँहिया। काहें नाहीं चैन परी?''

''चढ़ते किरिन लागी तीखर घमवाँ। अगिया में देहियाँ जरी। याद आई निमिया क छोहगर छँहिया। माई नयन–बदरी। करमे के धरम बनावत जिनिगी। रूकी नाहीं एको घरी। अगिया में जेतने तपत जाई सोनवा। ओतने अउर निखरी। देहियां से ढरी जहाँ श्रम के पसेनवाँ। तहवें सरग उतरी।'' मध्यकाल के कविता में मुअला के बाद सरग मिलले के बड़ा लालच दीहल गइल बा। आधुनिक कविता में राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त 'साकेत' महाकाव्य में 'राम' से कहवा रहल बाड़ें–

मैं नहीं सँदेसा यहाँ स्वर्ग का लाया।

इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया।।

धरती सरग कइसे बनी? पसेना बहवले से। अशोक द्विवेदी एह रूप में 'करम के धरम बनवले' के महिमा गा रहल बाने। भोजपुरी इलाका में सदईं से परदेस जाके कमाए वाला जवान आ गाँव में आपन जवानी अकेल बितावे खातिर मजबूर घरनी के बिथा कहल सुनल आ गावल–रचल गइल बा। अशोक द्विवेदी बिरहिन के दुख रचत रहेलें, एह रूप में कि जे नइखे ओकरे बिना केकर केकर कवन हालि हो रहल बा। ई भित्तरी–बहरी क जथारथ अइसे बा, ...

''तूँ जल्दी लवटि आवऽ। बहुत उदास बा घर दुआर, बहुत उदास बा मुनवा। साँझि होते डँकरेले तहार चितकबरी। कान उठा के आपेले तहार आहट। रहेले आकुलव्याकुल। दूध त कम देइए रहलबिया। अब बछरूओ के नइखे पिये देत।'' घर परिवार गाइ बछरू सब के दुख बतवले कि बाद अपने तन–मन के दरद कहिं रहल बाड़ी।–

''हमरो मन बहुत उदास बा एघरी। काटे धावत बा घर–दुआर तहरा बिना। जून–कुजून कुछू नइखे बुझात। कब खाए पिए के चाहीं एकर होसे नइखे रहत। न समय पर भूखि लागत बा, न पियास। नतीजा ई बा कि– 'खर–सेवर हो गइल बा।''

ईहो बता रहल बाड़ी कि ''तू लवटि आव, त सब कुछ लवटि आई।

''जइसे साँझि होते। फेड़ का ओर लूझेली स चिरई तहार बोली सुनते सब बटुरा जाई। तूँ जल्दी लवटि ना आवऽ।''

ई कातर पुकार बहरा नइखे आवत, मनवे में उठि के सेरा जाति बा बकिर एकर असर पहुँचि रहल बा ओह हियरा तक ले।

ऊहो चिट्ठी नइखन लिखत। बिना लिखले मने मन लिख आ भेज रहल बानें–''हम चिट्ठी कइसे लिखीं?/ कइसे लिखीं कि बहुत खुश बानीं इहाँ हम। होके विलग तोहन लोग से.....!

हर घड़ी छेदत बीन्हत रहेला। इहवाँ हमके 'गाँव'।

इयाद परावत रहेला—हर घड़ी
ओइजा के बेबस छछनत जिनगी।
कल कहाँ बा बेकल मन के एहूजा?
हम ई सब लिखि के। नइखीं चाहत मन दुखावल तोहार!....

साँच मानऽ हमार परतीत करऽ/ भुलाइल नइखीं हम कुछऊ ना त, होत फजीरे तहरा पातर ओठन पर/ थिरके वाली किरिनिन के लाली। ना घर, ना दुआर। ना खेत, ना बघार। हमके इयाद बा आजो ऊ कटहरी चंपा के। बरबस खींचे वाली गंध जवन पछिला साल हुलसि के खिल गइल रहे अधरसा अमरूद अस न्योतत। तहार मीठ झिड़की ऊ बनावटी खीसि में आँखि तरेरल तोहार। भला कइसे भोर परी?''

एतना सुख, एतना सिंगार जिनगी में भरल रहे, तब गाँव छोड़ि के परदेस गइले के जरूरत का रहे? मन की पाती में ईहो लिखात बा। ''बाकिर का करीं? जवना खातिर घर छूटल। ऊ गरीबी, ऊ बेबसी ऊ तहार पुरान खांखर होत साड़ी से झांकत। मसकल कुर्ती हम के भरनीन सूते ना देलस आजु ले।'' नवकी पीढ़ी के ई जवान बिना उछाह के जिनगी जीये खातिर अनजान शहर के दहकत भरसाई में अपना के झोंकि दिहलस? ''ना,ना, हम माई आ बाबू जी लेखा नइखीं जीयल चाहत मार के मन। एही से झोंकि दिहनी हम अपना के....एह दहकत भरसाई में। अब कम से कम एगो भरोस आ। एगो सपना त बा ढंग से जिनिगी जिये के। हम लड़त त बानी ओकरा खातिर इहाँ।'' एतना कठिन लड़ाई के बाद उनके रहले के ठहर ठेकाना हो पवलेवा। चहतें त कुछ रूपेया मनीआडर से भेजि देतें। न मनीआडर भेजत बाड़ें, न चिट्ठी, न कपड़ा लत्ता, न सनेस। एतना कठकरेज काहे हो गइल बाड़ें?

''हम त देखत चाहत बानी। तोहन लोगन के एतना खुशहाल जेमे ना होखे अइसन कुछ के कमी। कि मन मार के जिये के परे....एही इंतजाम में बानीं। मत होखिहऽ तनिको उदास तूँ मन के थिर रखिहऽ। माई बाबू के दीहऽ ढाढस आ विश्वास, हम जल्दिये लौटब गाँव।''

एही जा एगो फरक लउकत बा। जे लोग चारि अच्छर पढ़ि के शहर में नोकरी चकरी करत बा, ओह लोग के सपना बा, कवनो जोगाड़ से शहर में बसि जाईं। जवन पसेना टारि के खटे वाला लोग बा, ओह लोगन के सपना बा कौनो लेखा गरीबी कम कऽ के गाँवे लवटि गइले के। ई गाँव के नमक रोटी पर पलल पोसल नमकहराम लोग ना हवें। गउवाँ के पुरान दिन एही लोगन के लवटले से लौटि के आई।

एगो स्थिति इहो बा कि परदेस से कमासुत बेटा के लवटले पर माई बाबू के कवन गति होला?

''सिकुरल अँखियन से, उभरल किरिनियाँ चिन्हलें त बाबू धवरलें धधाइ के। बबुवा लवटलें शहर से कमाइ के।

मइया त रहली भइल कउवाहँकनी। बहुरल जइसे बेयरिया सुलछनी। बबुआ क रूप रंग देखली चिहाइ के।''

— माई, बाबू एह रूप में देखत रहलन बाकि घरइतिन कइसे देखि रहल बाड़ी? ''हीरो के मात करसु किसुन कन्हइया। मुसुकी से ठनके सोनहुला रूपइया। खिरकी से निरखेली बहुअरि लुकाइ के।''

भोजपुरी के पुरान कहाउति हऽ— माई देखें पेट, मेहरी देखें चेट। चेट माने थइली (जेब) होला। माई का कहतिया??

''झट से खियावऽ बहू गदरा के घुघुनी।
चाह बइठावऽ फिरू पोइ दीहऽ मकुनी
हाथ मुँह धोवऽ बेटा अँगना में जाइके।''

माई के इशारा पाके भित्तर गइलें। हाथ मुँह धोवले के बाद पोंछे खातिर गमछी देत में बहुरिया का करत बाड़ी?

''देतखानी गमछी नयन मटकवली
रूसला नियर तनि ओठ बिजुकवली
कहलीः 'रहबि नाहीं हमहूँ बन्हाइ के।'

अब बेचारू 'पति' आ 'पूत' कवने रूप छोड़ें, आ कवने के सम्हारें? पहिलका गीत में लवटे के सपना देखत 'बबुवा' माई बाबू के भरोस आ विश्वास दियावत बाड़ें कि ऊ लवटि के गाँवे में रहिहें। एह गीत के 'बबुवा'?— ''मेहरि क मीठ छतनार लागे छाया, ओम्मे हेराइ गइल माई के माया। नोकरी प जाई मेहरारू जिदियाइ के।''

अशोक द्विवेदी बेटा पतोह के शहर चलि गइले की बाद माई के हाल सोझे नाहीं कहि पावत बाड़ें, एगो बहुत समरथ बिम्ब बना के सबकुछ कहि दिहले बानें। जवने गाइ के बछरू ओकर साथ छोड़ि देला ओकर कवन गति होले—

''बछरू क मोह, मुवल भुखिया पियसिया
छूवे नाहीं सानी पानी, लखे नाहीं घसिया।
रहि रहि टेरेले गइया रम्हाइ के।'' — माई त सब कुछ भितरे अँगेजी आ ऊ अँगेजतो बिया।

गाँव के तीन पीढ़ी के मानस रचले में एह कवि के कवितई सिद्ध हो गइल बा। घर—गाँव से जुड़ल जिनिगी का एह कवितई के विविधता देखे के होखे त अशोक द्विवेदी के 'कुछ आग, कुछ राग' पढ़े के चाही।●●

■ सन्दर्भ— 'कुछ आग कुछ राग' (कविता संकलन), अशोक द्विवेदी, मूल्य—200/— विजया पब्लिकेशन, दिल्ली। प्राप्ति स्थलः 'पाती प्रकाशन, एफ—1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली—19

कुछ हट-हटा के

प्रगत द्विवेदी

एघरी बात–बात में, छरिया के कुछ न कुछ छौंके–बघारे क चलन तेज हो गइल बा। भोजपुरिया त पहिलहीं से बात–ब्योहार, आ पढ़े–लिखे में तेज होलन लोग, बाकिर एघरी हवाट्स ऐप आ फेसबुक का चलते सबका 'बिचारक' आ 'थिंकटैंक' बने क सुअवसर बा। खने समाज, खने देश आ खने राजनीति प, ततलगले कुछ बात–बेबात कहाइये जाता। एघरी त बिहार में चुनावो बा। केहू का कुछऊ कहला में तनिको गुरेज नइखे। चिन्ता ई बा कि सब नितीश आ मोदिये जी हो जाई त, भुइंयाँ काम के करी? मोदी के त तीस–चालीस बरिस लागल ओइजा ले चहुँपे में। सभ मंचे सँभारी त सुनवइया के रही? सब नेतागिरिये करी त, करनिहार कहाँ से अइहें सऽ? बिना सहजोगी आ करनिहारन के कवनो जनजागरन भा बदलाव हो सकेला का? बिना सैनिकन के युद्ध जीतल जा सकेला का?

ई कुल्हि कहला का पाछे हमके अपना भाषा–समाज के चिन्ता ढेर बा। साहित्य से जुड़ल लोग बतावेला कि कविता भा बिचार गोष्ठी वाला जगहा प' अधिका से अधिका 50–60 लोग आ जालें त ऊ सफल कहाला। अचरज बा कि भोजपुरी नाच–गाना आ फिल्मी कलाकारन का प्रोग्राम में त कई हजार लोग जूमि जाला बाकि अपना भाषा का साहित्यिक–वैचारिक कार्यक्रम में, बिना सुविधा–साधन आ पइसा के खुद भोजपुरी सेविये लोग ना पहुँचेला।

एही दिल्ली महानगरी में तमाम 'हवाट्स ऐप मेसेज' आ फेसबुक सूचना दिहला का बादो **''भोजपुरी–भाषा का मान्यता'' खातिर जंतर–मंतर प बोलावल धरना** में मुश्किल से साठ–सत्तर लोग पहुँचल, ओहू में दिल्ली में रहेवालन का बजाय यूपी–बिहार का दूर–दराज से आइले लोग ढेर रहे। लाखन भोजपुरी भाषियन का रहते, अइसन हाल। लोगन के ई देख के झुझुवावनो ना बरल। हमके ई देखि के ईहे लागल कि खाली 'मेसेज' 'कट–पेस्ट' आ 'फारवड' कइला से कुछ ना होई। भोजपुरी के जरूरत बा ओह पढ़वइयन सुनवइयन के, जेकरा भीतर भाषा के स्वाभिमान–सम्मान होखे। भोजपुरी के जरूरत बा ओह 'युवा–एक्टिविस्ट' आ 'भाषा–सैनिकन' के जेकरा में अपना मातृभाषा खातिर लगाव आ कुछ कर गुजरे क जोश होखे।

आज का सामाजिक दायरा के आ भोजपुरिहा युवा वर्ग के ई भाषा–प्रेम आ ओकर आंदोलन छुवते नइखे। शिक्षा, चिकित्सा, आइ0 टी0, सेल्स आ बड़–बड़ कंपनियन में भोजपुरिया लोग भरल बाड़े। मेहनत–मजूरी, ठेला रिक्सा, आटो, मंडी आ छोट–मोट नोकरी करे वालन क तादाद त कई हजार बा एइजा। बस अपना भाषा का दिसाईं लोग सचेत आ जुड़ल नइखे। आज जरूरत बा एह सबका बीच से 'भाषा' कार्यकर्त्ता आ सहजोग देबे वाला लोगन के बनावल जोड़ल जाव। अपना रंग में रँगे खातिर ऊ रास्ता अपनावल जाव, जवन नीक आ प्रासंगिक होखे आ सबका भीतर एह खातिर 'प्राउड' (गर्व) महसूस होखे।

भोजपुरिया लोगन का शहरी घरन में भोजपुरिया रंग/संस्कृति आ प्रतीक खलिहा बाहरी तौर प लउकेला। मकान भा घर का बनावट में 'भोजपुरिया–इफेक्ट' चाहीं। बियाहो–शादी में खाली कुछ गीत–गारी बँचल बा। सूट बूट आ लहँगा का भार में, धोती कुर्ता–अँगौछा आ साड़ी हेराइ गइल लउकत बा। पढाई–लिखाई (शिक्षा) आ बात ब्यवहार में भोजपुरी त छोड़ीं 'हिन्दिये' क हाल खस्ता बा बस अंग्रेजी के धाँय–धाँय फायर फर्राटा।

हमके ई बुझाला कि हम–भोजपुरियन के असली जोर एही तीन चार मोका पर 'ढेर लागेला। 'नीमन पक्का घर, 'लड़िकन के पढ़ाई, उद्यम' आ 'बियाह'। जहिया एह तीनू अवसरन में 'भोजपुरी' आपन पइठ आ जगह बना ली, ओह दिन ओकर भाषा–समाज समृद्ध हो जाई। हम रउरा एह अभियान में जुड़ के बड़भागी बने के तेयार बानी।

रजि० नं० – आर०एन० 3548/79 (वर्ष 1979)

पाती अंक 78 दिसंबर 2015

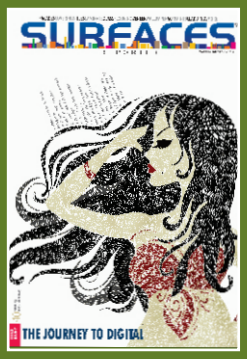

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

F-1118, GF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 08373955162, 09310612995
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com, plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक–सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)
खातिर माडेस्ट ग्राफिक्स प्रा० लि०, डी०डी० शेड, ओखला इन्ड० एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित
आ एफ १११८, आधार तल, चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली-१९ से प्रकाशित।